जुलाई 2022 ■ वर्ष : 67 ■ अंक : 10 ■ पृष्ठ : 60 ■ मूल्य : ₹ 50

अहिंसक - नैतिक चेतना का प्रवर प्रतिनिधि

अणुव्रत

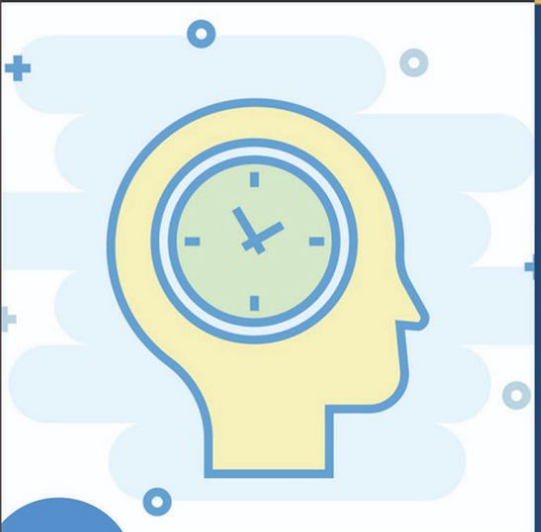

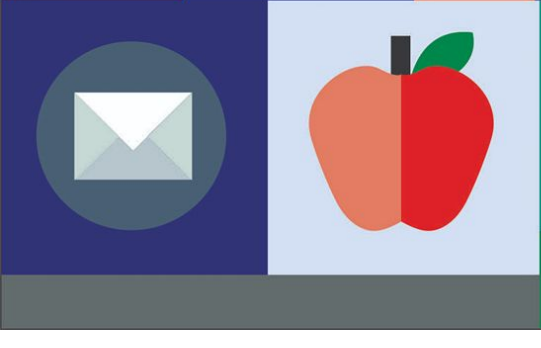

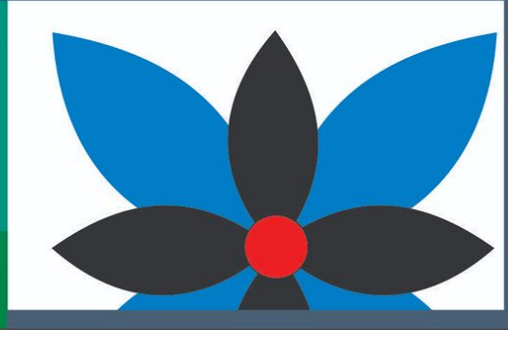

सादर आमंत्रण

73 वाँ
अणुव्रत अधिवेशन

सान्निध्य

अणुव्रत अनुशास्ता

आचार्य श्री महाश्रमण

29, 30 व 31 अक्टूबर, 2022

छापर-राजस्थान

अणुविभा

आयोजक

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

आज दुनिया को नैतिक उत्थान की जितनी आवश्यकता है, उतनी पहले कभी नहीं थी। कोई राष्ट्र तब तक प्रगति नहीं कर सकता अथवा अपने को बलवान नहीं कह सकता, जब तक उसके लोग उच्च आदर्शों का अनुकरण नहीं करते और सद्गुणी नहीं होते। जीवन के प्रति भौतिक दृष्टिकोण ने लोगों को स्वार्थी बना दिया है और भ्रष्टाचार एवं भ्रष्ट व्यवहारों, जैसे कि रिश्वतखोरी और मिलावट ने भारतीय जीवन को तबाह कर दिया है। आज हम मानव भविष्य के चौराहे पर खड़े हैं, ऐसी स्थिति में जबकि हमारे पास युगों पुरानी परम्पराओं और सांस्कृतिक मूल्यों की विरासत में मिली हुई निधि विद्यमान है, तब समस्त अंधकार को दूर करने के लिए केवल एक मशाल की आवश्यकता है। अणुव्रत आन्दोलन वह मशाल है।

- वी. वी. गिरि

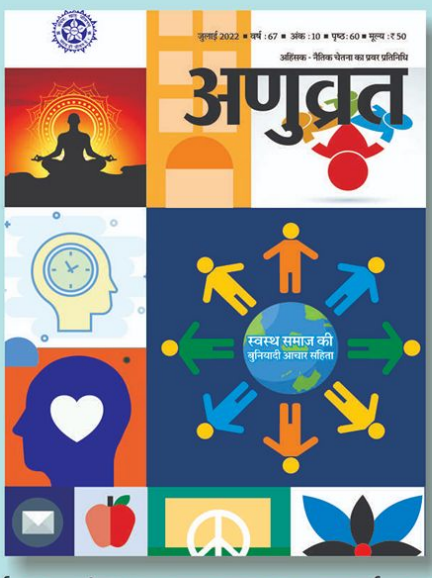

वर्ष 67 ● अंक 10 ● कुल पृष्ठ 60 ● जुलाई, 2022

सम्पादक
संचय जैन

सह–सम्पादक
मोहन मंगलम

पत्रिका प्रसार व विज्ञापन
संयोजक
शांतिलाल पटावरी

टाइपसेटिंग व लेआउट
मनीष सोनी

क्रिएटिव्स
आशुतोष रॉय

चित्रांकन
मनोज त्रिवेदी

:: सदस्यता शुल्क विवरण::

एक अंक	–	₹ 50
एकवर्षीय	–	₹ 600
त्रैवर्षीय	–	₹ 1500
पंचवर्षीय	–	₹ 2500
दसवर्षीय	–	₹ 5000
योगक्षेमी (15 yrs.)	–	₹ 11000

₹ 350 का अतिरिक्त वार्षिक भुगतान कर आप अपनी प्रति कोरियर से मंगवा सकते हैं।

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
केनरा बैंक
A/c No. **0158101120312**
IFSC : CNRB0000158

:: ऑनलाइन सदस्यता हेतु::

https://rzp.io/l/avbp पर लॉगिन करें
या इस **क्यूआर कोड** को स्कैन करें

अणुविभा

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली–110002

anuvrat.patrika@anuvibha.org
www.anuvibha.org
दूरभाष : 011–23233345, मोबाइल : 9116634512

अनुक्रमणिका

प्रेरणा पाथेय

- स्वस्थ समाज का स्वरूप 06
  आचार्य तुलसी
- दायित्व का बोध 08
  आचार्य महाप्रज्ञ

आलेख

- समाजीकरण : क्यों और कैसे? 10
  प्रो. सोहनलाल पाण्डेय
- सहज नहीं होता व्यक्तित्व... 12
  द्वारिका प्रसाद अग्रवाल
- Ahimsa, Anuvrat and Global... 22
  Dr. Glenn D. Paige

कहानी

- मनी प्लांट 18
  सुधांशु गुप्त

कविता

- ...तो छू ले आकाश 11
  लोकेश कुमार सिंह 'साहिल'

- संपादकीय 05
- अतीत के झरोखे से 14
- परिचर्चा 28
- कदमों के निशां 31
- युगप्रधान पदाभिषेक 32
- अणुव्रत जीवनशैली विशेषांक भेंट 35
- साध्वीप्रमुखा का मनोनयन 36
- अणुव्रत पुरस्कार : एक रिपोर्ट 37
- अणुव्रत समिति मुम्बई - बालोदय एजुटूर 39
- आचार्य तुलसी : 26वां महाप्रयाण दिवस 42
- अणुव्रत काव्यधारा : एक रिपोर्ट 44
- विशेषांक विमर्श 46
- अणुव्रत प्रबोधन प्रतियोगिता 48
- अणुव्रत समाचार 50
- Q10 प्रतियोगिता परिणाम 55
- अणुव्रत संरक्षक 56
- अणुव्रत संपोषक 57
- अणुव्रत संदेश स्थल 57
- अणुव्रत की बात 58

- अणुव्रत सिद्धांत, स्वास्थ्य, जीवन–मूल्य एवं अभिप्रेरणा विषयक सामग्री का उपयोग किया जा सकेगा।
- anuvrat.patrika@anuvibha.org पर ही सामग्री प्रेषित करें।
- ईमेल द्वारा संप्रेषित कम्पोज की गयी प्रकाशन सामग्री की Open Word File को प्राथमिकता दी जायेगी।
- फोटो की गुणवत्ता कम होने पर उसे प्रकाशित करने में असमर्थता रहेगी। व्हाट्सएप पर फोटो न भेजें।
- अनिमंत्रित सामग्री को लौटाने हेतु बाध्यता नहीं रहेगी।
- प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों का निजी चिंतन है। प्रकाशक एवं सम्पादक इसके लिए जवाबदेह नहीं हैं।
- इस प्रकाशन से सम्बन्धित किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र दिल्ली रहेगा।

कितना आवश्यक है लोकतांत्रिक मूल्यों का प्रशिक्षण?

कब तक यूं अंगुलियों पर
नचाओगे मुझे!
स्व-सृजित तरंगित लहरों पर
उठाते, गिराते
बहाव में यूं
कब तक बहाओगे मुझे!

मेरी खुशी, मेरा दुःख
न जाने मेरा है
या किसी और का!
मेरे सपने, मेरा वजूद
मेरा अपना है
या बस उधार का!
कभी तुम्हारा
कभी इसका या उसका,
मैं किस्मत का मारा
खुद से हारा,
बिल्कुल पराया!

जब से शुरू की है
तलाश मैंने
खुद को ढूंढ़ने की
अपने ही जेहन में,
जब से बनाया है
आशियाना मैंने
अपने ही जहान में,
समझ पा रहा हूँ -
तुम्हारे प्रभाव से अलग भी
अस्तित्व है मेरा,
तुम्हारे प्रवाह में बहूं या नहीं
अधिकार है मेरा,
कौन छीन सकता है मुझसे
संसार मेरा?
खुश होने या दुःखी होने का
अब फैसला भी मेरा।

भारत एक लोकतांत्रिक देश है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हमारे राष्ट्र निर्माताओं ने चिंतनपूर्वक देश की शासन व्यवस्था के लिए लोकतांत्रिक पद्धति को चुना था। आज भी हम विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के रूप में गौरव का अनुभव करते हैं। हालांकि, पिछले 75 वर्षों में भारत के लोकतंत्र ने अनेक चुनौतियों का सामना किया है, लेकिन एक व्यवस्था के रूप में यह आज भी अक्षुण्ण है। यह निर्विवाद रूप में कहा जा सकता है कि भारत के विश्व शक्ति के रूप में उभरने में हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं की बड़ी भूमिका रही है।

किसी व्यवस्था का लोकतांत्रिक होना एक बात है, किंतु जिनके लिए यह व्यवस्था बनायी गयी है, उस आम जनता के जीवन में लोकतांत्रिक मूल्यों की प्रतिस्थापना किस परिमाण में है, यह चिंतन का एक अलग बिंदु है। लोकतांत्रिक व्यवस्था इस बात का आश्वासन नहीं है कि उस व्यवस्था से जुड़े नागरिक लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति निष्ठावान हैं। एक लोकतांत्रिक व्यवस्था - चाहे वह किसी देश के शासन को संचालित करती है अथवा समाज, संगठन या परिवार को - की सफलता या असफलता इस बात पर निर्भर करती है कि उस व्यवस्था से जुड़ा प्रत्येक सदस्य लोकतांत्रिक मूल्यों को कितना समझता है और उनकी कितनी पालना करता है।

एक लोकतांत्रिक व्यवस्था में नागरिकों की समझ केवल चुनाव के समय अपना मतदान कर देने तक ही सीमित हो और वैचारिक व व्यावहारिक धरातल पर वे लोकतांत्रिक मूल्यों से दूर हों, तो लोकतंत्र के नाम पर चल रही वह व्यवस्था खोखली और अर्थहीन ही सिद्ध होती है। इन परिस्थितियों में लोकतंत्र के लाभ हाशिये पर चले जाते हैं और जनता अपने आप को ठगी हुई अनुभव करती है।

लोकतंत्र का उचित लाभ हर नागरिक को मिल सके, इस हेतु बचपन से ही लोकतांत्रिक मूल्यों का प्रशिक्षण अत्यंत आवश्यक है और महत्वपूर्ण भी। इस दृष्टि से विद्यालय और परिवार की बड़ी भूमिका सामने आती है। लोकतांत्रिक मूल्यों का प्रशिक्षण मात्र किताबी ज्ञान से कदापि संभव नहीं है। इसके लिए हमें नयी पीढ़ी को लोकतांत्रिक माहौल प्रदान करना होगा - घर में भी और स्कूल में भी। यदि समय रहते हम इस दिशा में प्रस्थित नहीं हो पाये तो लोकतंत्र हमारे लिए बोझ बन कर रह जाएगा और इसके आवरण में समस्त अलोकतांत्रिक ताकतें अपने पैर पसारती चली जाएंगी।

अणुव्रत आंदोलन लोकतंत्र शुद्धि की बात करता है। इस हेतु चुनाव शुद्धि सहित अनेक अभियान संचालित किये जाते हैं। राजसमंद स्थित अणुव्रत बालोदय प्रकल्प इस दिशा में एक रचनात्मक प्रयोग है। यहां सृजित बाल संसद बच्चों में लोकतांत्रिक मूल्यों की समझ पैदा करने और आस्था जगाने की प्रयोगशाला है। राजसमंद जिले के अनेक स्कूल इस प्रकल्प से लाभान्वित हो रहे हैं। इन प्रयासों को हमें हर स्तर पर निरंतर आगे बढ़ाना होगा तभी हमारे जीवन में लोकतांत्रिक मूल्य जीवंत हो सकेंगे और एक मजबूत लोकतंत्र की कल्पना हम कर सकेंगे।

शुभकामनाओं सहित।

सं. जै.

sanchay_avb@yahoo.com

आचार्य तुलसी

स्वस्थ समाज का स्वरूप

अणुव्रत स्वस्थ समाज संरचना की बुनियाद है। जो लोग अपने समाज को स्वस्थ बनाना चाहते हैं, वे व्यक्ति-व्यक्ति के जीवन को अणुव्रत आचार संहिता के सांचे में ढालने का प्रयत्न करें। यह एक सामूहिक अनुष्ठान है। इसमें जनशक्ति का सम्यक् नियोजन हो पाया तो समाज की रुग्णता को सरलता से दूर किया जा सकता है।

समाज के दो रूप हैं - रुग्ण समाज और स्वस्थ समाज। रुग्णता किसी को काम्य नहीं है। हर व्यक्ति स्वास्थ्य चाहता है। स्वास्थ्य पाने के लिए वह स्वस्थ समाज की खोज करता है, पर उसके सामने कठिनाई एक ही है कि स्वस्थता और रुग्णता के मानदण्डों में उलझ जाता है। जिस समाज में कोई गरीब न हो, कोई बेरोजगार न हो, कोई सुख-सुविधा के साधनों से वंचित न हो और प्राकृतिक आपदाओं से प्रताड़ित न हो, वह समाज स्वस्थ है। यह एक मानदण्ड है।

दूसरा मानदण्ड शैक्षणिक विकास की परिक्रमा करता है। जिस समाज में अधिक से अधिक शिक्षा संस्थान हों, गाँवों और ढाणियों में भी पढ़ने की सुविधा हो और जहां कोई निरक्षर न हो, वह समाज स्वस्थ है। जिस समाज में हर व्यक्ति के पास अपनी कार हो, फ्रिज हो, कूलर हो, टी.वी. हो, कम्प्यूटर हो, कैलकुलेटर हो तथा इसी प्रकार की नयी-नयी आविष्कृत होने वाली सब वस्तुएं हों, वह समाज स्वस्थ होता है।

हर व्यक्ति का अपना चिन्तन और अपना दृष्टिकोण है। दूसरों का चिन्तन गलत है और मेरा चिन्तन सही है, ऐसा आग्रह मैं क्यों करूं? मुझे भगवान महावीर का अनेकान्त दर्शन प्राप्त है। इसके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति के चिन्तन में सत्य का अंश हो सकता है। मैं अपने चिन्तन को न तो संपूर्ण सत्य मानता हूँ और न दूसरों के चिन्तन को नितान्त असत्य स्वीकार करता हूँ। मेरे अभिमत से स्वस्थ समाज का स्वरूप यह हो सकता है –

- जहां कोई किसी निरपराध प्राणी की हत्या नहीं करता।
- जहां कोई किसी पर आक्रमण की पहल नहीं करता।
- जिस समाज में कोई हिंसात्मक तोड़फोड़ नहीं करता।
- जिस समाज में कोई किसी को अछूत नहीं मानता।
- जिस समाज में साम्प्रदायिक उन्माद नहीं होता।
- जिस समाज में व्यावसायिक अनैतिकता नहीं होती और उसे प्रतिष्ठा भी नहीं मिलती।
- जिस समाज में लोकतंत्र की धज्जियां नहीं उड़तीं, चुनाव के प्रसंग में अनैतिक आचरण नहीं होता।
- जिस समाज पर सामाजिक कुरूढ़ियों का शिकंजा कसा हुआ नहीं रहता।
- जिस समाज में मादक व नशीले पदार्थों का उपयोग नहीं होता।
- जिस समाज में संग्रह और भोग को अनियंत्रित नहीं रखा जाता।
- जिस समाज में पर्यावरण की उपेक्षा नहीं होती।

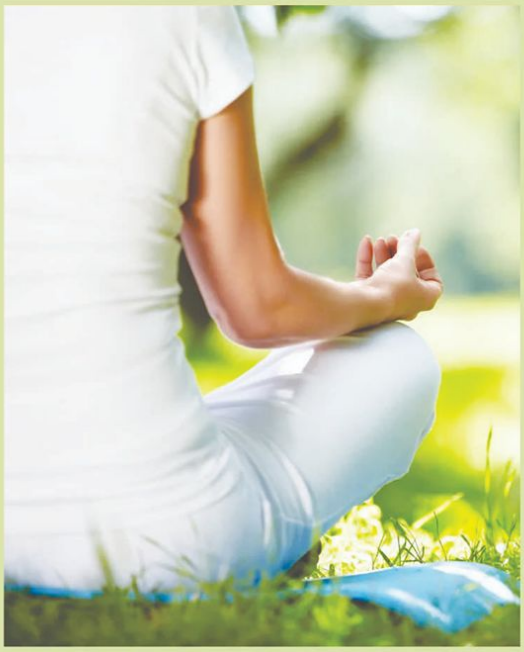

शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य की उपेक्षा नहीं की जा सकती, पर भावनात्मक स्वास्थ्य के अभाव में शरीर और मन भी स्वस्थ नहीं रह सकते।

इस प्रकार की और भी कुछ बातें हो सकती हैं। ये ऐसी बातें हैं जो किसी एक व्यक्ति, समाज या राष्ट्र के लिए ही उपयोगी नहीं हैं। इनके द्वारा पूरे विश्व की चेतना को प्रभावित या जागृत किया जा सकता है। विस्तार को समेटा जाये तो इसे एक शब्द में प्रस्तुति दी जा सकती है। वह शब्द है-अणुव्रत।

अणुव्रत स्वस्थ समाज संरचना की बुनियाद है। जो लोग अपने समाज को स्वस्थ बनाना चाहते हैं, वे व्यक्ति-व्यक्ति के जीवन को अणुव्रत आचार संहिता के सांचे में ढालने का प्रयत्न करें। यह एक सामूहिक अनुष्ठान है। इसमें जनशक्ति का सम्यक् नियोजन हो पाया तो समाज की रुग्णता को सरलता से दूर किया जा सकता है।

स्वस्थ कौन ?

मनुष्य अस्वस्थ है, इसलिए अशान्त है। स्वस्थ मनुष्य कभी अशान्त नहीं होता। स्वस्थ कौन होता है? जो शरीर से स्वस्थ है, वह स्वस्थ होता है? जो मन से स्वस्थ है, वह स्वस्थ होता है? शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ व्यक्ति स्थूल रूप से स्वस्थ कहलाता है, पर यह स्वस्थता की अधूरी परिभाषा है। मानसिक स्वस्थता का स्तर कुछ ऊँचा है, पर वह भी अपने आप में पूर्ण नहीं है। सर्वोत्तम स्वास्थ्य है भावनात्मक स्वास्थ्य - इमोशनल हेल्थ। शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य की उपेक्षा नहीं की जा सकती, पर भावनात्मक स्वास्थ्य के अभाव में शरीर और मन भी स्वस्थ नहीं रह सकते।

आज का आदमी शरीर के प्रति जितना जागरूक है, मन के प्रति नहीं है। वह भोजन, वेशभूषा, स्नान, भ्रमण आदि पर पर्याप्त ध्यान देता है, किन्तु संगीत, साहित्य, काव्य, कला, प्राकृतिक सौन्दर्य आदि के प्रति पूरा जागरूक नहीं रहता। वह मन के प्रति जितना जागरूक है, भावों के प्रति नहीं है, आत्मा के प्रति नहीं है। वह रोजी-रोटी की चिन्ता से उपरत होकर सांस्कृतिक दृष्टि से कुछ सक्रिय हो जाता है, पर प्राणों की प्यास का अनुभव ही नहीं कर पाता। अस्वस्थता का अनुभव होने पर मनुष्य चिकित्सक के पास जाता है। वह शरीर की जाँच कराता है, औषधि का सेवन करता है और स्वस्थ होना चाहता है। किन्तु न चिकित्सक स्वस्थ है और न औषधि स्वस्थ-शुद्ध है। अस्वस्थ से स्वास्थ्य की आशा करने से निराशा ही हाथ लगेगी।

भावों पर ध्यान देना है जरूरी

स्वास्थ्य की समीचीन प्रक्रिया में सबसे पहले भावों पर ध्यान देना जरूरी है। भावों की स्वस्थता का अर्थ है भावों की पवित्रता। जो व्यक्ति अपने आवेगों और संवेगों पर नियंत्रण रखता है, निषेधात्मक भावों से मुक्त रहता है, उसके भाव पवित्र हो सकते हैं। निराशा, घृणा, आक्रोश, क्रूरता, छलना आदि निषेधात्मक भाव हैं। जब तक व्यक्ति पर इन भावों की छाया रहेगी, वह स्वास्थ्य लाभ नहीं कर पाएगा। स्वस्थ जीवन की आधारभूत भूमिका है स्वस्थ जीवनशैली। न जागने का समय निश्चित है और न सोने का। शयन और जागरण की अनिश्चितता से पूरा कार्यक्रम अस्त-व्यस्त हो जाता है। इस दृष्टि से जीवनशैली पर ध्यान देना नितान्त आवश्यक है। यह एक ऐसा विषय है, जिसमें खानपान, रहन-सहन, रीति-रिवाज, उत्सव, पर्व-त्योहार, पारस्परिक संबंध, व्यवसाय, धार्मिक आस्था आदि बहुत सारे तत्त्वों का समावेश हो जाता है। साहित्य और संस्कृति का भी इसी के साथ संबंध है। इन बिन्दुओं पर विचार करते समय अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान स्मृति से ओझल नहीं होने चाहिए।

अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान और जीवन विज्ञान

मनुष्य कैसा होना चाहिए? इसका सुन्दर मॉडल है अणुव्रत की आचार संहिता। मनुष्य अपने आपको उस मॉडल में कैसे ढाले? इस प्रश्न का उत्तर है प्रेक्षाध्यान। अणुव्रत एक दर्शन है और प्रेक्षाध्यान एक प्रयोग है। अकेला दर्शन अधूरा होता है तो अकेला प्रयोग भी अधूरा होता है। इन दोनों को एक-दूसरे का पूरक मानकर स्वस्थ जीवनशैली की कल्पना की जा सकती है। स्वस्थ जीवनशैली की प्राथमिक प्रक्रिया को शिक्षा के साथ जोड़ने का नाम है जीवन विज्ञान। विज्ञान में अध्यात्म और अध्यात्म में विज्ञान की सोच को निहित कर मनुष्य के संपूर्ण स्वास्थ्य अथवा स्वस्थ जीवनशैली के बारे में जागरुकता बढ़ने से ही भावात्मक स्वास्थ्य की उपलब्धि हो सकती है। ■■■

आचार्य महाप्रज्ञ

दायित्व का बोध

अध्यात्म साधना की पहली परिणति है - दायित्व को ओढ़ने का बोध, दायित्व को लेने का साहस। बाहरी दुनिया में आँखें बन्द करने के दो ही अर्थ होते हैं, सो जाना या नहीं देखना। अध्यात्म के क्षेत्र में ये अर्थ बदल जाते हैं। साधक के लिए आँखें बन्द करने का अर्थ होता है - जागना, भीतर झांकना, भीतर की गहराइयों को देखना।

जो व्यक्ति अध्यात्म की चेतना में प्रवेश करता है, अध्यात्म की चेतना के जागरण का प्रयास करता है, वह अपने पर बहुत उत्तरदायित्व लेता है। इतना बड़ा दायित्व कि दुनिया में कोई भी व्यक्ति उतना बड़ा दायित्व नहीं उठाता। एक पूरे साम्राज्य को चलाने वाले सम्राट पर भी उतना दायित्व नहीं होता जितना बड़ा दायित्व होता है उस साधक पर, जो चेतना के जागरण में लगा हुआ है। यह कैसे? एकांत में, एक कोने में बैठकर अपने भीतर झांकने वाला, अपने-आपकी साधना करने वाला बड़ा दायित्व कैसे लेता है? यह तर्कसंगत नहीं, किन्तु विरोधी बात है। साधना का मार्ग तर्क का मार्ग नहीं है, अनुभव का मार्ग है, देखने का मार्ग है, दर्शन का मार्ग है।

साधक का दायित्व गुरुतर कैसे है? इसे हम समझें। प्रत्येक व्यक्ति सुख-दु:ख का दायित्व दूसरों पर डालता है। चाहे सम्राट हो या अन्य कोई, सब अपने-आपका बचाव करते हुए दायित्व दूसरों पर डाल देते हैं। सारा दोष दूसरों में देखते हैं, स्वयं निर्लिप्त रह जाते हैं। किन्तु अध्यात्म की साधना करने वाला, चेतना के जागरण की साधना करने वाला, सारा दायित्व अपने पर लेता है। चाहे वह सुख का दायित्व हो या दु:ख का, वह दायित्व अपने पर लेता है, दूसरों पर नहीं थोपता। कोई शत्रुता करता है तो साधक सोचता है कि कहीं न कहीं मेरी ही भूल हुई है। कितना बड़ा दायित्व है यह? ऐसा दायित्व वही व्यक्ति उठा सकता है, जो अध्यात्म के क्षेत्र में प्रवेश करता है। आप सारे इतिहास को देखिए, जिन लोगों ने बाहर की दुनिया में विचरण किया है, उन्होंने हमेशा दूसरों पर ही दोषारोपण किया है। सत्ता बदलती है तो नयी सत्ता पुरानी सत्ता पर दोषारोपण करती है। बाह्य जगत में रहने वाला दूसरों के कंधों पर भार डालकर स्वयं हल्का रहना चाहता है। अध्यात्म का साधक दायित्व को ओढ़कर भारी रहता है। वह अपना दायित्व दूसरों पर कभी नहीं डालता।

अध्यात्म साधना की पहली परिणति है – दायित्व को ओढ़ने का बोध, दायित्व को लेने का साहस। अध्यात्म-साधक की भ्रांतियां सबसे पहले टूटती हैं। वह असत्य से दूर और सत्य के निकट होता है। सामान्यतया आँखें बन्द करने का अर्थ होता है नहीं देखना, सो जाना। बाहरी दुनिया में आँखें बन्द करने के दो ही अर्थ होते हैं, सो जाना या नहीं देखना। अध्यात्म के क्षेत्र में ये अर्थ बदल जाते हैं। ठीक विपरीत हो जाते हैं। साधक की भ्रांति टूट जाती है। उसके लिए आँखें बन्द करने का अर्थ होता है - जागना। आँख बन्द करने का अर्थ होता है - भीतर झांकना, भीतर की गहराइयों को देखना।

जो बाह्य जगत में जीता है, वह मानता है कि सुख बाहर है। अध्यात्म साधक की वह भ्रांति टूट जाती है। वह मानने लगता है कि सुख बाहर नहीं, भीतर है।

जो बाह्य जगत में जीता है, वह मानता है कि सुख बाहर है। अध्यात्म साधक की वह भ्रांति टूट जाती है। वह मानने लगता है कि सुख बाहर नहीं, भीतर है। जिसने कभी अध्यात्म का स्पर्श ही नहीं किया, वही बाहर के सुख की कल्पना कर सकता है। जिसने एक बार भी अध्यात्म के सुख का स्पर्श कर लिया, उसे बाहर में कभी सुख नहीं लगता। भीतर के सुख की तुलना में बाहर के सारे सुख नगण्य हैं। साधक जब भीतर का थोड़ा मार्ग तय करता है तब उसे लगता है कि जो सुख के स्पंदन यहां हैं, वे बाहर दुर्लभ हैं। जो रंग यहां दीखते हैं, उनका अस्तित्व बाहर है ही नहीं। भीतर में जब सुख के स्पंदनों की अनुभूति होने लगती है, तब साधक आत्मविभोर होकर उसी में खो जाता है। उसका सारा सम्पर्क अध्यात्म से होता है, बाहर से सारे सम्पर्क टूट जाते हैं। वह उसमें इतना तन्मय हो जाता है कि अपना भान ही भूल जाता है।

जिस व्यक्ति ने भीतर जाने का प्रयास ही नहीं किया, जिसने भीतरी द्वार का उद्घाटन ही नहीं किया, वह कभी यह अनुभव नहीं कर सकता कि भीतर में क्या कुछ घटित हो रहा है। यह तर्क के द्वारा समझाया नहीं जा सकता। इसका अनुभव ही किया जा सकता है।

अध्यात्म साधना की दूसरी परिणति है – भ्रान्तियों का टूट जाना। चिकित्सा की भाँति साधक भी पहले विवेक करता है और फिर प्रत्याख्यान। विवेक का अर्थ है – पृथक् करना और प्रत्याख्यान का अर्थ है - छोड़ना। जब प्रत्याख्यान होता है, तब संयम की चेतना जागती है। संयम अर्थात् अपने में रहो। कम बोलो। कम घूमो। प्रवृत्ति कम करो। इसका परिणाम यह होता है कि साधक की प्रतिरोधात्मक शक्ति बढ़ जाती है। जिसमें प्रतिरोधात्मक शक्ति प्रबल होती है, वह बाहर से कम प्रभावित होता है।

मानसिक स्वास्थ्य और शारीरिक स्वास्थ्य – दोनों अपेक्षित होते हैं, सुखी जीवन के लिए। जो मानसिक स्वास्थ्य की साधना नहीं करता, वह शारीरिक स्वास्थ्य को कैसे बनाये रख सकता है? अध्यात्म की साधना करने वाले साधक की यह भ्रान्ति टूट जाती है कि स्वास्थ्य केवल शारीरिक ही होता है। उसे मानसिक स्वास्थ्य बहुत ऊँचा लगता है। अध्यात्म की साधना से दोनों प्रकार के स्वास्थ्य सधते हैं। यह शारीरिक रोगों से मुक्ति दिलाती है और साथ ही साथ आन्तरिक रोगों को भी नष्ट करती है। मनुष्य स्वास्थ्य चाहता है, दीर्घायु चाहता है, सुख और शान्ति चाहता है। अध्यात्म की साधना से ये सारी बातें फलित होती हैं। एक प्रश्न होता है कि अध्यात्म चेतना से दीर्घायु कैसे मिल सकती है ?

अल्पायु का सबसे बड़ा कारण है – राग-द्वेष का अध्यवसाय। जितने भी मानसिक आवेग हैं, सब अल्पायु के कारण बनते हैं। वे आयुष्य को क्षीण करते चले जाते हैं। भीतर ही भीतर काटते चले जाते हैं। अध्यात्म का मार्ग अध्यवसायों को रोकने का मार्ग है। राग-द्वेष कम करो, समभाव रखो, तटस्थ रहो। आने वाले स्पंदनों की उपेक्षा करो। प्रिय-अप्रिय भाव से बचो। अध्यात्म की साधना से अध्यवसाय निर्मल बनते हैं। वे अनजाने ही आयुष्य को लम्बा कर देते हैं।

श्वास-प्रेक्षा का आध्यात्मिक मूल्य है – मन का जागरण और व्यावहारिक मूल्य है – प्राण-ऊर्जा का बढ़ जाना। दीर्घ श्वास का प्रयोग होता है तब घर्षण बढ़ता है। घर्षण से प्राण ऊर्जा बढ़ती है, प्राणशक्ति बढ़ती है। कायोत्सर्ग से भेदज्ञान पुष्ट होता है, शरीर की जड़ता समाप्त होती है, सुख-दुःख में सम रहने की वृत्ति जागती है, चेतना जागती है, प्रज्ञा जागती है।

हम शरीर-प्रेक्षा को ठीक से समझें। लोग शरीर को निस्सार मानते हैं। उसे केवल हाड़-मांस का समूह मानते हैं। उसमें केवल निस्सार को ही देखते हैं। सार जैसा उन्हें कुछ लगता ही नहीं। आत्मा का निवास शरीर में है। आत्मा ज्ञानमय है, दर्शनमय है, चेतनामय है। यही सार है। इसका हमें बोध होना चाहिए। चैतन्यमय आत्मा सबसे बड़ा सार है। इस जगत का सबसे बड़ा सार तत्त्व हमारे शरीर के भीतर है। उसके दर्शन से जैविक-रासायनिक परिवर्तन होते हैं, अन्तःस्रावी ग्रन्थियों के रसायन बदलते हैं। नाड़ी-संस्थान पर नियंत्रण स्थापित होता है। मूर्च्छा टूटती है और चैतन्य जागृत होता है। आत्मा का अवस्थित किसी शरीर के माध्यम से ही प्रकट होता है। जो शरीर को देखना नहीं जानता, उसके अन्तर्भाव में अवस्थित चैतन्य केन्द्रों का दर्शन करना नहीं जानता, वह अपने अस्तित्व को भी नहीं जानता। जिसे अपने अस्तित्व का बोध नहीं होता, उसे दायित्व का बोध नहीं होता।

प्रो. सोहन लाल पाण्डेय

समाजीकरण क्यों और कैसे ?

समाजीकरण जितना अच्छा स्पष्ट और अपेक्षित होता है, उतना ही व्यक्ति का वयस्क व्यवहार बनता जाता है। इस वयस्क व्यवहार में परिवार, समुदाय, विद्यालय और समाज के सभी अंग सहायक बनते हैं। और इनमें सबसे महत्वपूर्ण अंग है शिक्षा।

हम सब समाज में रहते हैं, समाज से हमारा अस्तित्व है। व्यक्ति समाज की देन है। हमारा जो कुछ है, वह समाज के कारण है और हम ही मिलकर समाज बनाते हैं। हम अपना समाजीकरण खुद करते हुए अगली पीढ़ी को सौंपते जाते हैं।

हैवीघर्स्ट नामक पाश्चात्य विद्वान कहते हैं कि समाजीकरण की इस प्रक्रिया में बच्चे समाज के स्वीकृत तौर-तरीकों को सीखते हैं और उन्हें अपने जीवन का अंग बना लेते हैं। समाजीकरण में दो कारक पाये जाते हैं। पहला, आनुवांशिक कारक जिसका सम्बन्ध वंश परम्परा या जैविक आधार पर होता है। दूसरा, सामाजिक कारक जिसका आधार सांस्कृतिक पर्यावरण है। शारीरिक विशेषताएं आनुवांशिकता से प्राप्त होती हैं किन्तु अन्य विशेषताएं जैसे सहानुभूति, आत्मीकरण, अनुकरण, सामाजिक प्रशिक्षण, पारस्परिक व्यवहार, सहकारिता और सदाचार हम सामाजिक कारकों से ग्रहण करते हैं। हमारी सभी आवश्यकताएं परिवार, पड़ोस, साथी, विद्यालय, संस्थाएं, मानसिक विचारधाराएं सामाजिक कारकों द्वारा पूरी होती हैं।

समाजीकरण की प्रक्रिया के अनेक सिद्धान्त हैं। इन सिद्धान्तों में विभिन्न विचारकों ने दो आधारों पर अपने मतों को प्रतिपादित किया है। पहले वे हैं जो मानते हैं कि समाज व्यक्ति के समाजीकरण में विशेष महत्व रखता है। दूसरे मानते हैं कि व्यक्ति मनोसामाजिक प्रक्रियाओं द्वारा अभ्यास, मनोवृत्तियों एवं विश्वासों को अर्जित करता है।

दुर्खीम नामक विद्वान ने एक सिद्धान्त दिया है, जिसके अनुसार सामूहिक स्वीकृति व्यक्ति के जीवन पर प्रभाव डालती है। अर्थात् समाज द्वारा स्वीकृत नियम, विचार, व्यवहार एवं मूल्य उस समाज के व्यक्ति (सदस्य) द्वारा अपनाये जाते हैं। वह व्यक्ति को सामाजिक कारकों का फल मानते हैं। उनके मत में प्रत्येक समाज में व्यक्तियों के विचार, भावनाएं एवं व्यवहार होते हैं जिनकी उन्नति सामाजिक चेतना द्वारा होती है। यही चेतना एक दूसरे व्यक्ति की चेतना को प्रभावित करती है।

अमेरिकी समाजशास्त्री बोगार्डस इसे स्वीकार करते हुए लिखते हैं कि इन्हीं सामूहिक प्रतीकों के फलस्वरूप व्यक्ति सामाजिक बनता है। उसमें समष्टिगत भावना का विकास होता है जो अत्यन्त शक्तिशाली होती है और समाज का व्यवहार इससे सदैव प्रभावित होता है।

समाजीकरण के सन्दर्भ में कूले का 'आत्मचेतना' सिद्धान्त बताता है कि मानवीय प्रकृति का विकास वैयक्तिक सम्पर्कों पर

आधारित है। दूसरों के सम्पर्क में आये बिना मानव प्रकृति निर्मित ही नहीं हो सकती। वे कहते हैं, एक आदमी दूसरे आदमी से भिन्न है। यह भिन्नता प्रत्येक व्यक्ति का आत्म है। दूसरे के विचारों, आदर्शों और व्यवहारों को जहां तक वह नहीं अपनाता, तब तक वह दूसरे से भिन्न है। शनैः शनैः वह दूसरे के व्यवहारों का अनुकूलन करता जाता है, उसकी आत्मचेतना सामूहिक आत्मचेतना में मिलती जाती है।

मीड नामक पाश्चात्य विज्ञान कहते हैं कि मैं (I) शब्द व्यक्ति की दूसरे व्यक्तियों की मनोवृत्तियों के बाबत प्रतिक्रिया है जबकि मुझे (Me) शब्द दूसरों के विचारों एवं मनोवृत्तियों का एक संयुक्त सेट है जिसे व्यक्ति अपनी बाह्य क्रियाओं द्वारा ग्रहण करता है। बच्चे का समाजीकरण जब वह भाषा सीखने लगता है, शब्दों के अर्थ समझने लगता है, तब शुरू होता है। इसी बीच उसके स्व (Self) का विकास भी होने लगता है। दोनों के लिए भाषा आवश्यक है।

फ्रायड नामक मनोवैज्ञानिक समाजीकरण की व्याख्या में इड, इगो और सुपर इगो (इसे हम हमारी भाषा में इदम्, अहम् और परा अहम् भी कह सकते हैं) को महत्वपूर्ण मानता है। इड (इदम्) मूल प्रवृत्तिजन्य व्यवहार हैं जो जैविकीय विशेषताओं पर निर्भर हैं। इगो (अहम्) बाह्य संसार द्वारा निर्देशित व्यवहार हैं, इससे चेतनता और प्रमेय उत्पन्न होता है। जहां 'इड' सुख सिद्धान्त की पालना का आग्रह करता है, वहीं इगो बाहरी दशाओं का सम्मान करने के लिए प्रेरित करता है। इससे बाह्य संसार की वास्तविकता से व्यक्ति का समाजीकरण होता है। आदेशों की स्थापना एवं परिपालन 'सुपर इगो' है।

माता-पिता, समाज, विद्यालय आदि द्वारा पालित व्यवहार अन्ततः उसके समाजीकरण के कारक बन जाते हैं। समाजीकरण की प्रक्रिया में व्यक्ति के समग्र व्यवहारों (बाहरी सीखे हुए भी) का प्रभाव पड़ता है। समाजीकरण के कारण उसका व्यक्तित्व बनता है जो त्याज्य और ग्राह्य व्यवहारों में अन्तर सीख जाता है, उन्हें अपना लेता है। ज्यों ज्यों हम वयस्क बनते जाते हैं, समाज के अनुरूप व्यवहार करने लगते हैं। यही व्यवहार अपेक्षित होता है।

समाजीकरण जितना अच्छा स्पष्ट और अपेक्षित होता है, उतना ही व्यक्ति का वयस्क व्यवहार बनता जाता है। इस वयस्क व्यवहार में परिवार, समुदाय, विद्यालय और समाज के सभी अंग सहायक बनते हैं। और इनमें सबसे महत्वपूर्ण अंग है शिक्षा। शिक्षा जहां समाजीकरण में सहायक है, वहीं समाजीकरण शिक्षा पर भी प्रभाव डालता है। सभ्य सुसंस्कृत समाज के लोग बेहतरीन प्रकार की शिक्षा व्यवस्था करते हैं।

जयपुर में रहने वाले लेखक केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर परिसर से आचार्य (शिक्षा) पद से सेवानिवृत्ति के बाद स्वतंत्र लेखन में संलग्न हैं। इनकी कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

...तो छू ले आकाश

लोकेश कुमार सिंह 'साहिल' - जयपुर

नष्ट संस्कृति हो रही, पतन हुआ घनघोर ।
बेटा दिखलाता यहां, वृद्ध बाप को ज़ोर ।।

खान-पान की शैलियाँ, या फिर हो पोशाक।
गड्ड-मड्ड सब हो गये, हुई संस्कृति ख़ाक ।।

भौतिक सुख-सुविधा बढ़ी, घटा मनुज का रूप।
पैसा ही अब बन गया, हर रिश्ते की धूप ।।

शक्ति भक्ति अनुरक्ति से, चलता है संसार ।
जो तीनों का योग है, वही ईश है यार ।।

करें खूब आराधना, करें शक्ति संधान ।
कभी नहीं लेकिन करें, निर्बल का अपमान ।।

जिसको अपनी शक्ति का, है थोड़ा भी ज्ञान ।
वही रखे अभिव्यक्ति का, हरदम पूरा ध्यान ।।

रिश्ते होते थे कभी, अब हैं बस अनुबन्ध ।
खोज रहे परिवार फिर, वही पुरानी गन्ध ।।

मूल हुई उपयोगिता, रिश्ते हैं बस ब्याज़ ।
पैसों में जाकर छुपे, सम्बन्धों के राज़ ।।

बस वाणी से हो रहा, सुख-दुःख में सहभाग ।
बचा कहाँ परिवार में, वह सच्चा अनुराग ।।

कहना खुद को नम्र खुद, है घमण्ड की ज़ात ।
यही कहें जब दूसरे, तब सच्ची है बात ।।

शक्ति अहं से जब मिले, तो कर देती नाश ।
और विनय के साथ हो, तो छू ले आकाश ।।

एक इकाई हो रहे, अब सारे परिवार ।
फिर सोचो कैसे बचें, रिश्तों के व्यवहार ।।

जो रहता माँ-बाप सँग, रखता उनका ध्यान।
करते उसके पुत्र भी, दिल से उसका मान ।।

लेना-देना को करो, देना-लेना यार ।
देकर ही कुछ ले सको, तब चलते परिवार ।।

स्वाभिमान अभिमान का, अन्तर है बारीक।
इन दोनों के बीच है, बड़ी सूक्ष्म सी लीक।।

द्वारिका प्रसाद अग्रवाल

सहज नहीं होता व्यक्तित्व का आकलन

किसी भी व्यक्ति का व्यक्तित्व समुद्र में तैरते हुए 'आइसबर्ग' की तरह होता है। जो दिखता है वह अधूरे से भी कम है, जो दिखायी नहीं पड़ता, वह उसके व्यक्तित्व का बड़ा भाग होता है। इसी वज़ह से सामने वाले के व्यक्तित्व का समुचित अंदाज़ नहीं हो पाता।

मनुष्य के व्यक्तित्व का वास्तविक पता उसके आहार, विहार और व्यवहार से चलता है। यहां आहार-विहार की चर्चा आवश्यक नहीं है लेकिन व्यवहार के बारे में कुछ बातें समझना जरूरी है। यदि मनुष्य में मानवीय भाव है तो उसका व्यवहार मीठा, लोचपूर्ण और सौहार्द से भरपूर होगा। अगर मानवीय भाव नहीं है तो उसकी बातों में निरर्थक आलोचना, अहंकार और द्वेष का पुट होगा। मनुष्य विभिन्न लोगों से मिलता-जुलता है, उन सबसे उसका व्यवहार भिन्न-भिन्न होता है। अपने से श्रेष्ठ से उसका व्यवहार आदरपूर्ण होगा, बराबरी वाले से सहज होगा, अधीनस्थ कर्मचारी से आदेशात्मक होगा, लेकिन कुल मिलाकर उसकी 'एप्रोच' कैसी है, इससे उस व्यक्ति के व्यक्तित्व का अनुमान लगाया जा सकता है।

दरअसल किसी भी व्यक्ति का व्यक्तित्व समुद्र में तैरते हुए 'आइसबर्ग' की तरह होता है जिसका कम हिस्सा ऊपर दिखायी देता है और अधिक हिस्सा पानी में डूबा रहता है जो किसी को दिखायी नहीं पड़ता। जो दिखता है वह अधूरे से भी कम है, जो दिखायी नहीं पड़ता, वह उसके व्यक्तित्व का बड़ा भाग होता है। सामान्यतया इसी वज़ह से सामने वाले के व्यक्तित्व का समुचित अंदाज़ नहीं हो पाता और उसके बारे में भ्रम की स्थिति बन जाती है।

मनुष्य तीन विधियों से अपनी बात संप्रेषित करता है - ध्वनि, लिपि और संकेत। भावों को व्यक्त करने में सर्वाधिक उपयोग ध्वनि का होता है। जैसा भाव होगा, वैसी ध्वनि निकलेगी। वक्ता के मन में यदि आदर का भाव है तो उसकी वाणी में लोच होगा और यदि अपमान का भाव है तो तीखापन। सहज समझाने का भाव होगा तो भाषा तरल होगी और जबर्दस्ती समझाने का भाव होगा तो दबावपूर्ण शब्द निकलेंगे।

मनुष्य अलग-अलग परिस्थितियों में अलग-अलग मन:स्थिति में रहता है। मान लीजिए, किसी वक्त वह किसी बात से क्रोधित है और वह जोर से बोल रहा है, अपशब्दों का प्रयोग कर रहा है तो उस व्यक्ति की बातें सुनकर यदि हम यह धारणा बना लेते हैं कि अमुक व्यक्ति क्रोधी 'स्वभाव' का है तो यह उसके व्यक्तित्व का समुचित मूल्यांकन नहीं होगा। हो सकता है कि वह व्यक्ति अमूमन शांत स्वभाव का हो, मगर उसकी वैसी अभिव्यक्ति उस समय किसी कारण विशेष की वज़ह से गुस्से के रूप में अभिव्यक्त हुई हो।

भाव का प्रभाव व्यक्ति के शब्दों के चयन पर पड़ता है, भाव-भंगिमा पर पड़ता है और भाव की भिन्नता का प्रभाव उसके मुख से निकलने वाली ध्वनि पर पड़ता है। बोलने की शैली, उसका उतार-चढ़ाव और उसकी तीव्रता का मूल तत्त्व हमारे मन में चल रहा भाव होता है। यह भाव समय-समय पर बदलता रहता है, इसलिए किसी व्यक्ति की किसी एक बात को सुनकर उसके व्यक्तित्व का अनुमान लगाना बेहद कठिन है। भाषा भाव की अनुगामिनी होती है। कुछ ऐसे चालाक लोग होते हैं जो मन के भावों को छुपाकर दिखावटी बातें करते हैं। मनुष्य के व्यक्तित्व

मनुष्य जैसे-जैसे बड़ा होता है, दुनियादारी सीख लेता है, बातें बनाना जान जाता है, लेखन कला में निपुण हो जाता है और अभिनय करना सीख लेता है, वह भाषा से खेलने लगता है और उसके असली व्यक्तित्व को बूझना मुश्किल होता जाता है।

का आकलन घर के बाहर के व्यवहार से करना गलत होगा। बाहर की दुनिया में उसका अभिनय अलग होता है और घर में अलग। चतुर व्यक्ति अपने वाक्चातुर्य से भाव और भाषा को अलग कर लेता है। कुल निष्कर्ष यह है कि भाषा व्यक्ति के व्यक्तित्व के निर्धारण में बहुत सहायक सिद्ध नहीं होती, कई बार धोखा हो जाता है। वहीं पर, मौनी व्यक्ति के व्यक्तित्व का पता करना उसके अन्तर्मुखी होने के कारण बेहद कठिन होता है, फिर उसकी कार्यशैली पर गौर करने से उसके व्यक्तित्व का पता चल पाता है।

मजेदार बात यह है कि लिखते वक्त लेखक सावधान रहता है, जबकि बोलते वक्त वक्ता उस स्तर तक सावधानी नहीं बरत पाता है। दोनों में शब्द-चयन में भी अंतर होता है। लिखित में शब्द व्याकरणसम्मत और अलंकारयुक्त होते हैं जबकि बोलने में सरल, सहज और आडंबरमुक्त होते हैं। किसी भी व्यक्ति के असल व्यक्तित्व का उसके लिखे से पता लगाना कठिन होता है जबकि कई बार उसके बोलने से उसकी असलियत आसानी से सामने आ जाती है। एक सुदर्शन व्यक्ति को देखकर हम उसके रंग-रूप और कपड़ों से प्रभावित हो सकते हैं, लेकिन यदि उसकी भाषा दोषपूर्ण है तो उसके प्रति हमारी धारणा तुरंत बदल जाती है। वहीं कमजोर देहयष्टि और अनियमित वेशभूषा को देखकर किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व के बारे में बनी धारणा उसकी ओजपूर्ण वाणी को सुनकर बदल भी जाती है।

मोहनदास करमचंद गांधी की दुबली-पतली काया, अधनंगा बदन और घुटनों तक धोती को देखकर उनके व्यक्तित्व का प्रथम प्रभाव बेहद निराशाजनक होता था। उनकी वाणी में भी ओज नहीं था, आरोह-अवरोह नहीं था, सुनने वाले को प्रभावित करने में एकदम असमर्थ लेकिन उनकी बातों में जो दम था, जो कंटेंट था, वह इतना प्रभावोत्पादक था कि उनकी बातों के असर से न केवल भारतवासी वरन विदेशी भी प्रभावित हुए थे। तो, व्यक्तित्व की पहचान में कई बार भाषा असफल हो जाती है।

व्यक्ति स्वयं को अभिव्यक्त करना चाहता है। अभिव्यक्ति ध्वनि के माध्यम से हो, या लेख के या संकेत के, वह व्यक्त होना चाहता है। उसी प्रकार सामने वाला इन्हीं माध्यमों से उसके व्यक्तित्व का आकलन करने की कोशिश करता है, लेकिन व्यक्ति के व्यक्तित्व का छुपा हुआ हिस्सा छुपा ही रह जाता है क्योंकि पर्देदारी रहती है। बोलने में पर्देदारी, लिखने में पर्देदारी और शारीरिक भाव-भंगिमा में पर्देदारी।

लिखने की पर्देदारी पर एक घटना का ज़िक्र करना चाहता हूँ। मुझे एक शहर से पत्र आया जिसमें बिलासपुर में रहने वाले एक विवाह योग्य युवक के बारे में अन्तरंग जानकारी उन्हें चाहिए थी। लड़का जोजवा (कम बुद्धि वाला) था, झक्की था। अब मेरे सामने समस्या थी कि मैं यह बात लिखित में कैसे कहूँ? मैंने उन्हें उत्तर दिया, "लड़का जरूरत से ज्यादा सीधा है, आप स्वयं आकर देख लें, फिर जैसा उचित समझें निर्णय ले लें।" वे लोग बिलासपुर आये, लड़के को देखा, उन्हें पसंद आया, विवाह हो गया। लेखकीय चातुर्य से मेरे प्राण बच गये।

उसी प्रकार शारीरिक भाव-भंगिमा का लुभाने वाला प्रदर्शन करके राजनीति करने वाले नेता हमें बहलाते-फुसलाते रहते हैं तथा थोक भाव में वोट समेट कर शासक बन जाते हैं और मतदाता छला हुआ महसूस करता है क्योंकि उस नेता की झूठी बातों और छद्म भाव-भंगिमा को मतदाता पूरे तौर पर सही-सही समझ नहीं पाया और उसके व्यक्तित्व की असलियत समझने में भूल हुई।

"है कशिश तुम्हारी आँखों में या कोई और बात है
तुम झूठ कह रहे थे मुझे ऐतबार था।"

संक्षेप में, भाषा किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व का सही आकलन करने में सक्षम नहीं होती। हाँ, आंशिक रूप से पता लगाया जा सकता है। मनुष्य जैसे-जैसे बड़ा होता है, दुनियादारी सीख लेता है, बातें बनाना जान जाता है, लेखन कला में निपुण हो जाता है और अभिनय करना सीख लेता है, वह भाषा से खेलने लगता है और उसके असली व्यक्तित्व को बूझना मुश्किल होता जाता है।

व्यवहार विज्ञान के प्रशिक्षक तथा बिलासपुर (छत्तीसगढ़) में रहते हुए होटल व्यवसाय के साथ ही लेखन में भी सक्रिय। अब तक कई किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं।

अतीत के झरोखे से...

इस स्तम्भ में 'अणुव्रत' पत्रिका के अर्द्धशती पूर्व के अंकों से चयनित सामग्री पुनर्प्रकाशित की जा रही है ताकि अणुव्रत आंदोलन के स्वर्णिम इतिहास को हम वर्तमान से जोड़कर भविष्य की दिशा तलाश सकें। इस अंक में प्रकाशित चार पृष्ठ की यह सामग्री 'अणुव्रत' पाक्षिक के 16 मई 1970 के अंक से ली गयी है।

चमत्कार को नमस्कार कैसा ?

काका कालेलकर

दुनिया के सब धर्मों की अब बड़ी कसौटी हो रही है। अपने-अपने धर्म की खूबी और उपयोगिता सिद्ध करनी पड़ती है और अपना धर्म कितना लाभदायी है, आकर्षक है, यह सब दूसरे को समझाना पड़ता है। दूसरों के धर्म की अपेक्षा अपना धर्म कैसे श्रेष्ठ है, यह बताने की कोशिश भी करनी होती है।

आज जिस तरह भिन्न-भिन्न राजनैतिक पक्ष के नेता अपने-अपने पक्ष के सिद्धांत और कार्यक्रम जन-सामान्य के लिए कैसे हितकारी हैं यह बताते हैं और चुनाव के लिए खड़े होते हैं। इसी तरह ये सारे धर्म भी मानव जाति के सामने मानो चुनाव के लिए खड़े हैं। इस तरह धर्मों की कसौटी होती ही है।

लेकिन धर्मों के सामने इन दिनों एक दूसरी कसौटी खड़ी हुई है। इस कसौटी में हर एक धर्म को भिन्न धर्मी लोगों के सामने या तटस्थ लोगों के सामने खड़े रहने की बात नहीं है। हर एक धर्म को अपने अनुयायियों के सामने, खास करके अपने अनुयायियों में से नयी पुश्त के स्त्री-पुरुषों के सामने उनकी निष्ठा सुरक्षित रखने के लिए खड़ा रहना पड़ रहा है। आज का युग सत्योपासक विज्ञान का है। आजकल का युग वैज्ञानिक माना जाता है। विज्ञान अत्यन्त निर्दय अथवा कठोर सत्योपासक है। सत्योपासक प्रयोग-परायण विज्ञान के सामने खड़े रहना और अपने दावे का समर्थन करना आसान नहीं है।

जब मनुष्य बीमार पड़ते हैं, संकट में फँस जाते हैं अथवा किहीं कठिन परिस्थितियों में से बच जाने का कोई सीधा उपाय देख नहीं सकते, तब किसी लोकोत्तर शक्ति की मदद की अपेक्षा करते हैं और ऐसे समय जो भी मदद मिले, कृतज्ञता से सब तरह का विश्वास कर लेने को तैयार हो जाते हैं। मनुष्य के ऐसे विश्वास के कारण धर्म प्रचारक अपने-अपने धर्म की श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए तरह-तरह के चमत्कारों के प्रसंग पेश करते हैं। ऐसा एक भी धर्म नहीं है जिसमें चमत्कारों का सहारा नहीं लिया जाता। पुरानी कहावत है ही 'चमत्कार के बिना नमस्कार नहीं।'

चमत्कार किसे कहते हैं

एक बात स्पष्ट करनी चाहिए कि दुनिया में चमत्कार जैसी चीज है। सारा विश्व चमत्कारों से भरा हुआ है। जिस घटना का कार्य-कारण भाव समझ में नहीं आता, जो घटना सृष्टि के अथवा मानवी मन के सामान्य नियमों के विरुद्ध जाती है, उसी को चमत्कार कहते हैं।

मैंने अनेक देशों में और अनेक तरह के समाजों में एक मामूली चमत्कार करके दिखाया है और चकित हुए लोगों को उसका रहस्य समझाकर अपने हाथों भी वही चमत्कार हो सकता है, यह बताया है।

चमत्कार है बिल्कुल मामूली। बिल्कुल कोरी सूई या आलपिन ऐसी खूबी से पानी के पृष्ठ भाग पर रख देना जिससे किसी भी आधार के बिना वह पानी पर तैरती रहे। लोहे की अथवा पीतल की सूई अथवा आलपिन भारी होने के कारण पानी में डूब जाती है यह अनुभव सबको है, लेकिन इसी चीज को पानी के पृष्ठ भाग पर तैरते रखने की खूबी भी विज्ञान के नियम के अनुसार हमारे हाथों में आ सकती है और यह चमत्कार जब सब कोई कर सकता है और उसका कारण भी स्पष्ट होता है, तब चमत्कार चमत्कार नहीं रहता।

चमत्कारों की बातों में अतिशयोक्ति होती है

चमत्कारों के बारे में हमारा सार्वभौम अनुभव यह है कि चमत्कारों की बातें ज्यादातर सुनी सुनायी होती हैं। इनमें ज्यादातर अतिशयोक्ति ही होती है। भक्त लोग अपने पूज्य व्यक्ति के किये हुए चमत्कारों का वर्णन बढ़ा-चढ़ाकर करते जाते हैं। सत्य-निष्ठा की अपेक्षा भक्ति की भावना अधिक प्रबल होती है। सुनने वाले भी शंकाशील कम होते हैं। अद्भुतता के सामने दब जाने का स्वभाव हर एक मनुष्य में कमोबेश होता ही है।

लेकिन यह हुई मामूली चमत्कारों की बात। धर्म-ग्रंथों में और सन्तों के चरित्र में जो चमत्कार के वर्णन पाये जाते हैं, उनके बारे में अश्रद्धा व्यक्त करना भी आसान नहीं होता। हमारे पुराणों में चमत्कारों के जो किस्से पाये जाते हैं, उनमें से चन्द बातें केवल काल्पनिक बोध-कथाएँ होती हैं। दुनिया भर की काल्पनिक बोध-कथाओं में जो चमत्कार पाये जाते हैं, वे सब कवि कल्पना हैं। लेकिन जब ऐसी बोध-कथाएँ धर्मग्रन्थों में और संत-चरित्रों में आती हैं तब

अतीत के झरोखे से...

अधिकांश लोग उनकी सत्यता पर विश्वास रखने के लिए राजी होते हैं, उत्सुक भी दीख पड़ते हैं।

चमत्कार अध्यात्म का लक्षण नहीं

काल्पनिक कथाओं को हम छोड़ दें, वैज्ञानिक 'चमत्कार' को भी हम छोड़ दें, बाकी जो थोड़े इने-गिने चमत्कार रहते हैं, जिनके सच होने की संभावना है। उनके बारे में कहना पड़ता है कि ऐसे चमत्कार करने वाले लोग संत, सज्जन अथवा आध्यात्मिक पुरुष होते ही हैं, ऐसा अनुभव नहीं है। जिन लोगों में लोकोत्तर सदाचार है, दुःख निवारण करने की शुभ कामना है, जिनकी ईश्वर-निष्ठा देखकर हम लोगों में आस्तिकता जाग्रत हो सकती है, जिनका त्याग और बलिदान देखकर चरित्र के उत्कर्ष का नमूना हमारे सामने खड़ा होता है, ऐसे लोग चमत्कार करें या न करें, उनका आदर्श सामने रखना, उनके सदुपदेश से प्रभावित होना स्वाभाविक है, इष्ट है।

शिव शब्द का अर्थ ही कल्याण-कारिता है। सदाचार, सेवा, ज्ञान-दान आदि सात्विक गुणों को देखकर उनकी कदर करना, उनके बताये रास्ते जाना यह सब ठीक है। किन्तु मनुष्य शिव तत्त्व के साथ सामर्थ्य की अपेक्षा रखता है और अतीन्द्रिय लोकोत्तर सामर्थ्य देखते ही वहां पर आध्यात्मिकता होने का आरोपण भी करता है । हम भूल जाते हैं कि पुराणों में राक्षस, असुर और दुराचारी लोग भी कभी-कभी तपस्या के बल पर बड़े-बड़े चमत्कार करके दिखाते हैं। चाहे सो रूप धारण करना, चाहे वहां प्रकट हो जाना आदि अनेक चमत्कार तपस्या के बल पर दुराचारी दुर्जन भी कर सकते हैं।

संतों ने चमत्कार करने से इनकार किया

सबके सब संत-सत्पुरुष चमत्कार कर सकते थे अथवा करते थे, ऐसा भी कोई नियम नहीं है। इसलिए आइंदा के लिए धर्म को स्वीकार करते अथवा धर्म की कसौटी करते समय हम चमत्कारों की अपेक्षा न रखें।

सज्जनता, सदाचार, विश्वात्मैक्य भावना, त्याग, बलिदान आदि नैतिक आध्यात्मिक तत्त्वों की अपनी शक्ति होती ही है, उसकी हम कदर करें। लेकिन जहां-जहां लोकोत्तर शक्ति का आविष्कार दीख पड़े, वहां वहां अंधे होकर आध्यात्मिकता का आरोपण न करें। देखना है संत-वृत्ति कहाँ कितनी है, न कि संत कौन-कौन से चमत्कार कर सकते हैं। इतना तो समझना ही चाहिए कि कई संत हैं जिन्होंने चमत्कार करने से इनकार किया और भगवान से प्रार्थना की कि "भगवान ! हमारे हाथों कोई चमत्कार न बने। चमत्कार शक्ति से हमारा अधःपात होने की संभावना है। चमत्कार संतत्व की कसौटी नहीं है। और केवल चमत्कार के सामने हम सिर झुकाएं, यह भी काम का नहीं है।"

आजकल के विज्ञान-युग में पहले की अपेक्षा चमत्कार कम होने लगे हैं। पौराणिक युग में कदम-कदम पर चमत्कार बनते थे, अब महात्माओं से हम चमत्कार की अपेक्षा नहीं रखते और चमत्कार देखते ही करने वाले का माहात्म्य भी मंजूर नहीं करते।

धर्म के नाम पर भौतिक सामर्थ्य के उपासक न बनें

विज्ञान–साइन्स और यंत्रोद्योग-टेक्नोलॉजी अद्भुत चमत्कार करते जा रहे हैं। अनेक रोगों का निवारण होता है, मनुष्य चन्द्र तक हो आया है, वहां की मिट्टी भी लाया है और रेलवे, टेलीग्राफ, टेलीविजन, विमान आदि के चमत्कार तो दिन पर दिन बढ़ते ही जाते हैं। ऐसे जमाने में अच्छा यही होगा कि धर्म के नाम पर हम भौतिक सामर्थ्य के उपासक न बनें। नैतिक, आध्यात्मिक और सर्वोदयकारी सद्गुणों की उपासना हम करें।

आजकल के नवयुवक और युवतियां पुराने कालग्रस्त धर्म-नियमों को नहीं मानते क्योंकि उनके पीछे जो स्वर्ग-नरक का लोभ या डर दिखाया जाता था, उस पर किसी का विश्वास बैठ नहीं सकता। पुराने धर्मों ने मनुष्य को आध्यात्मिक उन्नति के लिए जो साधना बतायी, उसमें जो हितकारी तत्त्व है, उसकी प्रतिष्ठा आज भी अक्षुण्ण है। जहां लोभ और डर बताया जाता था, उसकी प्रतिष्ठा कम हो रही है।

और इससे भी बढ़कर एक महत्व की बात है। पुराने जमाने में जो सामाजिक आदर्श हितकर माने जाते थे, उनको मजबूत करने के लिए धर्मों का सहारा लिया जाता था। सामाजिक उच्च-नीच भाव कोई धार्मिक सिद्धांत नहीं है। तो भी सब धर्मों के पुरोहितों ने और वैरागियों ने अपनी नैतिक और सामाजिक श्रेष्ठता समाजमान्य करने के लिए अपने लिए विशेष अधिकार लिये। हिन्दू धर्म में ब्राह्मणों ने अपने लिए कई अधिकार ले रखे। ब्राह्मणों ने सम्पत्ति का और राजनैतिक अधिकारों का लोभ छोड़ दिया लेकिन सामाजिक श्रेष्ठता अपने लिए धर्म के बल पर प्राप्त कर ली। हर एक धर्म में ऐसा ही हुआ है। मनुष्य धर्म की गद्दी पर बैठ गया इस वास्ते उसमें दैवी अथवा आध्यात्मिक शक्ति आ गयी, ऐसी मान्यता रूढ़ हो गयी।

ईश्वर सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान है, इसलिए ईश्वर के नाम से बोलने वाले भी कमोबेश सर्वज्ञ, त्रिकालज्ञ और सर्वसमर्थ माने गये! ईश्वर अत्यन्त सहनशील है, धैर्यशील है, क्षमाशील है, इस बात का प्रचार प्रधानतया होना चाहिए।

धर्मों को अपना कलेवर बदलना होगा

चमत्कारों के द्वारा धर्मों की प्रतिष्ठा बढ़ायी गयी, जो धर्मों की कमजोरी थी। चमत्कारों का भंडाफोड़ हुआ और धर्मों की कृत्रिम प्रतिष्ठा टूट गयी। धर्मों के नाम पर जो सामाजिक अन्याय और अत्याचार आज तक चले, समाज को अब मान्य नहीं हैं। हर एक धर्म को अब अपने ही अनुयायियों के सामने कसौटी के लिए खड़े रहना पड़ता है। जब ये सारे धर्म आत्मशुद्धि करेंगे, सामाजिक अन्याय और सामाजिक द्रोह छोड़ देंगे, तब सुसंस्कृत, विशुद्ध धर्मों के लिए एक उज्ज्वल

भविष्य तैयार है ही। धर्मों के नाम पर जो संस्थाएँ खड़ी हुई हैं, उन संस्थाओं के गद्दीपति धर्म-संस्करण के लिए जल्दी से जल्दी तैयार हुए तो उनके लिए भविष्य अच्छा है। इनमें जो लोग सयाने हैं, वे समझ गये हैं कि अपनी गद्दी के नीचे की जमीन अब मजबूत नहीं रही, उसे मजबूत किये बिना अब चारा नहीं। जैसे हैं उन रूपों में आज के धर्म टिक नहीं सकते, इतनी बात स्पष्ट है। हम जानते हैं कि धर्मों के अन्दर जो प्राण है, उसमें नव-जीवन की शक्ति होने से वह अपना कलेवर बदलकर विशुद्ध रूप धारण करेगा। जो धर्म ऐसा नहीं करेंगे, उनका स्थान जीवित समाज में नहीं किन्तु ऐतिहासिक संग्रहालय में ही होगा।

राष्ट्र सम्मान

जापानी पोत रूसी बेड़े से घिर चुका था। एक-एक कर जापानी सैनिक हताहत होते चले जा रहे थे। एक-एक जापानी सैनिक मरते-मरते रूसी बेड़े को बहुत अधिक क्षति पहुँचा चुका था। गिने-चुने सैनिक ही बच रहे थे। जापानी ध्वज अब भी शान से लहरा रहा था। आखिरकार एक क्षण ऐसा भी आया जब जापानी पोत पर नीरवता व्याप गयी। जब रूसी सैनिक आश्वस्त हो चुके कि अब कोई भी जापानी सैनिक शेष नहीं रहा, तब उन्होंने पोत पर अधिकार जमा लिया। किन्तु यह क्या! अंतिम कुछ क्षणों तक लहराने वाला जापानी ध्वज कहाँ चला गया? सैनिकों की लाशों को उलटते पलटते, बूटों की ठोकरें मारते एक लाश जैसे ही पलटी गयी, रक्त-सना जापानी ध्वज सैनिक के सीने में झांकता दिख पड़ा। राष्ट्र प्रेम की भावना से ओतप्रोत उस सेनानी ने ध्वज की लाज बचाने के लिए ध्वज को उतार सीने में संगीन घोंपकर सुरक्षित रख लिया था। अपने राष्ट्र ध्वज के प्रति एक ओर इतना सम्मान और दूसरी ओर हमारे देश में राष्ट्र ध्वज व संविधान की खुलेआम होली जलायी जाती है।

- राजेन्द्र नगावत

पाँच कविताएं

■ मुनिश्री विनयकुमार 'आलोक' ■

अपर्याप्त
अतृप्ति की आग
हर कहीं लगी है,
संतोष की दमकलें
पर्याप्त नहीं।
आग,
बेकाबू हो चुकी है।

व्यर्थ
तत्त्वज्ञानी
शून्य को आंकते हैं
बहुत गहराई में झांकते हैं
मगर बहुत स्थूल समस्या
मनुष्य की
अब तक न सुलझी है।

उजाले
मन के उजाले से
जो है प्रकाशित
बाहर की चकाचौंध
उसे भ्रान्त नहीं करती।

तृष्णा
तृष्णा,
एक नागिन
विषभरी
घने मायावी जंगल के
पेड़ों की जड़ों से लिपटी
अनुरक्ता।

उपलब्धि
जीवन का दीपक
आराध्य की
अर्चना में
जलते जलते
स्वयं ही आराध्य बन जाता है।

आंदोलन समाचार

अणुव्रत में चरित्र बल पर अधिक जोर : आचार्य तुलसी
आचार्य प्रवर का राजनांदगांव में भव्य स्वागत

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री तुलसी ने रायपुर वासियों के अत्यन्त भक्ति भरे निवेदन को स्वीकार करते हुए अपना आगामी चातुर्मास रायपुर में करने की घोषणा करवा दी है। चातुर्मास से पूर्व अभी आप उड़ीसा का परिभ्रमण करेंगे। उड़ीसा सीमा में आप 15 मई को प्रवेश कर रहे हैं।

नागपुर से विहार करने के अनन्तर 26 अप्रैल को आप राजनांदगांव पधारे। मार्गवर्ती ग्रामों तथा नगरों में सर्वत्र आपका भव्य स्वागत हुआ। स्वार्थ व भोग के इस युग में जब इस तप :पूत महर्षि की त्याग और अध्यात्म की वाणी जनता सुनती तो अत्यन्त भाव विभोर हो उठती। आपकी दिव्य प्रेरणाओं से प्रेरित होकर काफी व्यक्ति अणुव्रती बने हैं, बहुत से लोगों ने नशा आदि का परित्याग भी किया है।

राजनांदगांव की सीमा पर नगरपालिकाध्यक्ष श्री जोसेफ, इंदिरा संगीत महाविद्यालय के उपकुलपति डॉ. बलदेव प्रसाद मिश्र, विधायक श्री किशोरीलाल शुक्ला आदि विशिष्ट नागरिकों के साथ जनता ने आपका भावभीना स्वागत किया। यहीं से पंक्तिबद्ध जुलूस के साथ आचार्य श्री ने नगर के लिए प्रस्थान किया। अग्रिम पंक्ति में केसरिया रंग की झंडियाँ लिए वर्दीधारी छात्र चल रहे थे, उनके पीछे पारमार्थिक शिक्षण संस्था की बहनें, फिर साध्वियां और उनके पीछे विशिष्ट व्यक्ति चल रहे थे। बीच में आचार्य प्रवर, साधु समुदाय, उनके पीछे दो-दो की पंक्ति में भाई-बहनों का विशाल समुदाय। जुलूस में सैकड़ों अध्यापक तथा अध्यापिकाएं भी सम्मिलित थीं। सड़क के दोनों ओर खड़े लोग श्रद्धानत हो अभिवादन कर रहे थे। स्थान-स्थान पर विभिन्न संस्थाओं व संघों की ओर से मोटोज लगे हुए थे - आचार्य श्री तुलसी चिरायु हों, अणुव्रत आन्दोलन अमर रहे। जुलूस सर्वेश्वर दास नगरपालिका हाईस्कूल पहुँचकर स्वागत सभा में परिणत हो गया।

सर्वप्रथम नगरपालिका की बालिकाओं ने अणुव्रत प्रार्थना से स्वागत किया। नगर पालिका के कार्यकारी अध्यक्ष श्री जोसेफ ने आचार्य श्री का स्वागत करते हुए इस अवसर को अपने तथा अपने नगर के लिए महान् बताया। देवानंद जैन हाई स्कूल के प्राचार्य श्री पी. सी. कांकरिया, दिग्विजय कॉलेज के प्रिंसिपल श्री मेघराज कनोजिया, श्री किशोरीलालजी शुक्ला, इन्दिरा संगीत महाविद्यालय के उपकुलपति डॉ. बलदेव प्रसाद मिश्र, कस्तूरबा महिला मंडल की श्रीमती वैद्यवती गुहा ने आचार्य श्री का स्वागत किया। मुनिश्री राकेशकुमारजी ने जो इस क्षेत्र में वर्ष भर से कार्यरत हैं, आचार्य श्री का श्रद्धापूरित स्वागत किया।

आचार्य श्री ने अपने मंगल प्रवचन में कहा, आज की सबसे बड़ी आवश्यकता यह है कि हिंसा को अहिंसा के द्वारा रोका जाना चाहिए। संभव है इसके लिए अहिंसा को भारी कुर्बानी करनी पड़े, परन्तु इसके लिए अहिंसकों को पीछे नहीं हटना चाहिए। हमने अणुव्रत में उपासना को अधिक महत्व न देकर चरित्र बल पर अधिक जोर दिया है।

रात्रि में सर्वधर्म समन्वय पर विचार परिषद आयोजित थी। मुनिश्री नथमलजी ने विषय की भूमिका प्रस्तुत की। डॉ. बलदेव प्रसाद मिश्र, बौद्ध धर्म के प्रो. गुप्ता, मुस्लिम धर्म के प्रतिनिधि मौलवी रजब अली; मुनिश्री राकेशकुमार जी तथा ईसाई धर्म के प्रतिनिधि के वक्तव्य हुए।

श्री बैरवा रविदास संघ अणुव्रत समिति का वार्षिक समारोह

15 अप्रैल को मुनिश्री सोहनलालजी (राजगढ़) के सान्निध्य में पुर में श्री बैरवा रविदास संघ अणुव्रत समिति का वार्षिक समारोह आयोजित किया गया। समारोह की अध्यक्षता ब्लॉक कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष श्री उमाकांत आचार्य ने की। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपासक संघ के संचालक श्री चन्दमल मेहता, जोधपुर व अजमेर के क्रमशः श्री हरजीतलाल व पं. छगनलाल, आसीन्द से श्री चांदमल दुग्गड़ तथा टाडगढ़ से अणुव्रत डायरी के सम्पादक श्री भीखमचन्द्र कोठारी आमंत्रित थे। सभी वक्ताओं ने बैरवा बन्धुओं को अपना आत्मसम्मान सुरक्षित रखते हुए हीन प्रवृत्ति त्यागने की अपील की। मुनिश्री सोहनलालजी के कहा, "किसी भी जाति या धर्म को मानने वाला सत्संग द्वारा अपना जीवन सुधार सकता है।" मुनि श्री विजय कुमारजी ने मुख्य रूप से उद्‌बोधन प्रवचन किया। समारोह का संयोजन श्री देवीलाल बैरवा ने किया।

15 अप्रैल को ही मुनिश्री के सान्निध्य में तथा उपासक संघ के संचालक श्री मेहता की अध्यक्षता में जिला बैरवा अणुव्रत समिति का गठन हुआ। इसमें मादक पदार्थों का त्याग, जूठन न छोड़ने का संकल्प व अपव्यय न करने की शपथ ग्रहण की गयी।

सुधांशु गुप्त

मनी प्लांट

उसे आश्चर्य हुआ, सामने लगे गमलों में से एक गमले में मनी प्लांट भी लगा हुआ है। पता नहीं, समाज में पिछले दो दशकों में हुए बदलावों से मनी प्लांट का भाग्य उदय हुआ या इंसान में इस दिल के आकार के पौधे ने लोगों में पैसे के लिए हवस पैदा करने का काम किया। पैसा पहले आया या मनी प्लांट, यह भी सवाल ही बना हुआ है।

"अरे मनी प्लांट का ध्यान रखना।" पत्नी ने कहा और उसकी तरफ पीठ कर ली। एक बार उसे लगा शायद यह बात किसी पौधे ने ही कही है। उसने पीछे मुड़कर देखा, पत्नी गमलों में लगे पेड़ों को पुत्रवत निहार रही थी। वह बालकनी में खड़ा चाय पी रहा था। वह हमेशा यहीं खड़े होकर चाय पीता है। जब वह चाय पी रहा होता है तो घर का कोई सदस्य यहां नहीं आता।

करीब तीन फीट चौड़ी और लगभग 15 फीट लंबी इस बालकनी में एक पूरा घर-सा बसा हुआ है। कम से उसके लिए तो यह घर ही है। इसके एक तरफ गमले रखे हैं, कुछ मिट्टी के बड़े गमले, कुछ बोतलों और डिब्बों को गमलों में बदल दिया गया है। एक तरफ ग्रिल पर भी गमले लटके हुए हैं। बोतलों को बीच से चौकोर काट कर गमले की शक्ल दी गयी है और उन्हें इस तरह लटकाया गया है जिससे स्पेस जाया न हो। इसी दिशा में किनारे पर एक डस्टबिन के लिए बाल्टी रखी है। दायीं तरफ बैठने के लिए एक कुर्सी भी है। और बिल्कुल अंत में एक नल लगा है। इस बालकनी में गमले हैं, यह तो वह पहले से ही जानता था लेकिन यहां कोई मनी प्लांट भी लगा है, यह उसे मालूम नहीं था। पहली बार उसने अपने ही घर की बालकनी में लगे छोटे-छोटे पौधों पर नजर डाली है। कैक्टस, धनिया, तुलसी के पौधों को वह पहचानता है...। लेकिन मनी प्लांट...।

पत्नी वापस आ गयी है। अब उसके हाथ में पानी की एक बोतल है। वह सभी पौधों में पानी डाल रही है।

"इनमें से मनी प्लांट कौन-सा है?" उसने पत्नी से पूछा है।

पत्नी ने उसकी तरफ इस भाव से देखा है मानो मनी प्लांट को न पहचान पाना कोई जघन्य अपराध हो। उसने मनी प्लांट की तरफ अंगुली करके बता दिया। सभी पौधों को पानी देकर वह अंदर कमरे में चली गयी है। उसने मनी प्लांट को ध्यान से देखा है। दिल के आकार के हरे और कुछ पीलापन लिए पत्ते हैं। वह पौधों को देख ही रहा था कि उसकी नजर दो अन्य मनी प्लांट्स पर पड़ी। ये दोनों पहले वाले की तुलना में थोड़े छोटे थे। इन्हें उन डिब्बों में लगाया गया है जिनमें कभी होटल से दाल या कोई सब्जी आयी होगी। निम्न मध्यवर्गीय परिवार के सदस्य से मालूम पड़ रहे हैं ये मनी प्लांट। उसने पौधों की तरफ पीठ कर ली है। अब वह सामने देख सकता है। यह एलआईजी फ्लैट है। सारे फ्लैट एक ही तरह बनाये गये हैं। दायें-बायें कहीं भी नजर घुमाओ, हर तरफ एक सा ही माहौल है। यूं ये फ्लैट महज दो कमरों के हैं लेकिन एक कमरा लगभग हर फ्लैट में नाजायज बन चुका है।

समानता कितनी नाजायज होती है वह यहां देखी जा सकती है। वह अपने घर के नाजायज कमरे के बाहर बनी बालकनी में खड़ा है और सामने देख रहा है। सामने भी नाजायज कमरे के बाहर उसी तरह बालकनी है जिस तरह उनके फ्लैट में। उसने इधर-उधर नजर दौड़ायी है। दायें-बायें लगभग हर घर की बालकनी में एक ही अंदाज में कपड़े सूख रहे हैं, कुछ फुटकर सामान रखा है (जिसके लिए शायद घर में जगह न हो) और दिलचस्प बात है कि लगभग हर घर की बालकनी में गमले रखे हैं

और इनमें एक मनी प्लांट जरूर है। लेकिन ये सारे लोग घर के बाहर मनी प्लांट क्यों लगा रहे हैं, मनी प्लांट तो घर के अंदर होना चाहिए वरना तो सुख-समृद्धि बाहर ही रह जाएगी। उसे आश्चर्य हुआ अब तक उसकी नजर इन पर क्यों नहीं पड़ी थी, जबकि वह न जाने कब से यहीं खड़े होकर चाय पीता रहा है।

वह घर के अंदर आ गया है। पत्नी दुनिया के सबसे जरूरी काम–डस्टिंग– में लगी हुई है। वह आकर अपने दीवान पर लेट गया है। उसने पत्नी से कहा, ये मनी प्लांट घर के बाहर बालकनी में लगाने का क्या फायदा है?

"घर में भी पाँच मनी प्लांट लगे हैं, एक तो यहीं टीवी के ऊपर रखा है, लेकिन तुम घर में रहो तो कुछ पता चले ना," पत्नी ने फिर से उसकी गैर समझदारी या गैर दुनियादारी पर अंगुली रखी है।

उसने टीवी के ऊपर रखे एक छोटे से डिब्बे को देखा जिसमें मनी प्लांट मुस्कुरा रहा था। उसे वाकई आश्चर्य हुआ कि अब तक उसकी नजर इस मनी प्लांट पर क्यों नहीं पड़ी। नजर तो पड़ी होगी लेकिन वह मनी प्लांट को पहचानता नहीं है, इसलिए उसे पहचान नहीं पाया।

"बाकी मनी प्लांट कहां रखे हैं?"

वह पत्नी के पीछे-पीछे चलने लगा। उसने देखा, दो मनी प्लांट अगले कमरे में प्लास्टिक के स्टूल पर रखे थे, एक बेड रूम में और एक पीछे बालकनी में।

"कमाल है, घर में आठ मनी प्लांट हैं और फिर भी पैसे की....।"

"घर में मनी प्लांट लगाने से पैसा नहीं आता...पैसा तो काम करने से ही आता है।" पत्नी ने कहा।

"फिर मनी प्लांट का फायदा...?"

"मनी प्लांट से घर में पोजिटिव वाइब्स आती हैं, पैसा कमाने की इच्छा पैदा होती है और घर में बरकत होती है।" पत्नी ने फिर कहा।

"तब तो घर में बरकत भी हो रही होगी और पैसा कमाने की इच्छा पैदा होने के बाद पैसा भी खूब बरस रहा होगा।" यह उसने केवल सोचा, कहा नहीं। पत्नी अपने काम में लग गयी। शायद सुबह-सुबह यह सबक उसे दिया जाना था कि पैसे के लिए काम करना पड़ता है। घर में मनी प्लांट लगाने से पैसा नहीं आता। बस मनी प्लांट पैसों की भूख आपके भीतर पैदा करता है।

वह अपने दीवान पर लेट गया। उसने सोचा, बेटे की अगले महीने बीटेक की फीस जानी है। एक लाख रुपये का इंतजाम करना है। इंतजाम कहां से होगा। कहीं से आने तो हैं नहीं। मनी प्लांट भी इसमें कुछ नहीं कर सकता। एकमात्र रास्ता है ब्याज पर पैसा उठाना। "दादा" ब्याज बहुत ज्यादा लेते हैं। तीन पर्सेंट हर महीने का मतलब हुआ 36 पर्सेंट सालाना। उसके घर में तो खूब मनी प्लांट होंगे। तभी लाखों रुपये हैं ब्याज पर देने के लिए, लोगों का खून चूसने के लिए। लेकिन और कोई रास्ता भी तो नहीं है। अगर वह न हो तो जीवन ही कितना मुश्किल हो जाये। उसी से लेने पड़ेंगे। काम तो चल ही जाएगा। ऐसे ही काम चल रहा है-वर्षों से। और शायद ऐसे ही चलेगा। उसने एक बार फिर बायीं तरफ गर्दन घुमा कर टीवी पर रखे मनी प्लांट को देखा है। उसके पत्ते हल्के-हल्के हिल रहे हैं। उसे लगा, मनी प्लांट उसे चिढ़ा रहा है। वह सोचने लगा। यह मनी प्लांट कल्चर कब और कैसे घर में आयी? पहले तो ऐसा नहीं था। बचपन, किशोरावस्था और जवानी तक उसने कभी मनी प्लांट का नाम भी नहीं सुना था। माँ सामान लाने

के लिए जो चिट उसे देती थी, उस पर आटा, चावल, चीनी, चाय की पत्ती...सब कुछ लिखा होता था। लेकिन मनी प्लांट....। वे बेहद गर्दिशों के दिन थे। घर में सबसे बड़ा होने के कारण सबसे पहले उसी की नौकरी लगी थी। 600 रुपये प्रतिमाह। उसके बाद घर की स्थितियां कुछ बेहतर होनी शुरू हुईं। स्थितियां केवल उनकी ही खराब नहीं थी, बल्कि आसपास रहने वाले सभी लोग कमोबेश इन्हीं हालात में रहते थे। इस निम्न वर्गीय कॉलोनी में और बेहतर क्या हो सकता था। लेकिन कभी उसने किसी को पैसों या समृद्धि के लिए मनी प्लांट घर में लगाने की बात करते नहीं सुना।

ऐसा नहीं है कि उस समय उसके रईस दोस्त नहीं थे। उनकी कॉलोनी के सामने ही एक पॉश इलाका था। वहां 500-500 गज में कोठियां बनी थीं। उन्हीं कोठियों में रहने वाला उसका एक मित्र था-नन्टा। यही उसका घर का नाम था। वह उसे हमेशा इसी नाम से पुकारता था। एक दिन दोपहर को वह आया और बताने लगा, हमारे घर में बहुत से नये पौधे लग रहे हैं। बहुत से फूलों वाले पौधे। उसने बहुत से पौधों के नाम गिनवाये थे, लेकिन उसे आज भी याद है कि उनमें मनी प्लांट नहीं था। आज सोचता हूँ तो लगता है कि उन्हें मनी प्लांट की क्या जरूरत होगी। उनके पास तो वैसे ही खूब रुपया-पैसा था।

समय बदलता गया। 600 रुपये की तनख्वाह 3000 हो गयी। तभी उनके घर में पहली बार गैस का सिलेंडर आया। वरना माँ को हमेशा स्टोव पर ही जूझते देखा था। इसके कुछ दिनों बाद उन्होंने ब्लैक एंड व्हाइट टीवी खरीद लिया। किस्तों पर। जीवन में खुशियां धीरे-धीरे आ रही थीं। पता नहीं, इन खुशियों का पैसे से कोई रिश्ता था या नहीं। लेकिन अब भी घर के सब लोग एक साथ मिल-जुल कर बैठते थे, बतियाते थे, हँसी-मजाक करते थे और अपनी-अपनी समस्याओं पर चर्चा किया करते थे। इन खुशियों के बीच मनी प्लांट कहीं नहीं था। किसी के जेहन में भी नहीं।

जब 21वीं सदी शुरू हुई, तब तक बहुत कुछ बदलने लगा था, बदल चुका था। यहां तक कि वह खुशियों के अपने पिता वाले घर को छोड़ चुका था। शादी हो चुकी थी। उस छोटे घर में गुजारा नहीं था। कुछ साल किराये पर रहकर उसने किस्तों में ही यह फ्लैट खरीद लिया था। धीरे-धीरे घर में कथित रूप से सहूलियत देने वाला सामान आने लगा था। वह काम में डूबा रहता और पत्नी बच्चों को बड़ा करने में। बच्चे बड़े हो गये। अब कॉलेज जाने लगे हैं। और कॉलेज की फीस.....। वह झटके से दीवान से उठा है। उसने मोबाइल में दादा का नंबर देखा और मिला दिया।

"गुड मॉर्निंग दादा...."

"हाँ बोलो..."

"यार कुछ पैसों की जरूरत है...."

"कितने चाहिए...."

"एक लाख रुपये..."

"एक लाख!"

"क्यों ज्यादा हैं क्या?"

"नहीं तुम तो हमेशा 20 हजार ही लेते हो ना..."

"इस बार एक लाख ही चाहिए..."

"कब तक चाहिए...?"

"आज ही...."

"अभी तो मैं कहीं फँसा हुआ हूँ, कल दे दूं...."

"नहीं दादा, आज ही चाहिए...."

"चलो मैं शाम तक देता हूँ...."

चलो पैसों का इंतजाम तो हो गया। अब कोई दिक्कत नहीं है। उसने खुद से कहा और दोबारा दीवान पर लेट गया। शाम को जाकर वह रुपये ले आएगा। और बच्चे की फीस जमा हो जाएगी। बच्चे का पढ़ना बेहद जरूरी है। चाहे इसके लिए कुछ भी करना पड़े।

"लेटे ही रहोगे या कुछ करोगे भी?", पत्नी की आवाज ऐसी लगी मानो किसी दूसरे ग्रह से आ रही है।

"क्या करना है बताओ?" उसने बुझे मन से कहा।

"बताया तो है, फीस का इंतजाम"।

"हो गया है"।

"ब्याज पर ही लिए होंगे, और कहां से होगा"।

पत्नी दुनिया का हर रहस्य जानती है। इसके बावजूद वह सवाल करती है।

उसने थोड़ी तीखी आवाज में कहा है, "जब तुम्हें पता है तो क्यों पूछ रही हो।"

पत्नी मुँह बना कर अंदर चली गयी है। वह उठा है और घर से बाहर निकल आया है। सुबह की दो चाय वह पी चुका है। तीसरी चाय नीचे प्रभात टी स्टॉल पर पी लेता है। वह सीढ़ियां उतर कर खरामा खरामा टी स्टॉल पर आ गया है। उसने चाय का ऑर्डर दिया है और एक किनारे खड़ा हो गया है।

आसपास कई और युवा छात्र भी खड़े हैं। प्रभात टी स्टॉल पर चाय, नाश्ता, दोपहर और रात का खाना भी मिलता है। इसके साथ ही ब्रेड, बटर, टॉफियां, कोल्ड ड्रिंक्स भी उसके यहां मिल जाती हैं। वह मोबाइल भी चार्ज करने का काम करता है।

आसपास के सभी लोगों की जरूरतें वह पूरी करता है। जाहिर है अच्छी कमाई होगी। दिन में कम से कम दो हजार रुपये कहीं नहीं गये। यानी 60 हजार रुपये प्रतिमाह। उसका जी हुआ कि उससे पूछे कि उसके घर में मनी प्लांट लगा है या नहीं?

चाय...उसने हाथ बढ़ा कर चाय ले ली है और किनारे खड़ा होकर पीने लगा है। अचानक उसकी नजर सामने पड़ी है। सामने

कॉलोनी की सुरक्षा के लिए एक दीवार खड़ी कर दी गयी। उसकी दीवार के सामने यह दुकान है। उसने देखा दीवार के सामने बड़े बड़े गमले लगे हैं। उनमें अलग-अलग तरह के पौधे लगे हैं। दीवार और दुकान के बीच एक छोटी-सी सड़क है। उसे आश्चर्य हुआ, सामने लगे गमलों में से एक गमले में मनी प्लांट भी लगा हुआ है।

पता नहीं, समाज में पिछले दो दशकों में हुए बदलावों से मनी प्लांट का भाग्य उदय हुआ या इंसान में इस दिल के आकार के पौधे ने लोगों में पैसे के लिए हवस पैदा करने का काम किया। पैसा पहले आया या मनी प्लांट, यह भी सवाल ही बना हुआ है। उसकी चाय अभी खत्म नहीं हुई थी। उसने देखा, दुकान पर एक व्यक्ति आया है। उसकी साइकिल पर पीछे एक टोकरी लगी है। आगे हैंडल पर भी उसने एक टोकरी लगा रखी है। इस टोकरी में भी छोटे-छोटे पौधे हैं। उसने एक मैली-सी शर्ट पहनी हुई है। बाल बिखरे हुए हैं। वह पौधे बेच रहा है। उसने चाय वाले से चाय के लिए कहा है। उसकी चाय खत्म होने वाली है। लेकिन उससे पहले ही वह पौधे वाले के पास पहुँच गया और उसने पूछा, "आपके पास मनी प्लांट भी है क्या?" उसके चेहरे पर पौधा बिक जाने की एक उम्मीद उभरी। उसने पूरे उत्साह से कहा, "जी बाऊजी है..." यह कहकर वह टोकरी में रखे मनी प्लांट के पौधे दिखाने लगा।

"कितने का है"?

"ये 120 रुपये का है", उसने एक मनी प्लांट दिखाते हुए कहा।

"इससे कम का भी है कोई"?

"ये सत्तर रुपये का है"।

उसने पौधे को ध्यान से देखा। बहुत ही छोटे-छोटे दिल के आकार के पत्तों वाला वाला यह मनी प्लांट बिकने के लिए उतावला है। पौधे बेचने वाला भी उसकी तरफ इस आस से देख रहा है कि शायद यह बिक जाएगा। उसने पौधे को वापस टोकरी में रख दिया।

"बाऊजी, एक खरीद लो, आज सुबह से बिक्री नहीं हुई है। मैं साठ रुपये लगा दूँगा।" यह कहते-कहते उसके चेहरे पर दयनीयता का एक भाव उभर आया है।

उसने चाय का गिलास एक कोने पर रखा और अपनी जेब में से 70 रुपये निकाल कर उसे दिये और एक मनी प्लांट खरीद लाया। उसने सोचा, पत्नी उसके हाथ में मनी प्लांट देखकर खुश होगी और सोचेगी कि अब वह भी पैसों की महत्ता को समझ गया है।

घर में जैसे ही पत्नी ने उसके हाथों में मनी प्लांट देखा तो वह गुस्से से भड़क गयी।

"मैंने दिखाया तो था आपको...घर में आठ मनी प्लांट हैं, फिर इसे क्यों उठा लाये?"

"ताकि मेरे भीतर भी पैसा कमाने की हवस पैदा हो!"

उसने टीवी के पास पहले से ही रखे एक मनी प्लांट के बराबर में अपना मनी प्लांट रख दिया है और अपने दीवान पर लेट गया है।

दिल्ली में रहने वाले लेखक पत्रकारिता में तीन दशक गुजारने के बाद अब पूरी तरह लेखन से जुड़े हुए हैं। इन्होंने अनेक साहित्यिक उपन्यासों का रेडियो के लिए रूपांतरण किया है तथा टीवी चैनलों के लिए अनेक धारावाहिक लिखे हैं।

Dr. Glenn D. Paige

Ahimsa, Anuvrat and Global Transformation

Anuvrat offers humankind practical steps to work, locally and globally, for peace and disarmament, economic justice, human rights, and protection of the environment. It offers practical steps to bring about cooperation to solve such problems by men and women, races, classes, religions, nations, and other sectors of society.

(ANUVRAT AWARD was conferred on Prof. Glenn D. Paige in 1995 in the presence of H. H. Anuvrat Anushasta Acharya Tulsi and Acharya Mahapragya. Dr. Paige delivered a very illuminating speech on this occasion. The text of his speech is being reproduced here.)

The more violent the world becomes, the more important becomes the preservation, development, and global sharing of the precious Jain tradition of ahimsa - non-killing, respect for life in all its forms. Nonviolence is not only a luxury for saints and martyrs, but an absolute necessity for continuation of human and planetary life.

Therefore it is a blessing to be able, on this occasion, to pay respect to that tradition, to all who are gathered here, and to all those throughout India and the world who are contributing to its continuation.

Your techniques and examples give hope to all humankind that a non-killing global society ultimately can be realized.

Over the past eight years it has been a joyful privilege to be among those who have received the inspiration and teaching of H.H. Gurudev Acharya Tulsi, Acharya Mahapragya, and their dear colleagues on visits to Ladnun, Rajsamand, Jaipur and Delhi. In Mehrauli, I have been blessed by introductory training in Preksha Meditation generously given by the late respected Shri J. S. Zaveri, Muni Mahendra Kumar, and Shri Dharmananda.

Through the writings of Acharya Tulsi and Acharya Mahapragya, as well as the activities of the Jain University for Nonviolence and the Anuvrat Vishva Bharati including visits by Samans and Samanis to Hawaii I have been a grateful student of Preksha Meditation, Jeevan Vigyan and the

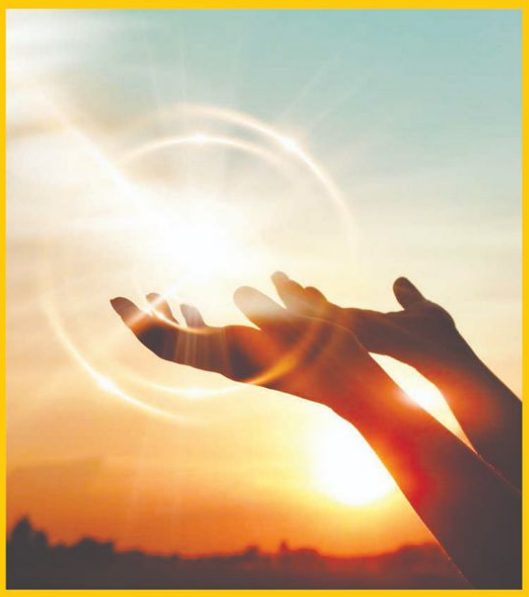

The Anuvrat Movement calls upon each individual and each social group to define and impose upon themselves those actions that, step by step, are likely to bring about nonviolent cultural, social, economic and political changes.

Anuvrat Movement. For those treasured gifts of spirit, knowledge, and experience I am profoundly grateful and am deeply indebted to all who have made them possible.

Over the past twenty years as a political scientist, after being awakened by the spirit of "no more killing", I have been seeking an answer to the question "Is a nonkilling society possible?" Conventional wisdom in the West and in most of the world is based upon the assumption that it is not. My fellow political scientists tell me that it is 'unthinkable'. They customarily give three reasons why they expect killing to continue forever : (1) Human Nature, (2) Economic Scarcity, and (3) Rape. That is, humans, like animals, are killers by nature; conflict over scarce resources will always lead to killing; and men must always be prepared to kill to defend their female family members against rape. Since most political scientists are men, these are male formulations. Women differ by substituting lethal defense against threats to kill their children instead of rape as a reason why achievement of nonkilling social conditions is impossible.

As I understand them, the teachings of Acharya Tulsi and Acharya Mahapragya offer a way out of this violent pessimism. First, Jain teachings view humans as not being inherently murderous but as having souls capable of expressing ahimsa. Humans are not necessarily killers. The survival and multiplication of humanity thus far proves that the law of life, ahimsa, is capable of prevailing over the deviance of lethality. This is, of course, not unconditionally guaranteed forever : humans can choose to respect or destroy the lives, their own as well as of others.

Second, through aparigraha - self-imposed limitation of possessions and passion - humans need not be the murderous slaves of either economics or sexuality. Limited need and equitable distribution can prevail over infinite wants and rapacious exploitation.

Third, through anekant, recognition of alternative approaches to Truth. Jain teachings call for tolerant receptivity to diverse conceptions of actual and desirable social reality. Failure to respond to human spiritual and material needs, such as for respect and well being, causes violence. Violent imposition of monistic solutions to pluralistic conflicts causes more violence. Therefore the Jain doctrine of anekant contributes to need-responsive processes of social problem-solving that are necessary for the creation and maintenance of a nonkilling society.

Fourth, the practice of Preksha Meditation offers a simple but ingenious way to discover nonviolence within each

The survival and multiplication of humanity thus far proves that the law of life, ahimsa, is capable of prevailing over the deviance of lethality. This is, of course, not unconditionally guaranteed forever : humans can choose to respect or destroy the lives, their own as well as of others.

individual and to connect that nonviolence with actions to create and maintain a nonviolent society. Preksha Meditation offers a solution to a serious problem that constantly perplexes peace and justice advocates in the West, i.e. how to connect 'Inner peace' of individuals with the 'outer peace' of actions to change the violent society.

The Preksha solution is found in the practice of auto-suggestions. After attaining inner approximations of ahimsa through relaxation, perception of psychic centers, and perception of psychic colours, each person can predispose himself by auto-suggestions to act towards others in ways that will create social ahimsa. For example, one can be self-predisposed to become more humble, tolerant, gentle, and fearless.

Fifth, the auto-suggestion of Preksha Meditation can be connected to the conscious practice of Anuvrat-small vows that express ahimsa, anekant and aparigraha in individual and social life. Anuvrat offers humankind practical steps to work, locally and globally, for peace and disarmament, economic justice, human rights, and protection of the environment. It offers practical steps to bring about cooperation to solve such problems by men and women, races, classes, religions, nations, and other sectors of society. The Anuvrat Movement calls upon each individual and each social group to define and impose upon themselves those actions that, step by step, are likely to bring about nonviolent cultural, social, economic and political changes.

It should be noted that both Preksha Meditation and Anuvrat make possible the combination of individual freedom with social responsibility - something sought by Western political philosophers for centuries. That is, individuals can choose to implant within themselves desirable behaviours by auto-suggestions (Preksha Meditation); and they can impose upon themselves small vows they deem will contribute to the well-being of society (Anuvrat). At the same time they can agree to join with others to incorporate similar behaviours in their Preksha Meditation and Anuvrat practices. Thus the individual is empowered to find nonviolence within and to express it in cooperative social action. We might call it Preksha Swaraj (self-reliance) and Anuvrat satyagraha (nonviolent action) for sarvodaya (the nonviolent well-being of all).

CENTER FOR GLOBAL NONVIOLENCE

For these reasons, the Jain tradition of ahimsa, Preksha Meditation, Anuvrat, Jeeven Vigyan, the Jain Vishva Bharati and the Anuvrat Vishva Bharati are of the highest inspiration and interest for the infant Center for Global Nonviolence. The Center was incorporated as an independent nonprofit institution in the State of Hawaii on October 2, 1994, which was, as you know, the 125th birth anniversary of Gandhiji's.

The Center for Global Nonviolence is founded on the principle of no more killing. It seeks to cooperate with individuals and institutions throughout the world to advance the spirit, science and skills of nonviolence - through research, education/training, and policy development to assist practical nonviolent social transformation from the village to the global polity.

Therefore we bow to the Jain tradition of ahimsa as the highest Dharma and seek to diffuse its message of respect for life throughout the world in the spirit of anekant we seek to combine the power of Jain ahimsa with nonviolent principles to be found to varying degrees in all world religious faiths and humanist philosophies. The world needs a powerful tradition of Global Ahimsa, created in the spirit of anekant that draws upon all sources of nonviolent spiritual inspiration.

Our Center recognizes that the spiritual base of nonviolence is absolutely essential, but that spirit alone is not enough. Thus we seek to combine and advance scientific knowledge that will enable humankind to overcome violence - to put an end to killing and to extend the principle of ahimsa to all aspects of planetary life. That is why we respect the combination of science and spirit that offers the world Preksha Meditation and Jeeven Vigyan.

I will never forget how surprised and enlightened I was on my first meeting with Acharya Mahapragya in 1987, when I asked him if he thought it possible for humans to create a nonkilling society.

He replied. "We'll never get to nonviolence by religion alone." I never expected such an answer from a saintly man of religion. Then he went on to explain the origins of nonviolence in terms of neuroscience, biochemistry and endocrinology as affected in part by "what we eat." For my part, as a social scientist, I had finally come to appreciate that we will never reach a nonviolent society by science alone. Spirit, science, and skill must be combined. None can succeed alone to bring about nonviolent social change.

Thus our Center seeks to encourage exploration of the scientific contributions to nonviolence discoverable in the natural sciences, biological sciences, behavioral sciences, and social sciences - as well as in other sources of knowledge in the arts, humanities, and professions. Of special interest are such things as brain science, gender relations, and the creation of nonviolent economic and political processes that respond to human needs and that respect planetary life.

Our Center seeks also to learn from and to advance the skills of practical nonviolent action, drawing upon the experiences of men and women in cultures throughout the world. That is why we have such interest in learning from the Anuvrat Movement and combining its practical methods with those of Gandhian satyagraha and methods for nonviolent social change developed by Martin Luther King, Jr., and others practising nonviolence in various cultures.

To combine the spirit, science, and skills of nonviolence to assist transition from global conditions of bloodshed and threat to planetary life will require serious institutional development. Institutions grow out of visions that engage human talents and material resources.

To understand the need for nonviolent institutional development, compare an institution devoted to violence: the United States Department of Defense. It's principal task is to prepare to kill or threaten to kill for American interests anywhere in the world as ordered by its Commander-in-Chief, the President of the United States. At its Pentagon Headquarters 23,000 civilian and military workers engage in daily planning and support of the operations of 1,610,490 uniformed members of the armed forces. They are backed by $263.7 billion provided

।। श्री महावीराय नमः ।। ।। ऊँ ह्रीं श्रीं अर्हं नमः ।।

मंगलम् भगवान वीरो, मंगलम् गौतमो गणीः ।
मंगलम् स्थूलिभद्राद्या, जैन धर्मोस्तु मंगलम् ।।

सही दिशा में शक्ति का नियोजन करने वाला व्यक्ति सफलता प्राप्त करता है....

हार्दिक शुभकामनाओं सहित...

जीतमल जैन

मुकेश जैन
उमेश जैन

SPONGE ENTERPRISES PVT. LTD.

(Manufacturer & Exporter of Rice)

REGISTERED OFFICE :
602, 6th Floor, Offizo Magneto The Mall, Labhandi
G.E. Road, Raipur (C.G.) 492010

Factory Address :

Village Matiya, Kharora Road, Raipur (C.G.)

email : info@spongeenterprises.com

Ph: +91 771 4900199, +91 771 4911199

by Congress in the 1995 military budget. (Source: U.S. Department of Defense, Office of Public Affairs, January 23, 1995). Such sums engage the talents of scientists. engineers, corporations, labour unions, and persons in many other sectors of society. Billions of dollars are devoted yearly to invention and development of new weapons.

Compared to such a Lethal Giant, how tiny is our institutional idea of creating a Center for Global Nonviolence with a small core team of seven persons.

They will work cooperatively with individuals and institutions throughout the world on projects of mutual benefit to advance research, education/training and applied nonviolence. The idea is not to build a big central institution but to establish a small group that can encourage nonviolent global creativity, seek resources to carry out projects, and carry ideas forward to stages where they can be taken up by private and public institutions with large-scale implementational capabilities. The organizational model is something like that of the United Nations University based in Tokyo which, based on a large endowment from Japan, engages the talents of universities throughout the world even though the UN University headquarters has no faculty or students of its own.

Against this background on behalf of the Centre for Global Nonviolence which is just entering the world, I express profound respect for the eternal Jain spirit of ahimsa that will inspire its life as well as deep gratitude for the practical gifts of Anuvrat, Preksha Meditation and Jeevan Vigyan that will contribute to its skills. Grateful acknowledgement is also expressed to the Jai Tulsi Foundation for early moral and material encouragement for the Centre's institutional development as a contributor to nonviolent global transformation in the 21st century. On this occasion with enormous respect for Jain contributions to the spirit, science and skills of nonviolence and in the presence of dear

I will never forget how surprised and enlightened I was on my first meeting with Acharya Mahapragya in 1987, when I asked him if he thought it possible for humans to create a nonkilling society.

teachers Acharya Tulsi and Acharya Mahapragya I take upon myself the vow of working to complete the writing of a little book titled Nonkilling Global Political Science by the end of 1995 and thereafter working to find the resources necessary to develop the Center for Global Nonviolence as a small contribution to the liberation of humankind from violence.

Dr. Glenn D. Paige was president, center for Global Nonviolence, Honolulu, Hawaii, Professor Emeritus of Political Science, University of Hawaii.

क्या है शांति का रास्ता?

गत अंक में प्रस्तुत परिचर्चा के इस विषय पर पाठकों से प्राप्त चिंतन बिंदुओं को यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है –

सहृदयता पूर्ण वार्तालाप ही सर्वोपरि समाधान

युद्ध घोर अमानवीय कृत्य है। ऐसे इंसानी समूह जिन्होंने कभी एक-दूसरे को देखा ही नहीं, वे परस्पर मरने-मारने को उतारू हो जाते हैं। जनहानि के रूप में सेना के साथ ही निर्दोष लोग भी इसकी चपेट में आ जाते हैं। प्राणी जगत, पर्यावरण आदि भी इससे बुरी तरह क्षतिग्रस्त होते हैं। युद्ध समाप्त भी हो जाये, किंतु इससे प्रभावित व्यक्तियों की पीड़ाएं अंतहीन हो जाती हैं।

ऐसे में प्रत्येक देश के शीर्ष पर ऐसा व्यक्ति आसीन होना चाहिए जिसका दृष्टिकोण संपूर्ण विश्व के प्रति मानवीय हो। साथ ही यह चिंतन हमेशा जेहन में होना चाहिए कि मानव जीवन बड़ी मुश्किल से प्राप्त होता है। उसे परस्पर लड़कर क्यों नष्ट किया जाये? सहृदयता पूर्ण वार्तालाप ही युद्ध विराम या उसे टालने का सर्वोपरि समाधान है। प्रत्यक्ष वार्ता का अभाव हो तो मान्य शक्तिशाली देशों को मध्यस्थता कर युद्ध विराम के लिए प्रयास करना चाहिए।

–मीरा जैन, उज्जैन

युद्ध समाधान नहीं, स्वयं एक समस्या है

मनुष्य का धर्म मूलतः करुणा व प्रेम ही है। अणुव्रत दर्शन के अनुसार किसी भी जीव की हत्या पाप कर्म है, लेकिन आज मनुष्य अपने कर्म और धर्म दोनों से भटक गया है। जरा-से फायदे के लिए वह दूसरों के (और कभी-कभी अपने भी) अनमोल जीवन को खतरे में डाल दिया करता है।

पिछले दो वर्षों से कोरोना की महामारी की वजह से अपनों को खोने का दर्द, तड़प व संसाधनों की कमी झेलने के बाद लगने लगा था कि दुनिया ने आपसी प्रेम, सहिष्णुता व इंसानी जान की कीमत को समझ लिया होगा, लेकिन यह बात महज कोरी कल्पना साबित हो रही है। आज हम न्यूज चैनल, अखबार व सोशल साइट्स को रूस-यूक्रेन युद्ध की खबरों से रंगा पाते हैं। युद्ध समाधान नहीं, स्वयं एक समस्या है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हर एक जीवन अनमोल है। अगर हम एक जीवन का निर्माण नहीं कर सकते तो उसे लेने का भी हमें कोई हक नहीं है।

–अलका 'सोनी', बर्नपुर

व्यक्तिगत शांति से ही विश्व शांति संभव

जिनके हाथ में शक्ति है, उन्हें शांति की बात समझ में नहीं आती। शांति की अपेक्षा समूची मानवता को है। आज के विश्व की स्थिति देखिए। जो वैभवशाली हैं उनके मन में शांति नहीं, उन्माद अधिक है। इसका कारण है - मानवता के प्रति एकत्व दृष्टिकोण की अनुभूति नहीं होना। आज संहारक शस्त्रों के निर्माण की होड़ चल रही है। इसके परिणामस्वरूप सारा वातावरण भय से आक्रांत है। उन्मत्त व्यक्ति हिताहित नहीं सोचता, अपने आग्रह को क्रियान्वित करने में डटा रहता है, यहीं से विनाश प्रारंभ हो जाता है। व्यक्ति-व्यक्ति के मन में शांति का भाव ही विश्व शांति का उपादान हो सकता है।

–विमलेश सिंघी, हैदराबाद

छेड़ने होंगे अमन के तराने

हर वर्ष 21 सितंबर को हम विश्व शांति दिवस मनाते हैं। काफी धन खर्च करके आयोजन होते हैं, बड़ी बातें होती हैं, मगर अगले ही दिन से फिर नफ़रत के व्यापार में लिप्त हो जाते हैं। लगभग चार महीने से चल रहा रूस-यूक्रेन युद्ध खत्म होने का नाम ही नहीं लेता। इसका असर विश्व भर में पड़ रहा है। अपने ही देश में जाति-धर्म के नाम पर आये दिन झगड़े, तनाव हो रहे हैं जो आपसी कटुता को बढ़ाने वाले हैं। सिरफिरी ख्वाहिशें जाग रही हैं, अमन-चैन लुट रहा है। मन्दिर, मस्ज़िद दोनों की पवित्रता कलंकित हो रही है। नफरत और हिंसा का दौर चरम पर है।

समाधान हमें खोजना होगा। कोई भी धर्म हिंसा की सीख नहीं देता। आसमान में सफेद कबूतर छोड़ देने से शांति के पैगाम नहीं दौड़ेंगे। नापाक इरादे छोड़कर अमन के तराने छेड़ने होंगे। तभी गांधी, गौतम की इस धरती से अहिंसा का संदेश दूर-दूर तक जाएगा।

–अमृता पांडे, हल्द्वानी

हिंसा का बदला हिंसा नहीं हो सकती

ज्यों-ज्यों विज्ञान अपने पंख लगाकर उड़ रहा है , त्यों-त्यों विनाशकारी हथियारों के आविष्कार बढ़ते जा रहे हैं। मानवता अपने अस्तित्व को बचाने की जंग लड़ रही है, विश्व अब हिंसा के नये दौर से गुजर रहा है। रूस और यूक्रेन के बीच युद्ध छिड़े कई माह हो गये। निर्दोषों का बहता रक्त और चीखें बहुत आहत कर रही हैं। इस युद्ध के कारण पूरे ही विश्व में महंगाई चरम पर है। गरीब और मध्यम वर्ग इससे जूझ रहा है। ऐसे में सभी गुटनिरपेक्ष देश और संयुक्त राष्ट्र संघ एकराय होकर रूस और यूक्रेन के तानाशाहों को समझाएं। हिंसा का बदला हिंसा नहीं हो सकती। इसलिए गुटनिरपेक्ष देशों और संयुक्त राष्ट्र संघ को मिल बैठकर इस महत्वपूर्ण समस्या को त्वरित निपटाने में रुचि लेनी चाहिए, ताकि निर्दोष लोगों का संहार रोका जा सके।

–डॉ. राकेश चक्र, मुरादाबाद

अहिंसा, क्षमा को आचरण में उतारना होगा

यूं तो विश्व शांति का संदेश हर युग,हर दौर में दिया गया है, लेकिन इसको अमल में लाने वाले कम ही रहे हैं। आज इंसान को

इंसान से जोड़ने वाले तत्त्व कम हैं और तोड़ने वाले अधिक। इसी से आदमी, आदमी से दूर हटता जा रहा है। इन्हें जोड़ने के लिए प्रेम, करुणा, शांति, सौहार्द, अहिंसा चाहिए और चाहिए एक-दूसरे को समझने की वृत्ति। यह वृत्ति आएगी महावीर स्वामी, गौतम बुद्ध जैसी महान विभूतियों के विचारों को अपने मन, वचन, कर्मों में उतारने से।

अहिंसा, क्षमा जैसे शब्दों को हमें न सिर्फ खुद समझना और आचरण में उतारना होगा बल्कि दुनिया के हर राष्ट्र को भी इनका अर्थ समझाना होगा। यदि इन्हें अपनाया जाये तो सारा विश्व स्वार्थपरता, युद्ध की विभीषिका, पर्यावरण प्रदूषण जैसी अनेक समस्याओं से मुक्त हो पाएगा। तभी मानवता की विजय होगी और वसुधैव कुटुंबकम् की भावना साकार हो सकेगी।

–ज्योति शर्मा, कोटा

मनोभावों के परिमार्जन से आएगी शांति

बचपन में माँ को पूजा करते देखता था। उसकी प्रार्थना होती थी -"सबका भला कर मेरा भी भला करना।" यही भाव शांति का रास्ता है जो सभी के कल्याण की भावना से भरा है। अधिकार की महत्वाकांक्षा हमें उद्वेलन और संघर्ष की ओर धकेलती है। क्या हम आचार-व्यवहार की ऐसी नैतिक संहिता विकसित कर सकते हैं जो हमें न केवल मनुष्य जाति, अपितु प्रकृति के सभी जीव-अजीवों के प्रति प्रेम के भाव से आप्त करे?

हाँ, अणुव्रत के रूप में वे शिक्षाएँ हमारे साथ हैं, बस इन्हें एक वैचारिक आंदोलन का स्वरूप देकर मनुष्य के मन को निमज्जन किये जाने की जरूरत है। हम अपनी शिक्षा व्यवस्था में अणुव्रत जैसे प्रकल्पों को स्थान देकर मनुष्य जाति के भविष्य को भेदभाव और घृणा से रहित तथा समरस बना सकते हैं। हमारे मनोभावों का परिमार्जन हमें शांति की ओर उन्मुख करेगा।

–दशरथ कुमार सोलंकी, जोधपुर

दूसरों के अधिकारों का हनन रोकना होगा

शांति प्राप्त करने के लिए सबसे महत्वपूर्ण घटक है आत्म संयम। अपनी इच्छाओं तथा आकांक्षाओं पर नियंत्रण तथा संयम से आत्मशांति प्राप्त की जा सकती है। आज पूरा विश्व हिंसा से त्राहि-त्राहि कर रहा है। चारों ओर अशांति का वातावरण है। रूस-यूक्रेन युद्ध, आतंकवादी संगठनों तथा परस्पर कलह के कारण चारों ओर अशांति का परिवेश है। हर राष्ट्र तथा हर व्यक्ति शांति का माहौल चाहता है, परंतु कोई भी इसके लिए गंभीरता से प्रयास नहीं करता। दरअसल हमारी कथनी-करनी एक समान होनी चाहिए और निज पर शासन फिर अनुशासन अर्थात् स्वयं पर संयम रखकर अपनी महत्वाकांक्षाओं पर लगाम लगानी पड़ेगी, तभी शांति का वातावरण होगा और हमें इसके लिए स्वयं से शुरुआत करनी होगी। निजी स्वार्थ, सुख के लिए दूसरों के अधिकारों का हनन करना अशांति की वृद्धि का मुख्य कारण है और इस भावना पर अंकुश लगाना अनिवार्य है, तभी विश्व में शांति का वातावरण निर्मित हो सकता है।

–सृष्टि जैन, टोहाना

मानवीय मूल्यों को प्राथमिकता देनी होगी

इंसान में राक्षसत्व भी होता है और देवत्व भी। जब अहंकार, स्वार्थ व सत्ता की लिप्सा पनपने लगती है तो राक्षसत्व में भी वृद्धि होती है। मानवीय संवेदनाओं का अभाव होने लगता है। इनके विस्तार के कारण ही दो विश्वयुद्ध हुए। चाहे कितने भी सम्मेलन हो जाएं, कितनी भी योजनाएं बन जाएं, कुछ नहीं होगा, जब तक लोग अंदर से नहीं बदलेंगे। इसके लिए अहिंसा का रास्ता अपनाना होगा। मानवीय मूल्यों का महत्व समझते हुए उन्हें प्राथमिकता देनी पड़ेगी। जीओ और जीने दो के सिद्धांत पर चलना होगा। विज्ञान के प्रगतिशील स्वरूप का प्रयोग मानवता की भलाई के लिए करना होगा न कि उसके अहित के लिए।

–सुधा भार्गव, बेंगलुरु

अगले अंक का विषय

परिचर्चा

मोबाइल गेम को जानलेवा लत बनने से कैसे रोकें ?

मोबाइल फोन अब महज बात करने और एक-दूसरे के संपर्क में रहने का जरिया नहीं रह गया है। अब तो मोबाइल एप के सहारे हम आपसी लेन-देन से लेकर रेलवे रिजर्वेशन समेत दैनंदिन जीवन के अनेक कार्य संपादित करते हैं। अत्याधुनिक तकनीकी सुविधाओं से लैस स्मार्ट फोन के बिना जीवन के बारे में सोचना भी मुश्किल लगता है।

कामकाज के तनाव से निजात पाने के लिए इन स्मार्ट फोन में विभिन्न गेम्स के फीचर भी उपलब्ध कराये जाते हैं, मगर मनोरंजन का साधन बनने के बदले ये मौत का सबब बनते जा रहे हैं। हाल ही लखनऊ में पबजी खेलने से रोकने पर एक किशोर ने गोली मारकर माँ की हत्या कर दी। वहीं मुंबई में माँ ने एक किशोर को गेम खेलने से रोका तो उसने ट्रेन के आगे कूदकर जान दे दी। झांसी में रहने वाला 10वीं कक्षा का एक छात्र माता-पिता के रात के खाने में नींद की गोलियां मिला देता था, ताकि रातभर गेम खेल सके।

मोबाइल गेम के प्रति बच्चों के रुझान को कैसे कम किया जाये? आये दिन होने वाली ऐसी वारदातों पर अंकुश लगाने के क्या उपाय हो सकते हैं? नौनिहालों को मोबाइल गेम्स के जंजाल से निकालकर कैसे उनके जीवन को रचनात्मक दिशा दी जाये?

'मोबाइल गेम को जानलेवा लत बनने से कैसे रोकें ?' जन-जन के जीवन से जुड़े इस विषय पर सुधी पाठकों के विचार सादर आमंत्रित हैं। अपने विचार 200 शब्दों में भेजें हमें **15 जुलाई तक** 9116634512 पर व्हाट्सएप के माध्यम से। चयनित विचार **अगस्त अंक** में **प्रकाशित** किये जाएंगे। –सं.

ज्वेलर्स ब्लॉक इन्श्योरेन्स

★ सबसे अच्छी कंपनी द्वारा पॉलीसी और कम प्रीमीयम की गारंटी
★ लोकल सेफ एलाउड है, क्लाज में कोई समझौता नही
★ पोर्टाबिलीटी सुविधा पुरानी गुडविल के साथ
★ फिडेलीटी ईम्पलायी + थर्ड पार्टी
★ 3000+ ज्वैलर्स का इंश्योरंस हमारे साथ
★ आपके पुराने पॉलिसी को फ्री मे जाँच करवाएँ

लाईफ इन्श्योरेन्स

★ पाए 1,00,000/- टैक्स फ्री आपकी 100 वर्ष की उम्र तक,
सिर्फ @ 5,00,000/- वार्षिक 3 साल भरने पर
+ 80 लाख परिवार के लिए
★ पाए 1,00,00,000/- टैक्स फ्री 25 साल बाद,
सिर्फ @ 16666/- मासिक 16 साल भरने पर
+ 40 लाख से बढ़ती हुई रिस्क कवर

मेडीक्लेम

सिर्फ @1500/- मासिक में,
पाए 25 लाख की मेडीक्लेम परिवार के लिए
★ कैशलेस सुविधा उपलब्ध
★ रुम और ईलाज पे कोई लीमीट नहीं
★ पोर्टाबिलीटी सुविधा पुरानी गुडविल के साथ
★ कोई मेडीकल जाँच नही उम्र 60 तक

Legacy of 38 Years

25000 HAPPY CUSTOMERS INDIA & ABROAD

11000 Claims Solved

300 National & International Awards

वर्ष 2020-21 में हमने 50+ करोड़ की वैल्यु के क्लेम सैटल किए है जिसमे पॉलीसी है ज्वैलर्स ब्लॉक, लाईफ इन्शुरेन्स, मेडीक्लेम, फायर एवं बर्गलरी.

Ganpat Dagliya
Gold Medalist
T.O.T - U.S.A

NICE™
INSURANCE LANDMARK
One Stop Insurance Solution in India !
हम देश विदेश में सभी ग्राहको को ऑनलाईन सुविधा द्वारा सेवा देते है.

Chirag Dagliya
M.B.A & Harvard Cert.
T.O.T - U.S.A

26 A, Dagina Bazar, Mumbadevi Rd, Mumbai 400 002 | Email : info@niceinsure.com | www.niceinsure.com
Contact: 9869230444 / 9869050031 / 022-22448800

कदमों के निशां

आचार्य तुलसी ने कहा था, अणुव्रत चरित्र निर्माण का आंदोलन है। अणुव्रत पुरस्कार की स्थापना के पीछे उद्देश्य है उन लोगों का आदर जो चरित्र निर्माण के लिए कृत संकल्प हैं। अणुव्रत के आदर्शों के प्रति जिनके मन में गहरी निष्ठा है। ऐसी विभूतियों की प्रतिष्ठा से समाज में नैतिक मूल्यों के प्रति आस्था बढ़ेगी।

आचार्य महाप्रज्ञ का कहना था, "सत्य की खोज करना बड़ी बात है और उससे भी बड़ी बात है सत्य को क्रियान्वित करना। अणुव्रत पुरस्कार सत्य को क्रियान्वित करने वालों को मिलता है। अतः मैं कह सकता हूँ कि यह सबसे बड़ा पुरस्कार है।"

आचार्य महाश्रमण कहते हैं, ''भारत के नागरिकों में नैतिकता के प्रति आस्था पुष्ट बने, अणुव्रत इसी दिशा में कार्यशील है। अणुव्रत पुरस्कार नैतिक मूल्यों के महत्व को प्रतिपादित करने वाला अभिक्रम है।''

वर्ष 1981 में अणुव्रत पुरस्कार की शुरुआत की गयी। तब से 27 विभूतियों को इस पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। अणुव्रत पुरस्कार के अंतर्गत प्रशस्ति पत्र, प्रतीक चिह्न और एक लाख इक्यावन हजार रुपये की राशि प्रदान की जाती है। अणुव्रत पुरस्कार प्राप्त करने वालों की जीवन गाथा से परिचित होना मानवीय मूल्यों से साक्षात करना है। आने वाली पीढ़ियां इनके जीवन से प्रेरणा लेकर स्वस्थ समाज की संरचना की दिशा में कदम बढ़ाएं, इसी उद्देश्य से अणुव्रत पुरस्कार से सम्मानित विशिष्ट व्यक्तियों का परिचय यहां क्रमशः प्रकाशित किया जा रहा है।

अणुव्रत पुरस्कार से सम्मानित व्यक्तित्व

प्रो. ग्लेन डी. पेज

नॉन-किलिंग पॉलिटिकल साइन्स के जनक

प्रो. ग्लेन डी. पेज एक अमेरिकी राजनीतिक वैज्ञानिक थे। उन्होंने कई वर्षों तक विश्व राजनीति में अहिंसात्मक विकल्प विषय पढ़ाया तथा अपने छात्रों को अहिंसा, समन्वय तथा मैत्री आदि उच्च आदर्शों की प्रेरणा दी। अहिंसा के प्रति आपकी पूर्ण प्रतिबद्धता रही तथा आप भाषणों एवं लेखों में समस्याओं के अहिंसात्मक समाधान पर जोर देते रहे।

ग्लेन डी. पेज का जन्म 28 जून 1929 को संयुक्त राज्य अमेरिका के मेसाच्युसिट्स प्रान्त के ब्रोकटन शहर में हुआ था। रोचेस्टर के स्पाल्डिंग हाई स्कूल, प्रिंस्टन की फिलिप्स एक्सटर एकेडमी तथा हार्वर्ड यूनिवर्सिटी से शिक्षित ग्लेन डी. पेज ने अपने शैक्षणिक जीवन की शुरुआत 1959 में मिनिसोटा विश्वविद्यालय के लोक प्रशासन विभाग में असिस्टेन्ट प्रोफेसर के रूप में की। 1967 में वे हवाई विश्वविद्यालय में प्रोफेसर नियुक्त हुए तथा 1992 में इसी विश्वविद्यालय में प्रोफेसर एमेरिटस बने। वहां अध्यापन के दौरान उन्होंने राजनीतिशास्त्र के अध्ययन में एक नया आयाम प्रस्तुत किया जो अहिंसात्मक राजनीति शास्त्र के रूप में प्रसिद्ध हुआ। वहां उन्होंने राजनीतिक नेतृत्व और अहिंसक राजनीतिक विकल्प पर नये पाठ्यक्रम शुरू किये।

प्रो. पेज ने 1967 में हिरोशिमा विश्वविद्यालय के शांति अध्ययन संस्थान में अतिथि अनुसंधानकर्ता के पद पर काम किया। 1982 में सोवियत संघ विज्ञान अकादमी की इंस्टीट्यूट ऑफ ऑरिएण्टल स्टडीज में विजिटिंग स्कॉलर के पद पर रहे तथा चीन की सामाजिक विज्ञान अकादमी में भी अतिथि विद्वान रहे। 1992 में जापान के सोका विश्वविद्यालय ने आपको शैक्षणिक उपलब्धियों के सम्मान में मानद पी. एचडी. की उपाधि से विभूषित किया। 1990 में इन्होंने गांधी स्मृति व्याख्यान दिया। आपको 1992 में डेली स्कूल ऑफ नॉन-वायलेन्स द्वारा फैलोशिप प्रदान की गयी। 1973 में इन्होंने भारत की पहली यात्रा की। विशिष्ट सेवाओं के लिए इन्हें अनेक अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

प्रो. पेज आचार्य तुलसी के अणुव्रत आन्दोलन से प्रभावित होकर उनके दर्शनार्थ पहली बार 1986 में जैन विश्व भारती लाडनूं आये और एक सप्ताह तक वहां रुककर जैन अहिंसा में नयी दृष्टि प्राप्त की। वहीं उन्होंने एक विशेष ग्रंथ 'नॉन-किलिंग ग्लोबल पॉलिटिकल साइन्स' लिखने का संकल्प लिया। आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ से अपने प्रस्तावित ग्रंथ हेतु मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए वे कई बार भारत आये और अणुव्रत विश्व भारती द्वारा आयोजित शांति एवं अहिंसक उपक्रम पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में भी हिस्सा लिया। 8 फरवरी 1995 को नयी दिल्ली में आयोजित समारोह में उन्हें अणुव्रत पुरस्कार प्रदान किया गया।

उनके द्वारा लिखित गौरव ग्रंथ 'नॉन-किलिंग ग्लोबल पॉलिटिकल साइन्स' बेस्ट सेलर है तथा कई भाषाओं में इसका अनुवाद हुआ है। 22 जनवरी 2017 को होनोलूलू में उनका निधन हो गया।

जन्मभूमि पर महातपस्वी का भव्यातिभव्य युगप्रधान पदाभिषेक

धर्मसंघ महान - युगप्रधान अलंकरण से संघ मुझे और अधिक आभारी बना रहा है : आचार्य श्री महाश्रमण

सरदारशहर। वैशाख शुक्ला नवमी मंगलवार 10 मई की भोर सरदारशहर में एक अलग रंगत लिये हुए थी। छः दशक पूर्व इसी धरा पर एक ऐसे दिव्य सूर्य का अवतरण हुआ जो आज संपूर्ण विश्व को अपनी रश्मियों से प्रकाशमान कर रहा है। अपने व्यक्तित्व, कर्तृत्व, संघनिष्ठा, अपार गुरु भक्ति, करुणा से ओतप्रोत आचार्य महाश्रमण के रूप में यह सूर्य तेरापंथ धर्मसंघ को विश्व क्षितिज पर अलग पहचान दे रहा है।

इनके प्रति राष्ट्र के सर्वोच्च नागरिक से लेकर एक साधारण बालक तक सभी नतमस्तक हो जाते हैं। इन्होंने सप्त वर्षीय अहिंसा यात्रा के माध्यम से भारत के 22 राज्यों के सैकड़ों शहरों सहित नेपाल और भूटान जैसे राष्ट्रों में भी अहिंसा, सद्भावना और नशामुक्ति की ऐसी अलख जगायी जिससे लाखों लोगों के जीवन का कल्याण हुआ है।

इस महामानव के जीवन के 60 वर्षों की सुसंपन्नता के अवसर पर युगप्रधान पदाभिषेक महापर्व इनकी ही जन्मभूमि सरदारशहर में आयोजित हुआ।

मंगलकामना एवं भव्य स्वागत

प्रातः 4 बजे से ही जन्मस्थल पर पूज्यप्रवर को शुभकामनाएँ संप्रेषित करने की होड़ लगी हुई थी। हर कोई अपने आराध्य को जन्म दिवस और षष्टिपूर्ति की बधाई देकर अपार हर्ष की अनुभूति कर रहा था। सूर्योदय के पश्चात् आचार्यप्रवर अपने जन्म स्थान से तिरंगा स्टेडियम की ओर प्रस्थित हुए तो मार्ग के दोनों ओर श्रद्धालुगण जयघोष लगा रहे थे। इस जुलूस में भारत के 23 राज्यों सहित नेपाल और भूटान के श्रद्धालु संभागी बने हुए थे। तिरंगा स्टेडियम में आचार्यप्रवर के मंच पर पधारने के साथ ही पूरा वातावरण 'जय-जय ज्योति चरण - जय-जय महाश्रमण' के नारे से गुंजायमान हो गया।

समारोह का शुभारंभ आचार्यप्रवर द्वारा नमस्कार महामंत्रोच्चार के साथ हुआ। युग को नयी दिशा प्रदान करने वाले महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमणजी के युगप्रधान पद अभिषेक की प्रक्रिया 7 चरणों में चली। मुख्य मुनि महावीरकुमारजी ने

आचार्यप्रवर के चरणों में वंदन कर युगप्रधान पदाभिषेक प्रक्रिया का शुभारंभ किया।

पवित्रता का जागरण

प्रथम चरण में पवित्रता के जागरण के लिए पूज्यप्रवर से निवेदन किया गया। पूज्यप्रवर ने फरमाया कि मोहनीय कर्म के क्षय और कषाय मंदता हो तो पवित्रता का विकास हो सकता है। इसके लिए आगम में संदेश है कि उपशम को क्षीण करें, मार्दव के द्वारा अहंकार को जीतें और आर्दव भाव से माया को हतप्रभ करें और संतोष के द्वारा लोभ को जीतें। इसकी अनुप्रेक्षा के माध्यम से कषाय मंद होते हैं, कषाय मंदता से पवित्रता का विकास होता है। एकाग्रता, निर्मलता और प्रज्ञा की चेतना हो सकती है। द्वितीय चरण में आचार्यप्रवर के पादांगुष्ठ एवं हस्तद्वय की अंगुलियों का मुख्य मुनि द्वारा अभिषेक किया गया।

युगप्रधान पदाभिषेक पत्र एवं वर्धापना पत्र भेंट

इसके पश्चात् सकल साधु-साध्वीवृंद की तरफ से युगप्रधान पदाभिषेक पत्र का वाचन मुख्य मुनिश्री ने किया एवं आचार्यप्रवर ने इस युगप्रधान अभिषेक पत्र की अवगति लेते हुए फरमाया कि यह पत्र चतुर्विध धर्मसंघ की तरफ से सम्मान का सूचक है। आचार्यप्रवर ने शासनमाता की स्मृति करते हुए कहा कि 30 जनवरी, 2022 को लाडनूं में साध्वीप्रमुखाजी ने इसे एक वरदान स्वरूप मुझसे माँग लिया था, मैंने भी इसे संघ की भावना के रूप में स्वीकार किया था। आज शासनमाता तो नहीं हैं, परंतु उनके भाव के रूप में आज धर्मसंघ ने मेरे लिए यह जो कार्य किया है, स्थूलभाषा में कहें तो संघ मुझे और ज्यादा आभारी बना रहा है, वैसे ही संघ तो महान है। यह पत्र प्रामाणिक दस्तावेज है, अतः मैं इसे ससम्मान ग्रहण कर रहा हूँ।

नवीन पछेवड़ी और पंचरंगी माला से वर्धापन

युगप्रधान अभिषेक पत्र प्रदान करने के पश्चात् मुख्य मुनिश्री ने युगप्रधान लिखित पछेवड़ी पूज्यप्रवर को धारण करवायी। साध्वियों द्वारा हस्तनिर्मित पंचरंगी माला भी आचार्यप्रवर को धारण करवायी गयी। मुख्य नियोजिकाजी ने आचार्यप्रवर को नवीन रजोहरण एवं साध्वीवर्याजी ने नवीन पूंजनी पूज्य आचार्यप्रवर को भेंट की। इस प्रकार विधिवत युगप्रधान पदाभिषेक के पश्चात् चतुर्विध धर्मसंघ ने तीन बार प्रदक्षिणा करते हुए आचार्यप्रवर को विधिवत पंचांग प्रणतिपूर्वक वंदना की। पूज्य प्रवर की अभिवंदना में मुख्य मुनि ने अपने भाव को गीत के रूप में प्रस्तुत किया। श्रमण-श्रमणी और समणी परिवार की तरफ से वर्धापना पत्र का वाचन साध्वी कल्पलताजी ने किया एवं संपूर्ण धवल सेना ने अपने आराध्य को वर्धापना पत्र समर्पित्त किया। श्रावक समाज की तरफ से कल्याण परिषद के संयोजक के. सी. जैन ने अभिनंदन पत्र का वाचन किया एवं कल्याण परिषद पार्षदों ने इस पत्र को संपूर्ण श्रावक समाज की तरफ से आचार्यप्रवर को समर्पित किया। इस उपक्रम में कल्याण परिषद के सदस्य के रूप में अणुविभा अध्यक्ष संचय जैन और महामंत्री भीखम सुराणा शामिल रहे।

युगप्रधान आचार्यप्रवर का मंगल उद्बोधन

युगप्रधान पदाभिषेक समारोह अवसर पर आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्बोधन में फरमाया, मंगल कामना दूसरों के प्रति भी की जाती है और स्वयं के प्रति भी की जा सकती है। आज मेरे प्रति मंगलभावनाएँ, मंगल कामनाएँ, मंगल शब्द अभिव्यक्त किये जा रहे हैं। आज मैंने 60 वर्षों की संपन्नता के पश्चात् जीवन के सातवें दशक में उम्र के अनुसार प्रवेश किया है। शास्त्र में भी 60 वर्ष प्राप्ति का उल्लेख किया गया है। हर प्राणी का जन्म होता है, जन्म लेना बड़ी बात नहीं है। विशेष बात यह होती है कि जन्म लेने के बाद आदमी करता क्या है?

विक्रम संवत् 2019, वैशाख शुक्ला नवमी, 13 मई, 1962 को इसी सरदारशहर में मेरा जन्म हुआ था। मेरी संसारपक्षीय माताजी पूजनीया नेमाबाई का साया मुझे मिला। संसारपक्षीय पिता झूमरमलजी का साया मुझे कम समय ही प्राप्त हुआ। 7 वर्ष की उम्र में पिता का साया उठ गया था। पिता के चले जाने के बाद ज्येष्ठ भ्राता सुजान मलजी सबसे बड़े थे। स्कूल में भी मुझे मॉनिटर के रूप में सेवा देने का मौका मिला, छठी कक्षा की अर्धवार्षिक परीक्षा के बाद दीक्षा का योग मिला और श्रद्धेय मुनिश्री सुमेरमलजी द्वारा मुझे और मुनि उदितकुमारजी को दीक्षित होने का अवसर मिला।

गुरुकुल वास में मुझे आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ जी का विशेष आशीर्वाद मिला। गुरुओं से मुझे कार्य के क्षेत्र में आगे बढ़ने का अनुग्रह मिला। मुझे आचार्य महाप्रज्ञ के साथ आंतरिक सहयोगी और उसके पश्चात् आचार्य तुलसी ने मुझे महाश्रमण के

रूप में नियुक्त किया। आचार्य तुलसी ने मुझे महाश्रमण नाम प्रदान किया। गंगाशहर में मुझे आचार्य महाप्रज्ञ जी ने संघ का युवाचार्य बना दिया। उन्होंने मुझे मैदान दिया और कहा कि तुम दौड़ो, खुला उड़ने के लिए आकाश दिया। इतना वात्सल्य मुझे गुरुद्वय का मिला।

आचार्य महाप्रज्ञ जी के देवलोकगमन होने के पश्चात् मुझे संघ का दायित्व सरदारशहर की भूमि में आचार्य के रूप में मिला। साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी का मुझे विशेष सहयोग मिला। मेरा 60 वर्ष का जीवन अनेक रूपों में बीता है। व्यक्ति को पद मिले न मिले, पैसा ज्यादा मिले न मिले, मान-सम्मान ज्यादा मिले न मिले कोई खास बात नहीं, परंतु आत्म कल्याण, आत्मशुद्धि के मार्ग पर आगे बढ़ते रहना चाहिए। जीवन में आदर्श रखें, अच्छा जीवन जिएं।

मुख्य मुनिश्री सचिव के रूप में अपनी सेवा दे रहे हैं। मुख्य नियोजिकाजी, साध्वीवर्याजी का सहयोग मुझे मिलता है। ये तीनों प्रबंधन और प्रशासन में मेरे सहयोगी हैं। बहुश्रुत परिषद, कल्याण परिषद, विकास परिषद का भी धर्मसंघ के विकास में योगदान मिलता है। धर्मसंघ ने यह युगप्रधान पद देकर मुझे और आभारी बना दिया। वैसे हमारे संघ में आचार्य सर्वोपरि होता है, फिर यह युगप्रधान अलंकरण प्रदान कर मानो आचार्य पद के साथ आभूषण के रूप में अलंकृत कर दिया है। आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ जी को भी धर्मसंघ ने युगप्रधान अलंकरण दिया था।

इस अवसर पर कृतज्ञता तो कैसे कहूँ, यह तो बहुत छोटी बात हो सकती है। यह धर्मसंघ तो हमारा ही है। धर्मसंघ के प्रति मंगलकामना है। हम सभी सेवा साधना में आगे बढ़ते रहें। हम धर्मसंघ की सेवा करें और दूसरों की सेवा करने का भी प्रयास करते रहें। षष्टिपूर्ति के अवसर पर युगप्रधान जोड़कर इस दिवस को और अधिक महिमामंडित कर दिया है।

इस अवसर पर आचार्यप्रवर ने साधु-साध्वियों को बख्शीश प्रदान की। समणीवृंद एवं श्रावक समाज को स्वाध्याय करने के लिए प्रेरित किया। आचार्यप्रवर ने फरमाया कि मेरे ज्ञान दर्शन चरित्र की निर्मलता बढ़ती रहे। मैं धर्मसंघ की एवं दूसरों की भी सेवा करता रहूँ। आचार्यप्रवर ने भगवान महावीर, आचार्य परंपरा एवं शासनमाता कनकप्रभाजी की भी भाव वंदना की। युगप्रधान आचार्य श्री के साथ चतुर्विध धर्मसंघ ने खड़े होकर संघगान किया। इस भव्यातिभव्य कार्यक्रम का संचालन मुख्य मुनि महावीरकुमारजी और मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

युगप्रधान की अभ्यर्थना में मंगलकामनाएँ

मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी ने युगप्रधान परंपरा व युगप्रधान अर्हता के बारे में बताया तो साध्वीवर्या साध्वी संबुद्धयशाजी ने आचार्य श्री महाश्रमणजी के अवदानों को व्याख्यायित किया। मुनि कुमारश्रमणजी, साध्वी सुमतिप्रभाजी, प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष बाबूलाल बोथरा व संसारपक्ष में आचार्य श्री के बड़े भाई सुजानमल दूगड़ ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। मुनि धर्मरुचिजी द्वारा पूज्यचरणों में काव्यांजलि ग्रंथ समर्पित किया गया। दूगड़ परिवार और नन्हे बच्चों ने अपनी भावपूर्ण प्रस्तुति दी। स्क्रीन पर उन वीडियो को भी दर्शाया गया जिनमें गुरुदेव तुलसी, आचार्य श्री महाप्रज्ञजी के आचार्य श्री के प्रति आशीर्वचन, शासनमाता साध्वी कनकप्रभाजी ने आचार्य श्री से युगप्रधान स्वीकार करने का निवेदन किया था और आचार्य श्री ने स्वीकृति प्रदान की थी। इस दौरान अनेक प्रदेशों के श्रद्धालुओं ने भी अपनी-अपनी ओर से पूज्य चरणों में भेंट अर्पित की।

षष्टिपूर्ति के अवसर पर अणुव्रत अनुशास्ता को अणुव्रत परिवार की रचनात्मक भेंट

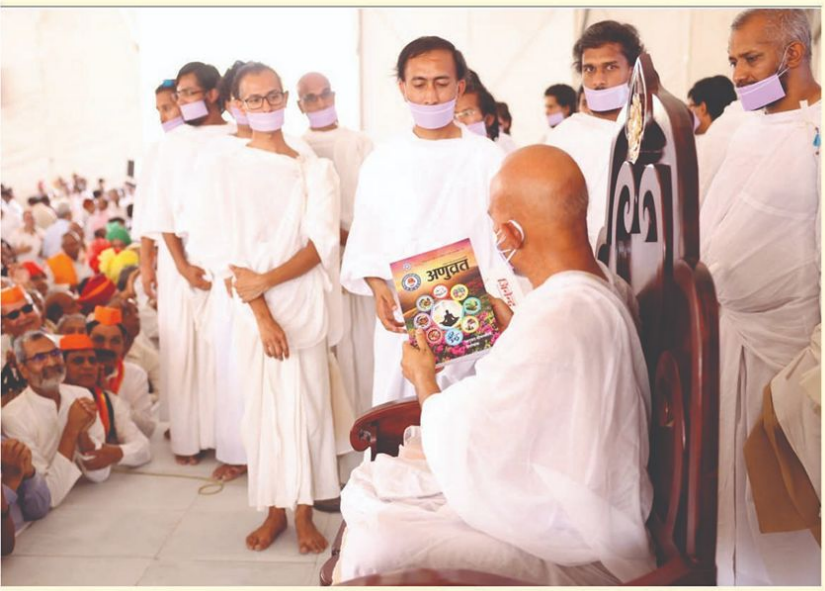

अणुव्रत जीवनशैली विशेषांक भेंट

अणुव्रत अनुशास्ता षष्टिपूर्ति समारोह प्रत्येक अणुव्रत कार्यकर्ता के लिए ऐतिहासिक और गौरवमय अवसर था। अणुव्रत आंदोलन की प्रतिनिधि संस्था अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी ने इस अवसर पर अणुव्रत पत्रिका के अणुव्रत जीवनशैली विशेषांक और अणुव्रत संकल्प शृंखला के रूप में अपनी भावभीनी एवं रचनात्मक भेंट श्रद्धेय पूज्यवर को सादर समर्पित की।

अणुव्रत विशेषांक 384 पृष्ठ का एक सारगर्भित संग्रहणीय ग्रंथ है जिसमें एक ओर जहां अनुशास्ता के वैशिष्ट्य पूर्ण व्यक्तिव व कर्तृत्व को रेखांकित किया गया है, वहीं अणुव्रत जीवनशैली को लगभग 100 आलेखों के माध्यम से वर्तमान युग की वैश्विक और वैयक्तिक समस्याओं के स्थायी समाधान के रूप में प्रस्तुत किया गया है। ये आलेख अणुव्रत के विश्वजनीन दर्शन को बेहतर तरीके से समझने और उसे जीवन में उतारने का व्यावहारिक मार्ग प्रशस्त करते हैं।

अणुव्रत संकल्प शृंखला जन-जन को अणुव्रत जीवनशैली से जोड़ने का एक रचनात्मक अभियान है। षष्टिपूर्ति के अवसर पर देशभर में अनेक अणुव्रत समितियों ने संपर्क अभियान चलाकर हजारों व्यक्तियों से संपर्क किया और अणुव्रत आचार संहिता के प्रति संकल्पित होने के लिए प्रेरित किया। परिणामस्वरूप लगभग 50 हजार संकल्प पत्रों की समितिवार सूची आचार्य प्रवर को भेंट की गयी।

अणुव्रत जीवनशैली विशेषांक की प्रथम प्रति और अणुव्रत संकल्प पत्र 10 मई, 2022 को सरदारशहर में आयोजित आचार्य श्री महाश्रमण षष्टिपूर्ति एवं युगप्रधान अलंकरण समारोह में अणुविभा परिवार द्वारा श्री चरणों में समर्पित किये गये।

इस अवसर पर अणुविभा परिवार के संचय जैन, अविनाश नाहर, अशोक डूंगरवाल, भीखमचंद सुराणा, संजय जैन, इंद्र बैंगानी, छत्तरसिंह चोरड़िया, रमेश धोका, बाबूलाल दूगड़, मूलचंद नाहर, गणेश कच्छारा, पंचशील जैन, राजेंद्र सेठिया, जगजीवन चोरड़िया, अरविंद सेठिया, मर्यादा कुमार कोठारी, राजकरण दफ्तरी, माला कतरेला, प्रकाश भंसाली, सुरेंद्र छाजेड़, तिलोक सिपानी, नीलम जैन, रतन दूगड़, सुरेंद्र जैन, मोहन मंगलम आदि उपस्थित थे।

अणुव्रत संकल्प पत्र की समितिवार सूची

चूरू	7500	जयपुर	885	श्रीडूंगरगढ़	220
मुम्बई	6771	दिवेर	874	बोईसर	206
लाडनूं	5000	सादुलपुर-राजगढ़	837	हैदराबाद	200
बीकानेर	4700	पालघर	650	बालोतरा	200
सरदारशहर	3500	आमेट	600	चाड़वास	150
इंदौर	2709	सायरा	563	अजमेर	150
सूरत	2600	भीलवाड़ा	500	हिसार	107
हुबली	2500	राजलदेसर	480	सुजानगढ़	100
कोटा	1617	बेंगलुरू	360	वड़ोदरा	89
जसोल	1400	पीलीबंगा	350	आबसर	70
जोधपुर	1300	उदासर	300	व्यारा	51
छापर	1111	अहमदाबाद	297	कटक	50
बारडोली	1000	रीछेड़	277	बल्लारी	50

कुल **50,324**

साध्वी विश्रुतविभा जी का साध्वीप्रमुखा पद पर मनोनयन

अणुव्रत अनुशास्ता युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी ने अपने 49वें दीक्षा दिवस के अवसर पर मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी को तेरापंथ धर्मसंघ की नौवीं साध्वीप्रमुखा घोषित किया।

साध्वी विश्रुतविभाजी का व्यक्तित्व न केवल वैदुष्य एवं अध्ययनशीलता जैसे आदर्श मानदंडों से परिपूर्ण है, अपितु उनकी प्रकृति में श्रमशीलता, कर्तव्यनिष्ठा, सेवाभावना, गुरु के प्रति समर्पण भाव की उत्कृष्टता एवं मेधा की विलक्षणता का मणिकांचनयोग परिलक्षित होता है। आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ एवं आचार्य महाश्रमण–तीन-तीन आचार्यों की कड़ी कसौटियों पर उत्तीर्ण होकर आपने न केवल अनुभव-प्रौढ़ता को अर्जित किया है अपितु अपनी कार्यशैली की प्रभविष्णुता द्वारा निष्पत्तिमूलक सफलताओं को भी अर्जित किया है। अंग्रेजी भाषा के विकास के पथ पर द्रुत गति से चढ़कर न केवल अनुवाद-कला में निपुणता को निखारा है, अपितु वक्तृत्व एवं लेखन में समकालीन धारा से सुसंगत भाषाशैली के मुक्त प्रयोग द्वारा आधुनिक जनमानस को झंकृत किया है। पोप पॉल जैसे वैश्विक व्यक्तित्व के साथ समणी स्मितप्रज्ञा जी के रूप में गुरु-संदेश को प्रभावशाली रूप में सन् 1987 में वेटिकनसिटी में प्रस्तुत कर आपने अपनी संवाद-निपुणता को प्रमाणित कर दिया था।

मुख्य नियोजिकाजी के रूप में आपने तत्कालीन साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के कार्य में पूरा हाथ बँटाया एवं उनकी कृपादृष्टि प्राप्त की, तो दूसरी ओर समणी-वर्ग की शिक्षा, व्यवस्था आदि का सम्यग् नियोजन कर समस्त समणी-वर्ग को विकास के पथ पर अग्रसर कर अपने दोहरे दायित्व को बखूबी निभाया। अब साध्वीप्रमुखा के रूप में आप पर 600 से अधिक साध्वियों एवं समणियों की सारणा-वारणा एवं सम्यग् विकास का बहुत बड़ा दायित्व है। अणुव्रत दर्शन की आप प्रभावी भाष्यकार हैं।

आपका आशीर्वाद और मार्गदर्शन अणुव्रत आंदोलन को अधिक व्यापकता और गतिशीलता प्रदान करेगा, ऐसा विश्वास है। सम्पूर्ण अणुव्रत परिवार साध्वीप्रमुखा के रूप में आपके मनोनयन पर हार्दिक प्रसन्नता और मंगलकामनाएं अभिव्यक्त करता है।

पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह को अणुव्रत पुरस्कार

26 मई, 2022 को अणुविभा का तीन सदस्यीय प्रतिनिधिमण्डल दिल्ली के 3, मोतीलाल नेहरू रोड स्थित डॉ. मनमोहन सिंह के आवास पहुँचा। अणुविभा के पूर्व अध्यक्ष श्री तेजकरण सुराणा व महामंत्री श्री भीखम सुराणा के साथ मैं भी इस दल में शामिल था। अणुविभा द्वारा भारत के पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह को अणुव्रत पुरस्कार से सम्मानित करने की घोषणा की गयी थी और यह पुरस्कार उन्हें समर्पित करने के लिए हम यहां आये थे।

स्वागत कक्ष में डॉ. सिंह के निजी सचिव श्री मुरली जी हमसे मिले और बताया कि लम्बे समय से डॉ. सिंह किसी से मुलाकात नहीं कर रहे हैं क्योंकि डेंगू के बाद से ही डॉक्टर्स ने सख्त हिदायत दे रखी है। उन्होंने कहा कि आप अपॉइंटमेंट रजिस्टर देखेंगे तो पाएंगे कि पिछले दो महीनों से वे किसी से नहीं मिले हैं। श्री मुरली जी ने हमें उन बातों से अवगत कराया जिनकी सावधानी हमें रखनी थी। अवॉर्ड देने की फोटो के अलावा अन्य फोटो या वीडियो न लेने का भी उन्होंने आग्रह किया। श्री मुरली जी से हुई बातचीत के बाद हम इस बात से संतुष्ट हो गये थे कि क्यों तीन व्यक्तियों से अधिक के प्रतिनिधिमण्डल के लिए डॉ. सिंह के कार्यालय से मना किया गया था।

डॉ. मनमोहन सिंह के आवास पर उन्हें अणुव्रत पुरस्कार प्रदान करने के निर्णय से पूर्व हमने अणुव्रत अनुशास्ता को यथास्थिति निवेदन कर दी थी। डॉ. सिंह की उम्र और शारीरिक अस्वस्थता के मद्देनजर किसी सार्वजनिक कार्यक्रम का आयोजन संभव नहीं था। आचार्य प्रवर ने अत्यंत कृपा करते हुए एक विशेष संदेश इस अवसर पर प्रदान करते हुए अपना आशीर्वाद प्रदान किया।

श्री मुरली जी के साथ हम डॉ. मनमोहन सिंह के कक्ष में पहुँचे। यहां डॉ. सिंह व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती गुरशरण कौर ने हमारा स्वागत किया। अभिवादन करके जैसे ही हमने अपना स्थान ग्रहण किया, डॉ. सिंह ने अपनी चिर परिचित मुस्कान और

धीमी आवाज में कहा-"आचार्य तुलसी ने 1949 में अणुव्रत आंदोलन शुरू किया था। मुझे खुशी है कि आज भी यह आंदोलन सक्रिय है। आप लोग अणुव्रत पुरस्कार देने यहां आये हैं, यह मेरे लिए गौरव की बात है।" इस अवस्था में भी उनके मुँह से ये बातें सुनकर हमें कुछ विस्मय भी हुआ और आत्मिक खुशी भी। हमने उन्हें अणुव्रत आंदोलन के विभिन्न पक्षों की जानकारी दी और आचार्य श्री महाश्रमण द्वारा अणुव्रत आंदोलन को दिये जा रहे आध्यात्मिक नेतृत्व व अहिंसा यात्रा के बारे में बताया।

श्रीमती गुरशरण कौर भी बराबर चर्चा में शामिल रहीं। उन्होंने कहा कि यह संत-महात्माओं की तपस्या का ही परिणाम है कि अनेक कठिनाइयों के बाद भी मानवता सुरक्षित है। डॉ. सिंह ने कहा कि अणुव्रत के प्रति मेरे मन में सदैव सम्मान रहा और इससे जुड़ने की भावना भी। आज आपने यह सम्मान देकर मुझे अणुव्रत से जोड़ लिया है। जब वे यह बात कह रहे थे, वे स्वयं सात्विक भावना से ओतप्रोत थे और हम यह सुनकर भावुक हो रहे थे। उन्होंने यह भी कहा कि मुझे देश-विदेश में कई सम्मान-पुरस्कार मिले हैं लेकिन नैतिक मूल्यों पर आधारित यह सम्मान मेरे लिए विशेष है।

सुना था महानता सादगी में झलकती है, आज इसका प्रत्यक्ष साक्षात्कार कर रहे थे। 40 मिनट की यह मुलाकात हमारे लिए यादगार बन गयी। डॉ. मनमोहन सिंह का व्यक्तित्व सादगी, विद्वता और विनम्रता का जीवंत उदाहरण है। राजनैतिक जीवन में रहते हुए भी उनका व्यक्तिगत जीवन बेदाग और अणुव्रत के आदर्शों को पुष्ट करने वाला रहा है। जब वर्तमान परिस्थितियों पर चर्चा चल रही थी तो उन्होंने कहा कि आज अणुव्रत जैसे आंदोलनों की और भी अधिक आवश्यकता है। रिलेटिव इकोनोमिक्स और महावीर के अर्थशास्त्र का जिक्र आया तो उन्होंने कहा कि मनरेगा जैसे कार्यक्रम कोविड महामारी के दौरान गरीबों के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हुए।

हम अणुव्रत कार्यकर्ताओं ने सम्मान के साथ अणुव्रत पुरस्कार स्वरूप स्मृति चिह्न, प्रशस्ति पत्र, शॉल व पुरस्कार राशि का चैक डॉ. मनमोहन सिंह को भेंट किया। अणुव्रत अंगवस्त्र भी सिंह दम्पती को भेंट किया। अणुव्रत जीवनशैली विशेषांक व अणुव्रत डायरी के साथ अणुव्रत साहित्य भी भेंट किया। मैंने अणुव्रत अनुशास्ता का मंगल संदेश पढ़कर सुनाया जिसमें आचार्य प्रवर ने कहा है-"ज्ञात हुआ है कि अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी पूर्व प्रधानमंत्री श्री मनमोहन सिंह जी को अणुव्रत पुरस्कार अर्पित करने जा रही है। वे अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी और अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी से भी संपर्क में रहे। श्री मनमोहन सिंह जी खूब चित्त समाधि में रहते हुए जितना संभव हो सके, नैतिक मूल्यों के प्रसार में अपनी शक्ति का नियोजन करते रहें। मंगल कामना।"

लगभग 40 मिनट तक बहुत ही आत्मीय माहौल में चर्चाएं हुईं। श्रीमती गुरशरण जी ने सहज में ही पूछा- "इस पुरस्कार राशि का चैक आपने दिया है, इसका क्या उपयोग किया जाये? हमारी आवश्यकताएं तो बहुत ही सीमित हैं।" हमने उन्हें कहा कि आचार्य प्रवर ने अपने संदेश में कहा है, उसी अनुरूप नैतिक मूल्यों के प्रसार में इसका उपयोग सार्थक हो सकेगा।

इतने लम्बे समय तक डॉ. सिंह का हमारे साथ बैठे रहना और संवाद में निरंतर सहभागी बने रहना निश्चय ही अणुव्रत और अणुव्रत अनुशास्ता के प्रति उनके मन में स्थित सम्मान को दर्शाता है।

जब हम विदा लेकर वहां से उठे तो गुरशरण कौर जी स्वयं बाहर तक हमें छोड़ने आयीं। उनके मुँह से जो अंतिम वाक्य निकला वो था- "आज का दिन हमारे लिए एक ऐतिहासिक दिन बन गया है। आप फिर कभी आएं, आपका स्वागत है।"

(अणुविभा अध्यक्ष संचय जैन की रिपोर्ट)

अणुव्रत समिति मुम्बई का बालोदय एजुटूर

अणुविभा मुख्यालय पहुँचा मुंबई से बच्चों का दल

अणुविभा का एक महत्वपूर्ण प्रकल्प है **अणुव्रत बालोदय**। अणुविभा का राजसमंद स्थित मुख्यालय चिल्ड्रन'स पीस पैलेस इस प्रवृत्ति का मुख्य केंद्र है। इस प्रकल्प के अंतर्गत नयी पीढ़ी के नव निर्माण को लक्षित अनेक रचनात्मक कार्यक्रम संचालित होते हैं। इनमें एक प्रमुख व रोचक कार्यक्रम है बालोदय एजुटूर।

अणुव्रत समिति, मुम्बई की पहल पर 29 से 31 मई 2022 तक तीन दिवसीय बालोदय एजुटूर का आयोजन किया गया। इस टूर में 74 बच्चे और 15 बड़े, कुल 89 सदस्य शामिल थे। किसी अणुव्रत समिति के तत्वावधान में आयोजित बालोदय एजुटूर का यह प्रथम अवसर था जो यादगार और उपलब्धिपरक रहा। ट्रेन में बच्चों ने 8 समूह बनाकर नाटिकाओं और स्वनिर्मित कलात्मक चित्रों के माध्यम से यात्रियों को नशे के दुष्परिणामों से परिचित कराया और नशामुक्ति के लिए प्रेरित किया। कुछ यात्रियों ने तो अपने पॉकेट से गुटखे के पैकेट निकाल कर बच्चों को थमाये और नशे से तौबा की।

29 मई की दोपहरी में जब यह दल मावली जंक्शन पहुँचा तो वहां अणुविभा के कार्यकर्ता उनके स्वागत के लिए मौजूद थे। सभी सदस्य बसों से राजसमंद पहुँचे जहां तिलक और स्वागत संगीत के साथ सबकी अगवानी की गयी। परिचय सत्र में बच्चों ने मौन प्रार्थना की, अणुव्रत गीत गाया और इस गीत के विभिन्न बिंदुओं पर चर्चा की। बच्चों ने अपने-अपने ग्रुप के लीडर चुने। यही ग्रुप लीडर्स मंच की शोभा बने जिन्होंने ग्रुप के सदस्यों का परिचय प्रस्तुत किया। बच्चों की चिंतन क्षमता और अभिव्यक्ति की शैली को निखारने वाले इस संवाद आधारित सत्र में बच्चों ने बड़ों की कल्पनाओं से परे दिल की गहराई से अपनी बातें कहीं।

अगले दिन बच्चों ने चार समूह बना कर विभिन्न बालोदय दीर्घाओं को देखा और कुछ दीर्घाओं में आयोजित एक्टिविटीज में

हिस्सा भी लिया। तुलसी अणुव्रत दर्शन की चित्र दीर्घा में बच्चों ने अणुव्रत जीवनशैली पर आधारित चित्रों को देखा, समझा और प्रश्नोत्तरी में भाग लिया। बालोदय पुस्तकालय में बच्चों ने अपनी पसंदीदा पुस्तकें पढ़ीं और उनसे प्राप्त सीख को सबके साथ साझा किया। महापुरुष जीवन दर्शन दीर्घा में बच्चों ने लघु एनिमेशन फिल्म 'द बोट' और 'मंकी एंड मोंक' देखी और फिल्मों के विभिन्न पहलुओं पर सार्थक चर्चा की।

बाल संसद में बच्चों ने लोकतांत्रिक मूल्यों को समझा और परिवार, स्कूल सहित अपने जीवन के हर क्षेत्र में इन मूल्यों को क्यों और कैसे अपनाया जाना चाहिए, इन मुद्दों पर खुली चर्चा की। उपदेशात्मक भाषणों से कोसों दूर इन संवाद आधारित चर्चाओं में बच्चों को अपने भीतर झांकने, अपने व्यक्तित्व को पहचानने, एक सफल जीवन के मायनों को जानने और उस दिशा में कदम बढ़ाने के रास्तों से परिचित कराया।

बालोदय एजुटूर आवासीय बालोदय शिविर और एजुकेशनल टूर का मिला-जुला स्वरूप है जिसमें मेवाड़ के ऐतिहासिक पर्यटन स्थलों का भ्रमण भी शामिल रहता है। मुंबई से आये बच्चों ने प्रसिद्ध हल्दीघाटी और कुंभलगढ़ किले का भ्रमण किया। यह उनके लिए एक यादगार अनुभव रहा। अणुविभा कार्यकर्ता निरन्तर बच्चों के साथ रहकर उनके अनुभवों को रोचक और उद्देश्यपरक बना रहे थे।

प्रातःकालीन सत्रों में बच्चों ने प्रकृति की गोद में रहकर इसकी खूबसूरती का नजदीक से आनंद लिया। विश्व प्रसिद्ध कृत्रिम राजसमंद झील के किनारे संगमरमर की कलात्मक कृति नौचौकी पर जीवन विज्ञान प्रयोग सत्र लुभाने वाला था। सूर्योदय की प्रथम किरणों से चमकते पानी की लहरों और शरीर को सहलाती हवाओं के बीच आसन, कायोत्सर्ग और प्राणायाम के प्रयोग सभी को एक संतुलित जीवनशैली अपनाने का आमंत्रण दे रहे थे।

अन्तिम सत्र में बच्चों ने अपने अनुभव साझा किये। सभी संभागियों को सहभागिता का प्रमाण पत्र प्रदान करने के साथ ही विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजेता रहे बच्चों को पुरस्कृत भी किया गया। इस सत्र में राजसमंद की विधायक दीप्ति माहेश्वरी ने भी बच्चों को संबोधित किया और संयमित जीवनशैली अपनाने की प्रेरणा दी।

राजसमंद से रवाना होने के बाद बच्चों का दल केलवा रुका और अंधेरी ओरी के दर्शन किये। केलवा में प्रवासित मुनि श्री धर्मेश कुमार जी ने बच्चों को अणुव्रत का महत्व समझाया, संकल्प कराये और जीवन विज्ञान के प्रयोग कराये।

अणुविभा अध्यक्ष संचय जैन के मार्गदर्शन में संपूर्ण अणुविभा राजसमंद टीम ने बालोदय एजुटूर को सफल बनाने में अपने समर्पित प्रयास नियोजित किये। व्यवस्था की दृष्टि से सहमंत्री जगजीवन चोरड़िया का श्रम उल्लेखनीय रहा, साथ ही

बालोदय प्रभारी देवेंद्र आचार्य एवं अन्य कार्यकर्ताओं ने दिन-रात मेहनत कर व्यवस्थाओं को सुचारु बनाया। प्रवृत्ति संचालन में मोनिका बापना, मोनिका राठौड़, प्राची त्रिपाठी और तनुश्री मेहता का समन्वय उल्लेखनीय रहा। जीवन विज्ञान सत्र डॉ. सीमा कावड़िया ने बड़ी कुशलता के साथ लिया। अणुविभा उपाध्यक्ष अशोक डूंगरवाल, न्यासी गणेश कच्छारा, नीना कावड़िया, विमल कावड़िया व कमलेश कच्छारा का विशेष सहयोग रहा। प्रेक्षा कोठारी ने बालोदय एजुटूर के यादगार लम्हों को कैमरे में कैद किया।

इस सम्पूर्ण आयोजन में अणुव्रत समिति मुंबई की पहल और संयोजना प्रशंसनीय रही। 74 बच्चों के समूह को 800 किलोमीटर दूर राजसमंद लाना बड़ी जिम्मेदारी का काम था जिसे मुंबई समिति की सक्षम टीम ने बखूबी निभाया। समिति की अध्यक्ष कंचन सोनी और मंत्री वनिता बाफना स्वयं इस यात्रा का नेतृत्व कर रही थीं। बच्चों के आठों समूहों को आठ कार्यकर्ता संभाल रहे थे। संयोजक के रूप में सुशील हिरण और सहसंयोजक शीला चंडालिया का श्रम प्रशंसनीय रहा। अंजु कोठारी, मधु मेहता, डिम्पल हिरण, पूनम परमार, केल्सि चंडालिया, आशा सोनी, सीमा सोनी, अल्पा खंडोर, चंद्रा खंडोर, जितेश ढालावत, महावीर सोनी सहित सभी टीम मेम्बर्स के श्रम, सहयोग व व्यवहार ने बच्चों को आत्मीय माहौल प्रदान किया। बच्चों के अभिभावकों के विश्वास और सहयोग से ही यह टूर संभव हो पाया।

बालोदय एजुटूर के मुख्य प्रायोजक मंजुदेवी विजय संचेती सीबीडी बेलापूर एवं उगमबाई मनोहर डागा मुंबई, तारादेवी मिठालाल धाकड़ कांदीवली, क्रांति डीसी सुराना चेम्बूर, पुष्पा गजेंद्र कच्छारा मुंबई, सम्पतलाल राजेश नरेश सोनी चेम्बूर एवं लतिका मनोहर डागलिया मुंबई सहयोगी प्रायोजक रहे।

आचार्य श्री तुलसी का 26वां महाप्रयाण दिवस

अणुविभा मुख्यालय पर तुलसी स्मृति कार्यक्रम आयोजित

अणुविभा मुख्यालय चिल्ड्रन'स पीस पैलेस की अहिंसा दीर्घा में 17 जून को अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी के 26वें महाप्रयाण दिवस पर तुलसी स्मृति कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें बड़ी संख्या में राजसमंद एवं निकटवर्ती क्षेत्रों के लोगों ने हिस्सा लिया।

'अणुव्रत आंदोलन : अतीत, वर्तमान और भविष्य' विषय पर विचार व्यक्त करते हुए शासनश्री मुनिश्री रविंद्र कुमार जी ने कहा कि व्यापार में प्रामाणिक रहना, किसी वस्तु में मिलावट कर या नकली को असली बताकर व्यापार नहीं करना अणुव्रत का एक उद्देश्य है। मुनिश्री प्रसन्न कुमार ने जाति, रंग, संप्रदाय, देश और भाषा का भेदभाव न रखते हुए मनुष्य मात्र को आत्म संयम की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि अणुव्रत हर समस्या का स्थायी समाधान प्रस्तुत करता है। मुनिश्री धर्मेश कुमार जी ने कहा कि अणुव्रत आंदोलन का उद्देश्य मैत्री, एकता, शांति, आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा रखना है। उन्होंने अणुव्रत और प्रेक्षाध्यान को एक-दूसरे का पूरक बताया और नयी पीढ़ी के लिए इन दोनों के समन्वित रूप जीवन विज्ञान को स्वस्थ समाज निर्माण की बुनियादी जरूरत बताया।

मुनिश्री अतुल कुमार जी ने अपने संयोजकीय वक्तव्य में कहा कि अणुव्रत आंदोलन एक त्याग व संयम का आंदोलन है। संयमित जीवनशैली अपनाने का अर्थ यह नहीं है कि हम धन न कमाएं, भौतिक सुविधाओं को त्याग दें, महत्वाकांक्षा न रखें बल्कि संयमित जीवनशैली का अर्थ यह है कि हम अपनी इच्छाओं को असीमित न होने दें। कार्यक्रम में डॉ. मुनिश्री विनोद कुमार जी , मुनिश्री अजय प्रकाश जी एवं मुनिश्री मोक्ष कुमार जी ने आचार्य श्री तुलसी के जीवन पर विचार रखे।

डॉ. बसंतीलाल बाबेल ने न्यायाधिपति के रूप में अपने अनुभव बताते हुए कहा कि अणुव्रत के दर्शन ने मुझे मानवीयता की कसौटी पर निष्पक्ष निर्णय लेने की ताकत दी। उन्होंने कहा कि अणुव्रत का दर्शन धर्म को सही रूप में परिभाषित करता है।

तेरापंथ विकास परिषद के सदस्य पदमचंद पटावरी ने आचार्य तुलसी के महाप्रयाण के क्षणों को याद करते हुए कहा कि वे कार्यकर्ता को धर्मसंघ, समाज व संगठन के सबसे महत्वपूर्ण अंग के रूप में देखते थे। इसीलिए उन अंतिम क्षणों का साक्षी बनने के लिए उन्होंने मुझ जैसे एक साधारण कार्यकर्ता को चुना।

पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी और अणुविभा के स्कूल विद ए डिफरेंस कार्यक्रम के संयोजक डॉ. राकेश तैलंग ने इस प्रकल्प के व्यावहारिक पक्षों की जानकारी दी और नयी पीढ़ी के नव निर्माण में अणुव्रत व जीवन विज्ञान जैसे कार्यक्रमों को अत्यंत प्रभावी बताया।

इससे पूर्व अणुविभा के अध्यक्ष संचय जैन ने विषय प्रवेश करते हुए कहा कि मन में यह प्रश्न उठता है कि एक धर्माचार्य को, जिनके हाथ में एक प्रगतिशील और वैज्ञानिक माने जाने वाले जैन धर्म का नेतृत्व था, अणुव्रत के रूप में एक नये दर्शन को प्रवर्तित करने को आवश्यकता क्यों अनुभव हुई? इस प्रश्न के उत्तर में ही अणुव्रत की व्यापक उपादेयता, सर्वस्वीकार्यता और युगीन आवश्यकता का परिचय हमें मिल जाता है। लगता है आज 75 वर्ष बाद अणुव्रत के मानवतावादी दर्शन की आवश्यकता और भी बढ़ गयी है। इसलिए अणुव्रत जीवनशैली को जन-जन के जीवन में प्रतिष्ठापित करना हर अणुव्रत कार्यकर्ता का लक्ष्य है।

अणुविभा के उपाध्यक्ष अशोक डूंगरवाल, भिक्षु बोधिस्थल की मंत्री मंजू बडोला, तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष डॉ. सीमा कावड़िया, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष डॉ. वीरेंद्र महात्मा ने भी आचार्य तुलसी के प्रति श्रद्धा भाव व्यक्त करते हुए विचार रखे।

प्रारंभ में जीनल डूंगरवाल ने तुलसी अष्टकम और डॉ. नीना कावड़िया, लता मादरेचा ने अणुव्रत गीत प्रस्तुत किया। महिला मंडल राजसमंद की बहनों ने तुलसी स्मृति गीत प्रस्तुत किया। अणुविभा न्यासी गणेशलाल कच्छारा ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनिश्री अतुल कुमार ने किया।

अहमदाबाद
अणुव्रत काव्यधारा

बंगाईगांव

बालोतरा

बेंगलुरू

बारडोली

भीलवाड़ा
संयम: खलु जीवनम्
संयम ही जीवन है।

चाड़वास
अणुव्रत काव्यधारा

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
के तत्वावधान में राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित
74वें अणुव्रत स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में
अणुव्रत काव्यधारा
चेन्नई

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
74वें अणुव्रत स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में
अणुव्रत काव्यधारा
कटक

74वें अणुव्रत स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में
अणुव्रत काव्यधारा
दलखोला

जोधपुर

जयपुर

खारूपेटिया

नाथद्वारा

सिलीगुड़ी

कोटा

अणुव्रत स्थापना दिवस पर कवि सम्मेलन 'काव्यधारा' का आयोजन

अणुव्रत नियमों की पालना से बदलेगी दशा और दिशा : साध्वी कंचन प्रभा

अपने-अपने स्वार्थ यहां, अपनी-अपनी परिभाषा है...

दैनिक कंचन केसरी | प्रादेशिक | epaper.kanchankesari.in

शाहपुरा में अणुव्रत स्थापना दिवस पर काव्यधारा का हुआ आयोजन

अणुव्रत केवल शब्द नहीं है, अणुव्रत एक जीवन है

4 बाइक चोरों को पकड़ा, 13 बाइक चुराना कबूला, 6 बाइक बरामद

वैश्विक स्तर पर एक परिवार की संकल्पना को साबित किया

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस की पूर्व संध्या पर विज्ञान प्रदर्शनी आयोजित

हिन्दुस्तान

फेसबुक और यूट्यूब के माध्यम से किया गया कार्यक्रम का प्रसारण

अणुव्रत स्थापना दिवस पर काव्यधारा का हुआ आगाज

74 वां स्थापना दिवस तेरापंथ भवन में मनाया गया

आयोजन

अररिया/किशनगंज वार्ता

अणुव्रत काव्य धारा का हुआ राष्ट्रीय प्रसारण, जुड़े फारबिसगंज क्षेत्र के जाने-माने कवि

अणुव्रत समिति फारबिसगंज द्वारा हुआ काव्यधारा कार्यक्रम का आयोजन

राजस्थान पत्रिका patrika.com

अणुव्रत का स्थापना दिवस मनाया

गजपुर में 2022 के चातुर्मास की घोषणा

दैनिक पूर्वोदय

धुबड़ी में अणुव्रत काव्यधारा कार्यक्रम संपन्न

अणुव्रत काव्यधारा

■■ राष्ट्रीय संयोजक डॉ. कुसुम लुनिया की रिपोर्ट ■■

- अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी के तत्वावधान में 74वें अणुव्रत स्थापना दिवस के उपलक्ष में एक फरवरी से 1 मार्च 2022 तक लगभग 68 स्थानों पर अणुव्रत समितियों द्वारा अणुव्रत काव्यधाराओं का आयोजन हुआ।
- दिल्ली की डॉ. कीर्ति काले, गजेन्द्र सोलंकी, राजेश चेतन, नरेश शांडिल्य, जयपुर के नरेन्द्र शर्मा कुसुम, फारूक आफरीदी, इकराम राजस्थानी, शाहपुरा के डॉ. कैलाश मंडेला, मुंबई के गौरव शर्मा समेत देश भर के 200 से अधिक कवियों ने अहिंसा, शांति, पर्यावरण संरक्षण, चुनाव शुद्धि, सांप्रदायिक सौहार्द, नशामुक्ति, आर्थिक शुचिता, भ्रष्टाचार उन्मूलन आदि विषयों पर गीत, ग़ज़ल, कविताओं, दोहों आदि की प्रस्तुति से हजारों दर्शकों को भाव विभोर कर दिया।
- हिन्दी, संस्कृत, राजस्थानी, नेपाली, बांग्ला, गुजराती, असमिया, ओड़िया व तेलुगु आदि अनेक क्षेत्रीय भाषाओं में अणुव्रत दर्शन से जुड़े विषयों पर कविताएं पढ़ी व सराही गयीं।
- दक्षिण से उत्तर तक और पश्चिम से पूरब तक देश भर की अणुव्रत समितियों के सुचारु श्रम से अनेक सरकारी व गैर सरकारी, प्रशासनिक व शैक्षणिक अधिकारियों सहित हजारों काव्य प्रेमियों ने अणुव्रत काव्यधारा में अपनी उपस्थिति और प्रस्तुति को अपना अहोभाग्य माना।
- इससे अणुव्रत आंदोलन के प्रति विभिन्न वर्गों के लोगों का रुझान बढ़ा। प्रबुद्ध वर्ग, प्रशासनिक वर्ग व युवा वर्ग ने दुनिया के बेहतर भविष्य के लिए अणुविभा से जुड़कर समाजसेवा की पेशकश की।
- नेपाल स्तरीय अणुव्रत काव्यधारा के आयोजन में काठमाण्डू में नेपाल के संस्कृति मन्त्री का आगमन व उद्बोधन सराहनीय रहा। अणुविभा अध्यक्ष समेत अनेक केन्द्रीय पदाधिकारियों व कार्यसमिति सदस्यों ने एकाधिक काव्य गोष्ठियों में उपस्थिति दर्ज की, जिनकी प्रेरणा, शुभाशंसा और रोचक काव्य पाठ को भी श्रोताओं ने सर-आँखों पर रखा। सहसंयोजक बाबूलाल दुग्गड़, अभिषेक कोठारी, सुनील, अनिल पटवा, केसरी गोलछा, नीरज बम्बोली आदि टीम मेंबर्स की सघन सक्रियता अणुव्रत काव्यधारा की शक्ति बनी।
- फेसबुक-यूट्यूब आदि लाइव करने के पूर्वाभ्यास समितियों से कराये गये। काव्यधारा संचालन में टेक्नोसेवी कार्यकर्ताओं के उपयोग से समितियां भी हाईटेक होती चली गयीं।
- अणुविभा की मीडिया टीम की सक्रियता से प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक, डिजिटल, सोशल, ऑनलाइन मीडिया में अणुव्रत काव्यधारा को प्रमुखता मिली। इससे अणुव्रत दर्शन पर आधारित जीवनशैली की स्वीकार्यता भी अवश्य ही बढ़ी है।
- अणुविभा अध्यक्ष संचय जैन व महामंत्री भीखम सुराणा का निरंतर मार्गदर्शन काव्यधारा की सफलता का सूत्र था। अणुविभा की केन्द्रीय टीम, अणुव्रत समितियां, कविगण, श्रोतागण व दिल्ली ऑफिस की टीम का श्रम उल्लेखनीय रहा। इस प्रकार सबके सामूहिक प्रयास से स्वर्णिम इतिहास का सृजन हुआ।

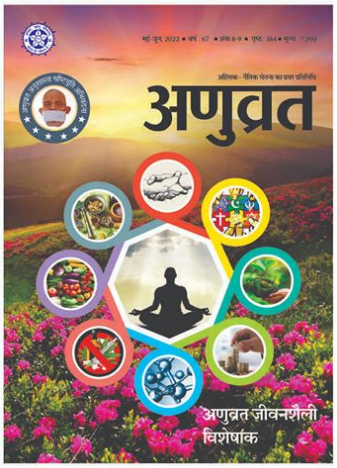

विशेषांक विमर्श

अणुव्रत जीवनशैली विशेषांक के संदर्भ में हमें अनेक प्रतिक्रियाएं प्राप्त हो रही हैं। अणुव्रत अनुशास्ता के षष्टिपूर्ति के पावन अवसर पर प्रकाशित इस उद्देश्यपूर्ण ग्रंथ में अणुव्रत दर्शन को एक उत्कृष्ट जीवनशैली के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

एक ऐसी जीवनशैली जो वर्तमान वैश्विक और वैयक्तिक समस्याओं का स्थायी समाधान देते हुए एक अहिंसक और शांतिप्रिय समाज निर्माण का मार्ग प्रशस्त कर सके। प्रस्तुत हैं कुछ विचार संक्षेप –

अणुव्रत जीवनशैली विशेषांक प्राप्त हुआ, आभार। सम्पूर्ण विशेषांक सर्वांग सुन्दर है। आलेखों का चयन भी श्रेष्ठ है। विशेषांक की सामग्री समाज के लिए श्रेयस्कर, मार्गदर्शककारी प्रमाणित होगी। विशेषांक के सम्पादक मण्डल एवं समस्त सहयोगियों को इस अनुपम उपलब्धि के लिए बधाई। मंगलकामनाएं।

– **डॉ. गुलाब कोठारी**, जयपुर
प्रधान सम्पादक, राजस्थान पत्रिका समूह

अणुव्रत पत्रिका पिछले 67 वर्षों से प्रकाशित हो रही है। इसके हर अंक में नैतिक मूल्यों के उत्थान से जुड़ी सामग्री प्रकाशित होती है। पत्रिका का मई-जून अंक अणुव्रत जीवनशैली विशेषांक है। 384 पृष्ठों के इस महा बहुरंगी विशेषांक को पढ़ना और देखना भी अपने आप में एक सुखद अनुभव है। अणुव्रत जीवनशैली क्या है, इसे चंद पंक्तियों में समझना हो तो कह सकते हैं – हर जीव के प्रति दया भाव, मानव समाज में आपसी एकता, अहिंसा, सांप्रदायिक सद्भाव, जीवन में शुचिता। कुल मिलाकर हर छोटा-मोटा बेहतर संकल्प ही अणुव्रत है। इस विशेषांक में देशभर के अनेक महत्वपूर्ण रचनाकारों के लेख प्रकाशित हुए हैं। तीन कहानियां हैं। कुछ लघु कथाएं भी छपी हैं। गीत- कविताएं भी संयोजित की गयी हैं, जिसका केंद्रीय तत्त्व अणुव्रत का सिद्धांत ही है। सौभाग्य है कि इसमें मेरा एक गीत और जीवनसंगिनी डॉ. मंजुला उपाध्याय का एक गंभीर लेख प्रकाशित हुआ है।

–**गिरीश पंकज**, रायपुर

आज के निहायत अर्थ प्रधान और व्यावसायिक युग में बिना किसी स्वार्थ और प्रोपोगंडा के 384 पेज की ग्रंथाकार पत्रिका 'अणुव्रत जीवनशैली विशेषांक' केवल एक पत्रिका ही नहीं, मानवीय जीवन को पढ़ने, समझने और इसे सलीके और शिद्दत के साथ जीने की आदर्श संहिता है। मैं इस पत्रिका को देखकर इसलिए भी चमत्कृत हूँ कि आज के समय में सिर्फ मानव कल्याण के लिए समर्पित संस्था, जिसे हम अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के नाम से जानते हैं, अपने लक्ष्यों और उद्देश्यों को कितने समर्पित ढंग से आगे बढ़ाने में दिन-रात लगी हुई है। मानवीय संवेदनाओं, रिश्तों, स्वास्थ्य, सकारात्मक विचारों का जीवन में समावेश आदि पर विद्वानों के महत्वपूर्ण आलेखों, कहानियों, लघुकथाओं के साथ अनेक शानदार गीत और कविताएं इस ग्रंथ को जीवन भर सहेज कर रखने लायक बनाती हैं। पत्रिका का संपादन किस खूबसूरती से किया गया है, इसका अंदाजा आप इसी बात से लगा सकते हैं कि पूरी पत्रिका में खोजने पर भी कोई अशुद्धि नहीं मिलेगी। इस अंक में संपादक मंडल ने मेरे भी 17 दोहों को अत्यंत खुबसूरती के साथ छापा है, एतदर्थ हमारा विनम्र आभार।

–**जय चक्रवर्ती**, रायबरेली

आज जब व्यावसायिक पत्रिकाएं भी अपने अस्तित्व के संकट से जूझ रही हैं, वहीं अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी द्वारा आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, शैक्षणिक, पारिवारिक और वैयक्तिक जैसे समस्त क्षेत्रों में व्याप्त विकृतियों में सुधार का लक्ष्य लेकर प्रकाशित की जा रही 'अणुव्रत' पत्रिका अपने आकर्षक स्वरूप, उत्कृष्ट कागज़ पर स्तरीय पठन सामग्री और सधे हुए संपादकीय के साथ एक नयी आशा का संचार करती है। 'अणुव्रत जीवनशैली विशेषांक' को तैयार किये जाने में लगा श्रम मुझे अचंभित करता है और साथ ही प्रभावित और प्रसन्न भी, इस बात के लिए कि अदूरदर्शिता, अराजकता और अव्यवस्था के इस संकटकालीन समय में कम से कम कोई तो है जो अपनी संस्कृति व जीवन मूल्यों की पुनर्स्थापना के प्रति पूरी तरह सजग और सचेत है। विशेषांक में समाहित मेरा लेख मेरे अपने ही जीवन के एक अनुभव पर आधारित है जो गोरखपुर के सिविल लाइन्स स्कूल में मेरी माँ के शिक्षण काल में विद्यालय के व्यवस्थापक शाही जी द्वारा दिये गये बेहद तार्किक उत्तर के कारण स्थानीय स्तर पर बहुत समय तक अत्यंत चर्चित रहा था।

–**आइवर यूशिएल**, बरेली

आज अभी-अभी मुझे 'अणुव्रत जीवनशैली विशेषांक' प्राप्त हुआ। मई और जून संयुक्तांक है, अतः डबल होगा मैंने सोचा। परंतु यह विशेषांक 384 पेज का है। जब कोरियर से आया तो इतना भारी था कि उठाना ही मुश्किल! पर खोलते ही आचार्य महाश्रमण जी के विचार पढ़े तो मुझे इसका महत्व पता चला। उन्होंने लिखा है– "आदमी की जीवनशैली संयम प्रधान हो जाये तो उसका जीवन अनेक समस्याओं से मुक्त रह सकता है और आदमी, आदमी अच्छा बन जाये तो समाज, राष्ट्र, विश्व भी अच्छा बन सकता है।" कितनी

बड़ी बात है। हम सब भी यही चाहते हैं। इसीलिए अणुव्रत जीवनशैली विशेषांक निकाला गया है। अणुव्रत के संपादक, सह संपादक और संयोजक सभी को बहुत-बहुत बधाई। सभी लेखकों को भी बहुत-बहुत बधाई। इसमें मेरा भी एक लेख 'मौन साधना : जीवन का मूल मंत्र' है।

–एस. भाग्यम शर्मा, जयपुर

जीवन में आ धमकी अधिकतर उलझनों की वजह जीवनशैली में आया बदलाव है। कुछ नयेपन के नाम पर तो कुछ विशेष अंदाज़ में जीने के उन्माद में। कितना कुछ जुड़ता जा रहा हमसे। अणुव्रत पत्रिका का जीवनशैली विशेषांक इस मोर्चे पर चिंतन-मनन को बल देती उत्कृष्ट सामग्री लिये है। चित्त टटोलते ऐसे विषय मन के क़रीब हैं। मेरे लेख 'बदलते व्यवहार से बढ़ीं मन की उलझनें' को भी इस ख़ास अंक में स्थान मिला है। एक बेहतरीन अंक के लिए पत्रिका की पूरी टीम को शुभकामनाएं।

–मोनिका शर्मा, मुम्बई

अणुव्रत आंदोलन को गति और प्रगति प्रदान करने के लिए पिछले 67 वर्षों से 'अणुव्रत' पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। संपादक संचय जैन जी के कुशल मार्गदर्शन में 384 पृष्ठों के भारी-भरकम विशेषांक में शामिल देश के जाने-माने रचनाकारों की रचनाएं निश्चित रूप से अणुव्रत के प्रचार-प्रसार में सहभागी बनेंगी। पत्रिका में छपी सारी रचनाएं न सिर्फ अद्भुत और अनुपम हैं, बल्कि शब्द-शब्द जीवन में उतारने के लायक भी है। पत्रिका का आकर्षक आवरण, चिकने ग्लेज्ड पेपर पर बहुरंगी छपाई तथा आकर्षक कलेवर के साथ यह विशेषांक निश्चित रूप से पूरे राष्ट्र में अनुपम उपलब्धि हासिल करेगा। पत्रिका को मंगवा कर अवश्य ही पढ़ना चाहिए। यह पठन योग्य तो है ही, संग्रहण योग्य भी है। पत्रिका के इस ऐतिहासिक अंक में मेरा भी एक आलेख "संयममय जीवन हो" प्रकाशित किया गया है, संपादकीय विभाग का आभार !

–सत्यनारायण सत्य, रायपुर (भीलवाड़ा)

'अणुव्रत' का जीवनशैली विशेषांक सामने है- अद्भुत, अकल्पनीय...! यह विशेषांक सही मायने में मानव को मानव बनाने की दिशा में किया जाने वाला एक अभिनंदनीय अनुष्ठान है।

इसके आलेखों में संस्कार है, संयम है, भाषा की प्रतिष्ठा है, रिश्ते-नातों की जीवन में महत्ता है, नैतिक मूल्यों की स्थापना है, नशामुक्ति के सरल उपाय हैं, ... अर्थात् जीवन को श्रेष्ठ बनाने के लिए, उत्तम बनाने के लिए जो कुछ भी बेहतर ढंग से कहा जा सकता है, अंक के प्रस्तुत आलेखों में वह सब कहा गया है। अंक की प्रायः सभी कविताएं जीवन की धारा को सही दिशा में आगे बढ़ाने का प्रयास हैं। अपने दोहे भी प्रकाशित हुए हैं। कहानियां तीन ही हैं, लेकिन रोचक हैं। लघुकथाएं भी पसंद आयीं। कुल मिलाकर 384 पृष्ठों के इस 1 किलोग्राम से अधिक वज़नी विशेषांक को घर में आने वाले उठाईगीरों से बचाकर रखना पड़ेगा, जो किताबें और पत्रिकाएं साधिकार उठाकर तो ले जाते हैं, लेकिन पढ़ने के बजाय अपने आवास के किसी कोने में बेसहारा छोड़ देते हैं।

–अशोक अंजुम, अलीगढ़

"अणुव्रत" का विशेषांक प्राप्त हुआ। जीवनशैली सदृश सूक्ष्म और अनुभूति परक विषय को आलेखों ने बोधगम्य और संप्रेषणीय बनाया है। प्रथम दृष्टया देखते ही अणुव्रत आंदोलन के प्रणेता और उनके पूर्व व पश्चवर्ती आचार्यों के मनुष्य निर्माण में बदलते युग संदर्भों में जीवनशैली की अनेकानेक परिभाषाओं व मौलिक व्याख्याओं को मसिजीवियों की लेखनी में अनुभव किया। यह विशेषांक जीवनशैली की अवधारणाओं को समझने और विश्लेषित करने की दिशा में गवेषकों का पथ प्रदर्शक बनेगा, ऐसा विश्वास है। संपादक मंडल सहित लेखक-लेखिकाओं को विषय के विशाल परिदृश्य से परिचित कराने हेतु कोटिशः बधाई।

– राकेश तैलंग, राजसमंद

अणुव्रत जीवनशैली विशेषांक प्राप्त हुआ। बहुत अच्छा लगा। पेपर प्रिंटिंग और सबसे बढ़कर अणुव्रत के प्रति जो विचार और लेख इसमें लिखे गये हैं, वे बहुत ही सराहनीय हैं और पूरी मानव जाति के लिए बहुत ही उपयोगी सिद्ध होंगे। यह पत्रिका एक किताब न हो करके मानव जीवन का और समस्त संसार का कल्याण करने वाली गीता है। इसमें जो प्रेरक प्रसंग दिये हुये हैं, वे सभी के लिए उपयोगी सिद्ध होंगे।

–प्रवीण जैन, अध्यक्ष, अणुव्रत समिति, मंडी गोबिंदगढ़

अणुव्रत एक ऐसी पत्रिका जिसमें विद्वान जैन मुनि और देश के सुविख्यात लेखक, विचारक, साहित्यकार लिखते हैं। ऐसे मूर्धन्य विचारकों के साथ छपना आत्मिक सुख देता है। फिर, यह तो 384 पृष्ठों का ऐतिहासिक अणुव्रत जीवनशैली विशेषांक है। इसमें छपकर मैं सुख के सातवें आसमान पर महसूस कर रहा हूँ। उपराष्ट्रपति, लोकसभा अध्यक्ष एवं अन्य महान हस्तियों के साथ-साथ यह अंक हजारों पाठकों और विचारकों के कर कमलों तक पहुँचेगा।

–शिखरचंद जैन, कोलकाता

I received the copy of the much awaited Anuvrat Special issue of May- June 2022. I read it cover to cover. Anuvrat has a unique place in establishing morality and ethics in post independent India. Anuvrat journal is a torch bearer of the Anuvrat movement. This special issue is on Anuvrat's lifestyle. Simple and natural lifestyle is the need of the hour particularly after the post pandemic world. Every article is thought provoking and well meaning. Every Indian must read this special issue to sustain value in society and nation. The editor and his entire team has done wonderful work by bringing different people on one platform for a noble cause of humanity.

Anuvrat is the need of the hour. We need Anuvrat culture to establish permanent peace in the society. This special issue is worth reading and I recommend everyone to read and spread the simple but most powerful messages of Anuvrat to save mankind and mother earth.

-Dr. Anil Dutta Mishra, Ghaziabad

अणुव्रत प्रबोधन प्रतियोगिता 2021

रैंक 1

नीतू पालगोता
धारवाड़

रैंक 1

सुमन कुहाड़
बालोतरा

रैंक 2

विजय लक्ष्मी मुंशी
उदयपुर

रैंक 3

संदीप लोढ़ा
कांकरोली

रैंक 4

नेहा कोठारी
अहमदाबाद

रैंक 5

श्वेता छाजेड़
जलगांव

रैंक 6

उर्वशी जैन
नोएडा

रैंक 7

आरती धारीवाल
काठमांडू

रैंक 7

मंगला कुंडलिया
गुरुग्राम

रैंक 7

संजू दूगड़
सरदारशहर

रैंक 8

मनीता जैन
बीकानेर

रैंक 9

खुशबू सारस्वत
बीकानेर

रैंक 9

मोनिका मालू
श्रीडूंगरगढ़

रैंक 10

विधि सांड
बीकानेर

- अणुव्रत की अवधारणा को जन-जन तक पहुँचाने के उद्देश्य से अणुव्रत प्रबोधन प्रतियोगिता 2021 का आयोजन किया गया।
- इस प्रतियोगिता के प्रथम चरण में देश-विदेश से 3480 प्रतियोगी शामिल हुए। इनमें से 622 प्रतियोगियों ने 400 में से 400 यानी 100 प्रतिशत अंक प्राप्त किए।
- पूर्व निर्धारित नियमानुसार द्वितीय चरण में 100 प्रतियोगियों को प्रवेश दिया जाना था, लेकिन प्रतियोगियों के शानदार प्रदर्शन व उत्साह को देखते हुए अणुविभा ने सभी 622 प्रतियोगियों को द्वितीय चरण (भाग-1) के लिए अनुमत किया, जिसका ऑनलाइन आयोजन 27 फरवरी को किया गया।
- इस चरण के माध्यम से चयनित टॉप-100 प्रतियोगियों को अंतिम चरण के लिए क्वालीफाई माना गया।
- अंतिम चरण का आयोजन **27 मार्च 2022** को दिल्ली में किया गया, जिसमें देश-विदेश से 61 प्रतियोगियों ने भाग लिया, जिनका परिणाम यहां प्रकाशित किया जा रहा है।
- द्वितीय चरण (भाग-1) के ऑनलाइन आयोजन में जैन विश्व भारती का तकनीकी सहयोग रहा, एतदर्थ आभार। अंतिम चरण के आयोजन में अणुव्रत समिति, दिल्ली का विशेष सहयोग रहा, जिसके लिए हार्दिक साधुवाद।

स्वाध्याय सम्मान-47

- अलका ढेलड़िया
- अमित कुमार बोथरा
- अंतिमा नखत
- अरुणा मेहता
- दीपक रांका
- डिम्पल सुराणा
- गरिमा सेठिया
- हेमलता मुणत
- जिनेन्द्र कोठारी
- कमला चौरड़िया
- कविता दूगड़
- किरणराज जैन
- कोमल सुतरिया
- कुसुम जैन
- ललिता मेहता
- लता भण्डारी
- मधु दूगड़
- मंजु बैद
- मंजु सांखला
- मनोज बाफना
- मनोज झाबक
- मीना बोथरा
- मीना कोठारी
- मोनिका नायक
- नीतू मेहता
- नीतू सिरोहिया
- पवन कुमार सेठिया
- पायल जैन
- पिंकी डूंगरवाल
- प्रज्ञा सुराणा
- प्रमिला बरड़िया
- प्रेमकुमार सहगल
- प्रेम सेखानी
- राजश्री कोचर
- रेखा जैन
- रुचि छाजेड़
- संगीता दूगड़
- संतोष जैन
- शंकुतला
- शुचि पुगलिया
- सोनिया जैन
- सुमन बैद
- सुमति सेठिया
- सुनीता नाहटा
- स्वाति बंसल
- वनिता जैन
- वर्षा जैन

अणुव्रत प्रबोधन प्रतियोगिता 2022

■■ राष्ट्रीय संयोजक अशोक चोरड़िया की रिपोर्ट ■■

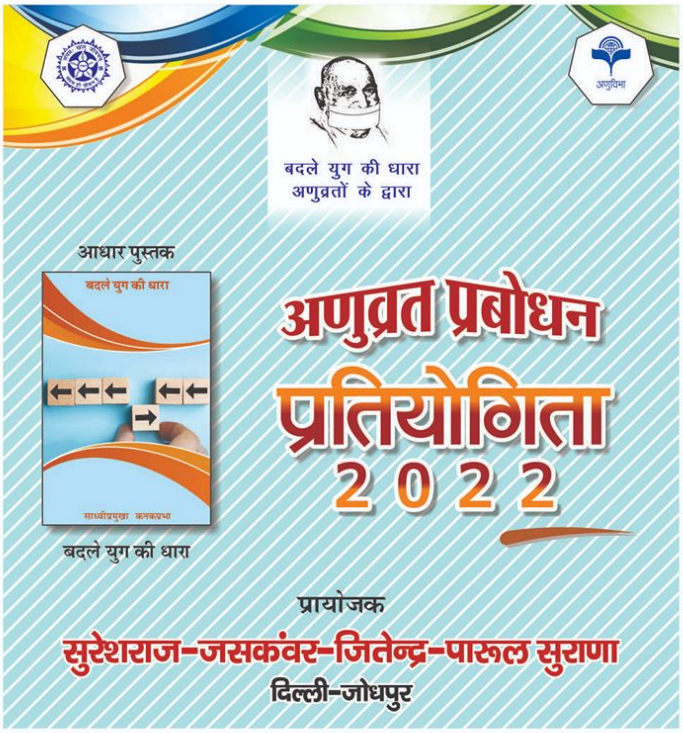

- अणुव्रत के सिद्धांतों को जन-जन तक पहुँचाने के उद्देश्य से अणुविभा द्वारा प्रारंभ अणुव्रत प्रबोधन प्रतियोगिता का अभिनव उपक्रम सन् 2020 से अनवरत जारी है।
- इसी शृंखला में अणुव्रत प्रबोधन प्रतियोगिता 2022 का शुभारंभ **मई 2022** से हो चुका है। अणुव्रत समितियों के सहयोग से अब तक लगभग 3000 प्रतियोगी इस प्रतियोगिता से जुड़ चुके हैं।
- हमारा लक्ष्य 7000 से अधिक प्रतियोगियों को इस उपक्रम से जोड़ने का है।
- इस हेतु एक केंद्रीय कोर टीम का गठन किया गया है जो अणुव्रत समितियों के साथ समन्वय स्थापित करते हुए इस प्रतियोगिता की गति को तीव्रतर करेगी। इस टीम में **श्री बजरंग बैद** को सह संयोजक बनाया गया है।
- इस प्रतियोगिता में सभी जाति, वर्ण, धर्म, लिंग व समुदाय के व्यक्ति शामिल हो सकते हैं।
- इस बार की आधार पुस्तक बदले युग की धारा साध्वी प्रमुखा कनकप्रभाजी की एक विशिष्ट कृति है। उन्होंने अपनी सहज व सरल लेखनी से अणुव्रत को जन-मानस तक पहुँचाने का सफल प्रयास किया है।
- वर्ष 2022 की अणुव्रत प्रबोधन प्रतियोगिता का साध्वी प्रमुखा जी की कृति पर आधारित होना मातृहृदया के प्रति अणुव्रत कार्यकर्ताओं की एक विनम्र श्रद्धांजलि है।
- प्रतियोगिता-सेट (पुस्तक+प्रश्नपुस्तिका) बुक करवाने के लिए दिल्ली कार्यालय के मोबाइल नंबर **91166 34512** पर संपर्क करें।

युग को बदलने की सामर्थ्य रखती है 'बदले युग की धारा'

अणुव्रत प्रबोधन प्रतियोगिता की आधार पुस्तक 'बदले युग की धारा' के संबंध में प्रसिद्ध कवयित्री डॉ. कीर्ति काले के उद्गार

'बदले युग की धारा' साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा जी द्वारा समय-समय पर लिखे गये आलेखों का संकलन है। 154 पृष्ठ की इस पुस्तक में अणुव्रत से सम्बन्धित 36 महत्वपूर्ण आलेख हैं। साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा जी के विचारों की स्पष्टता एवं भाषा की सरलता इन आलेखों में सर्वत्र देखी जा सकती है। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य तुलसी के व्यक्तित्व की दृढ़ता को भी इन आलेखों में उद्घाटित किया गया है। तलाश आदमी की, एक विचार-क्रान्ति, नया युग : नया धर्म, आधारशिला जीवनशैली की, अध्यात्म की पृष्ठभूमि, नैतिकता की नहर, चरित्र का सुरक्षा कवच, परिष्कार की दिशा में आदि आलेखों में मानव स्वभाव के गुणों-अवगुणों की विशद व्याख्या करते हुए गुणों को समृद्ध करने एवं अवगुणों को अभ्यासपूर्वक समाप्त करने की विधियाँ बतायी गयी हैं।

एक सार्थक क्रान्ति की सम्भावना, राष्ट्रीय एकता और अनुशासन, लोकतंत्र और अणुव्रत, अणुव्रत की कल्पना का भारत आदि आलेखों में अणुव्रत के महत्व एवं सुखद भविष्य के लिए अणुव्रत की आवश्यकता को विस्तारपूर्वक बताया गया है। प्रारूप अणुव्रत के भविष्य का, अणुव्रत परिवार योजना, जरूरी है अहिंसा का प्रशिक्षण, निर्माण नये समाज का, प्रकाश की रश्मियाँ, जल उठा एक दीया, पर्यावरण सुरक्षा के सूत्र, आवश्यक है प्रकृति के साथ सामंजस्य, मानवीय यातना का हथियार आदि आलेखों में मानव समाज की पारिवारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं मनोवैज्ञानिक समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है। साथ ही समस्याओं के समाधान का व्यावहारिक समाधान भी सुझाया गया है। एक क्रांतिकारी कदम, अस्पृश्यता : संविधान में या मन में, नशा : नाश का द्वार आदि आलेखों में आचार्य तुलसी के क्रांतिकारी विचारों एवं उनकी ओर से उठाये गये प्रश्नों का सारगर्भित उल्लेख किया गया है। जीवन का रूपांतरण, रोम रोम में अणुव्रत के स्पन्दन, अनुशासन और अणुव्रत का योग तथा निष्ठावान अणुव्रती इन आलेखों में अणुव्रत के नियम, संयम का महत्व, अहिंसा की शक्ति आदि पर प्रकाश डाला गया है। इस पुस्तक की भाषा शैली अत्यन्त आत्मीय है। पुस्तक पढ़ते हुए ऐसा लगता है जैसे माँ अपने बच्चे को उसी के बौद्धिक स्तर पर जाकर बड़े स्नेह से ज्ञान के गूढ़ रहस्य समझा रही है। यह पुस्तक सामान्य जन को अणुव्रत आंदोलन की प्रामाणिक जानकारी उपलब्ध कराती है। इसे पढ़कर अणुव्रत की आध्यात्मिकता एवं आधुनिकता के सामंजस्य को अच्छी तरह आत्मसात किया जा सकता है।

अणुव्रत आन्दोलन एवं उसके घटकों को जानने, समझने के लिए यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। जन साधारण को आत्मीयतापूर्वक अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य तुलसी जी के विचारों एवं उनके द्वारा किये गये कार्यों से परिचित कराने में यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी।

देश भगत विश्वविद्यालय में 'अणुव्रत भवन' का उद्घाटन

मंडी गोबिंदगढ़। मनीषी संत मुनिश्री विनयकुमार आलोक ने देश भगत विश्वविद्यालय, मंडी गोबिंदगढ़ में 22 अप्रैल को अणुव्रत भवन का उद्घाटन किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि अणुव्रत मानव जीवन की गूढ़तम समस्याओं का समाधान करता है। आज देश भगत विश्वविद्यालय ने अणुव्रत भवन का निर्माण कर संम्पूर्ण विश्व के विश्वविद्यालयों को नयी राह दिखायी है। अणुव्रत सम्पूर्ण मानव जाति का उद्धार करने वाला आंदोलन है। यदि तनाव से आप मुक्त होना चाहते हो तो अणुव्रत के छोटे-छोटे व्रतों को जीवन में अपनाने की जरूरत है। यदि आप सुखी बनना चाहते हो तो अहिंसा, सत्य, अस्तेय एवं ब्रह्मचर्य को जीवन में अपनाने की जरूरत है।

देश भगत विश्वविद्यालय के चांसलर डॉ. जोरा सिंह ने मेहमानों का स्वागत किया। प्रो. चांसलर डॉ. तेजिंदर कौर और वाइस चांसलर प्रोफेसर शालिनी गुप्ता ने भी विचार रखे।

कार्यक्रम को ऑनलाइन संबोधित करते हुए अणुव्रत विश्व भारती के अध्यक्ष संचय जैन ने कहा कि देश भगत विश्वविद्यालय के साथ अणुव्रत विश्व भारती कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करने के लिए तैयार है। हम मिलकर जीव मात्र के कल्याण के लिए ऐसे कार्य करेंगे जो आने वाले समय में इतिहास में स्वर्ण अक्षरों से लिखे जाएंगे। पंजाब सभा के अध्यक्ष केवल कृष्ण गोयल, सुरेन्द्र मित्तल, सलिल बंसल ने भी विचार रखे। प्रो. दीपक शांडिल्य ने मेहमानों का आभार प्रकट तथा मंच संचालन डॉ. अजयपाल सिंह ने किया।

43 सरपंचों का सम्मान

चलथाण। अणुव्रत समिति चलथाण द्वारा 15 मार्च को तेरापंथ भवन में आयोजित 'चलें अणुव्रत की ओर' कार्यक्रम में पलसाणा तालुका के 43 गाँवों के सरपंचों का सम्मान किया गया। मुख्य अतिथि अणुविभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष राजेश सुराणा ने कहा कि अणुव्रत नैतिकता का अभियान है। आप सभी सरपंच यह चिंतन करते होंगे कि हमारे गाँव का हमें विकास करना है तो गाँव के सर्वांगीण विकास का यदि कोई श्रेष्ठ मार्ग है तो वह अणुव्रत का मार्ग है। आज उपस्थित सभी सरपंच मिल-बैठकर सहचिंतन करें और ऐसी क्रियान्विति करें जो समग्र देश के लिए दिशा-दर्शक बन जाये। कार्यक्रम के अध्यक्ष एसडी जैन इंटरनेशनल स्कूल के संचालक कैलाश भाई जैन ने अणुव्रत के कार्यों के लिए हरसंभव सहयोग का आश्वासन दिया।

अणुविभा के गुजरात प्रभारी अरविंद भाई शाह ने कहा कि व्यक्ति-व्यक्ति के चारित्रिक विकास द्वारा स्वस्थ परिवार, स्वस्थ समाज एवं स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण अणुव्रत द्वारा हो सकता है। 'अणुव्रत सेवी' बालुभाई पटेल ने कहा कि अणुव्रत से पारस्परिक सद्भावना का विकास होता है। मानव मानव के लिए उपयोगी बने, यह आज की परम आवश्यकता है। 'अणुव्रत सेवी' अर्जुन मेड़तवाल ने कहा कि आज तीसरे विश्वयुद्ध की आहट से पूरा विश्व चिंतित है। ऐसे समय में बचने का एक ही मार्ग है अणुव्रत। अणुव्रत भ्रष्टाचार और मिलावट जैसी समस्याओं से भी सुरक्षा देता है।

तेरापंथी सभा चलथाण के संरक्षक तेजमल नौलखा, अध्यक्ष सोहन लाल दक, अणुव्रत समिति अध्यक्ष लीना चोरड़िया, पूर्व अध्यक्ष बाबूलाल नोलखा, अणुव्रत समिति सूरत के मंत्री सुनील श्रीश्रीमाल, विशिष्ट अतिथि अशोक भाई शाह, चलथान के सरपंच महेंद्र भाई देसाई, तेयुप के अध्यक्ष ज्ञान चंद दुगड़ आदि ने भी विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन अणुव्रत समिति की मंत्री रीना पीतलिया ने किया।

भावी अध्यापकों ने लिया नशामुक्ति का संकल्प

नाथद्वारा। अणुव्रत समिति की ओर से 16 अप्रैल को सेन्टमीरा बीएड कॉलेज जाम्बू तालाब में नशामुक्ति पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। मुनिश्री संबोध कुमार मेधांश ने भावी अध्यापकों को प्रेक्षाध्यान के प्रयोग कराये और इससे होने वाले

लाभों तथा जीवन विज्ञान की उपयोगिता के बारे में बताया। उन्होंने नशामुक्ति के संकल्प भी कराये।

कार्यक्रम की अध्यक्षता अणुविभा के अध्यक्ष संचय जैन ने की। उपाध्यक्ष अशोक डूंगरवाल तथा नाथद्वारा के अणुव्रत कार्यकर्ताओं की उपस्थिति में आयोजित कार्यक्रम में कवियों ने कविताएं सुनायीं। संयोजन अणुव्रत समिति नाथद्वारा के अध्यक्ष साबिर शुक्रिया ने किया।

अणुव्रत संगोष्ठी का आयोजन

बेंगलुरु। चिक्क मावली में आयोजित अणुव्रत संगोष्ठी को संबोधित करते हुए मुनिश्री अर्हतकुमार ने कहा कि जीवन में अच्छे आचार और अच्छे संस्कार से बढ़िया व्यवहार बनता है। अच्छे व्यवहार से नकारात्मकता को सकारात्मकता में बदला जा सकता है और हर इंसान जीवन में उच्च स्तर प्राप्त कर सकता है। अणुव्रत के नियमों को अपना कर जीवन को स्वस्थ व सुंदर बनाना होगा। हमारा खानपान अच्छा होना चाहिए। विकृत संस्कार से विकृत संस्कृति का जन्म होता है जिससे व्यक्ति गर्त व विनाश की ओर चला जाता है। आज सभी लोग नशा व मांसाहार का परित्याग करने का संकल्प लें। मुनिश्री भरत कुमार ने कहा कि अणुव्रत के नियम अपनाकर जीवन को सुंदर बनाएं। मुनिश्री जयदेव कुमार ने अन्न व मन की गति पर विचार व्यक्त किये। अणुविभा के राष्ट्रीय संगठन मंत्री कन्हैयालाल चिप्पड़ ने अतिथियों का स्वागत किया। सभा अध्यक्ष सुरेश चन्द, अणुव्रत समिति अध्यक्ष शान्तिलाल पोरवाल, तेयुप अध्यक्ष विनय बैद व चन्द्रशेखर ने भी विचार रखे। अणुव्रत दक्षिण कर्नाटक प्रभारी ललित बाबेल ने धन्यवाद ज्ञापित किया। संचालन मंत्री माणकचन्द संचेती ने किया।

सुखी जीवन की चाबी है अणुव्रत

सिलीगुड़ी। अणुव्रत समिति की ओर से 28 मई को तेरापंथ भवन में अणुव्रत की उपादेयता पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर साध्वी संगीत श्रीजी जी ने कहा कि अणुव्रत सुखी जीवन की चाबी है। अणुव्रत ऐसा लाइफ इंश्योरेंस है जो हमारी आत्मा की संपत्ति को सुरक्षित रख सकता है। अणुव्रत एक ऐसा फिल्टर है जो दुर्गुणों को निकाल कर पवित्रता को भर देता है।

अणुव्रत भटके हुए को मार्ग दिखा सकता है। इससे मानव अपने जीवन का कल्याण कर सकता है। मुख्य अतिथि हिंदी बालिका विद्यालय के अध्यक्ष ने अपने स्कूल में अणुव्रत गीतिका का संगान कराने का आश्वासन दिया। स्वागत भाषण अणुव्रत समिति सिलीगुड़ी की अध्यक्ष पुष्पा चिण्डालिया ने दिया। कोषाध्यक्ष मंजू लुणावत, मंत्री जूली सिरोहिया तथा उमा नौलखा, भारती मालु ने अणुव्रत नाट्य प्रस्तुति दी, जिसे सभी दर्शकों ने खूब सराहा।

अणुव्रत की प्रासंगिकता पर कार्यक्रम

जयपुर। 29 मई को अणुव्रत समिति द्वारा भिक्षु साधना केन्द्र श्याम नगर में तेरापंथ प्रोफेशनल फ़ोरम के साथ मिलकर "तेरापंथ प्रोफेशनल्स के लिए अणुव्रत की प्रासंगिकता" पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुनिश्री सुमतिकुमार ने कहा कि हमें विवेक को जागरूक रखते हुए अनावश्यक हिंसा से बचने का उपाय सोचना चाहिए। इच्छाओं पर नियंत्रण रखें और संतोष की प्रवृत्ति पैदा करें। त्याग में ही धर्म है। तेरापंथ प्रोफेशनल फ़ोरम जयपुर के अध्यक्ष संदीप जैन ने कहा कि छोटे- छोटे व्रतों की पालना से जीवन में काफी बदलाव लाया जा सकता है। मुनिश्री देवार्य ने बताया कि जिस तरह चारदीवारी होते हुए भी बिना छत के उसे घर की संज्ञा नहीं दी जा सकती, उसी प्रकार अणुव्रत के बिना जीवन की प्रासंगिकता नहीं है। सभी को अपने जीवन में व्रतों का पालन करना चाहिए। अणुव्रत समिति की मंत्री डॉ. जयश्री सिद्धा ने कहा कि अणुव्रत प्रोफेशनल्स के लिए रोबोट की भाँति है। यह एक कंट्रोलिंग बटन है जिसके द्वारा शारीरिक स्वास्थ्य के साथ मानसिक तथा आध्यात्मिक स्वास्थ्य के पट भी खोले जा सकते हैं। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अमित बैंगानी ने किया।

साबरमती के सिग्नल वर्कशॉप में पौधे लगाये

अहमदाबाद। अणुव्रत समिति ने विश्व पर्यावरण दिवस पर 5 जून को पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन, सेव-अर्थ संस्था, महावीर इन्टरनेशनल मरुधर, तेरापंथ महिला मंडल, थली महिला मंडल आदि के कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर सिग्नल वर्कशॉप, साबरमती में पौधरोपण किया। इस अवसर पर इन संस्थाओं से जुड़े संजय सूर्यबली, संध्या यादव, अनिता कोठारी, वीर विनोद संकलेचा, सागर सालेचा के साथ ही रेलवे से डॉ. राजेश मोदी, डॉ.

उमेश सोलंकी, मुकन भंसाली की भागीदारी रही। समिति के अध्यक्ष सुरेश बागरेचा ने अणुव्रत अभियान की जानकारी देने के साथ ही इन सभी को अणुव्रत साहित्य भेंट किया। लोको पायलट संजय सूर्यबली ने कहा कि हम सब यहां लगाये गये पौधों की सार-संभाल करेंगे।

जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान एवं योगाभ्यास का कार्यक्रम

चेन्नई । अणुविभा के तत्वावधान में अणुव्रत समिति चेन्नई द्वारा 1 अप्रैल की सुबह तमिलनाडु स्पेशल पोलिस ट्रेनिंग रेजिमेंटल सेंटर आवडी क्षेत्र में जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान एवं योगाभ्यास कार्यक्रम का आयोजन किया गया। संचालन अणुव्रत समिति सदस्य एवं योग प्रशिक्षक हरीश भण्डारी एवं विनोद हिरण ने किया। उन्होंने प्रेक्षाध्यान, यौगिक क्रियाओं एवं सूर्य नमस्कार सहित अनेक योगासनों का अभ्यास कराने के साथ ही उनके लाभ से सभी को अवगत करवाया। अणुव्रत समिति चेन्नई के अध्यक्ष ललित आंचलिया ने समिति की गतिविधियों की जानकारी दी। अणुव्रत समिति के निवेदन पर आईपीएस ऑफिसर वेनमदी ने कार्यक्रम की रूपरेखा रची। कार्यक्रम में डिप्टी कमांडेंट चंद्रमोहन, चीफ ड्रिल इंस्ट्रक्टर शक्तिवेल मुरुगन एवं ड्रिल इंस्ट्रक्टर मुरुगन समेत 203 कैडेट्स और 9 अधिकारियों की उपस्थिति रही।

फलों के पौधे लगाये

सिलीगुड़ी। अणुव्रत समिति ने विश्व पर्यावरण दिवस पर महावीर इंटरनेशनल सिलीगुड़ी द्वारा संचालित अपना घर में फलों के पौधे लगाये। महावीर इंटरनेशनल के अध्यक्ष बजरंग सेठिया ने अणुव्रत समिति की अध्यक्ष पुष्पा चिण्डालिया एवं मंत्री जूली सिरोहिया समेत सभी कार्यकर्ताओं को धन्यवाद ज्ञापित किया। इससे पहले समिति ने महावीर इंटरनेशनल के साथ मिलकर लगभग 7000 पौधे लगाये थे।

विश्व पर्यावरण दिवस पर पौधे लगाये

मुंबई। अणुव्रत समिति के तत्वावधान में अणुव्रत क्षेत्र कांदिवली द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष में आयोजित कार्यक्रम में स्वामी विवेकानंद स्कूल के पास कांदिवली वेस्ट में 32 पौधे लगाये गये। इन पौधों के लिए संरक्षण जाली प्रकाश हिरन

(संयोजक कांदिवली,बोरीवली,दहिसर) एवं ज्ञानमल भंडारी ने भेंट की। कार्यक्रम में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा कांदिवली, कांदिवली क्षेत्रीय सह संयोजक जयेश छाजेड़, बीएमसी अधिकारियों दशरथ के. घुले, सचिन एस. पारखे तथा चैत्रा एफ. मावची का विशेष सहयोग रहा।

जोगेश्वरी क्षेत्र में पौधरोपण

मुंबई। अणुव्रत समिति के तत्वावधान में अणुव्रत क्षेत्र मलाड गोरेगांव जोगेश्वरी की ओर से जोगेश्वरी क्षेत्र के रिहायशी इलाके में पौधरोपण किया गया। दिनेश सिंघवी ने इन पौधों की सार-संभाल की जिम्मेदारी ली। कार्यक्रम में अणुव्रत समिति मुंबई की सदस्य डिंपल हिरण, क्षेत्र संयोजक राकेश बोहरा, सह संयोजक दिनेश सिंघवी,नरेश सिंघवी, शांतिलाल बाफना, हेमंत कोठारी, महेंद्र कोठारी, अमित डागलिया, भरत बेताला, सीमा सिंघवी, नीता सिंघवी, सीमा कोठारी, रिंपल वडाला, संगीता तलेसरा एवं संगीता धाकड़ का सहयोग रहा।

धरान के ओशो पार्क में पौधे लगाये

धरान। अणुव्रत समिति, धरान नेपाल की ओर से पर्यावरण सप्ताह के तहत ओशो पार्क में 11 जून को पौधरोपण का कार्यक्रम आयोजित हुआ। इसमें विभिन्न प्रजाति के लगभग 125 पौधे लगाये गये। कार्यक्रम में समिति के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, मन्त्री, कोषाध्यक्ष, संगठन मन्त्री, निवर्तमान अध्यक्ष तथा सदस्यों की उपस्थिति के साथ ही तेरापंथ युवक परिषद् धरान का भी सहयोग रहा। समिति अध्यक्ष मोनिका देवी दुगड़ ने सभी का आभार व्यक्त किया।

घर-घर जाकर लगाये तुलसी के पौधे

बारडोली। अणुव्रत समिति की ओर से 8 जून को मुदित पैलेस पर 'तुलसी हर घर आँगन' प्रोजेक्ट के अंतर्गत बारडोली क्षेत्र में घर-

घर जाकर तुलसी के पौधे लगाये गये। इसके साथ ही लगभग 500 अन्य पौधे वितरित किये गये। समिति की ओर से 9 जून को इंडस्ट्रियल ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट में सभी विद्यार्थियों को पौधे वितरित किये गये। सभी से पर्यावरण के प्रति अपना कर्तव्य निभाने तथा पर्यावरण की रक्षा करने की अपील की गयी।

स्कूल परिसर में पौधे लगाये

नाथद्वारा। अणुव्रत समिति की ओर से 23 मार्च को गोल्डन ड्रीम एकेडमी माध्यमिक विद्यालय में पौधरोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर विभिन्न प्रजातियों के पौधे लगाने के साथ ही अणुव्रत समिति के अध्यक्ष साबिर शुक्रिया के अलावा धर्मचंद मेहता और अबरार शुक्रिया ने पर्यावरण की महत्ता पर काव्यपाठ किया। शरद बागोरा, रमेश मूथा, कान्तिलाल धाकड़, चन्द्रकला बहन ने भी विचार व्यक्त किये। इससे पहले विद्यालय की छात्राओं ने स्वागत गीत और नृत्य की प्रस्तुति दी।

डॉक्टरों, मेडिकोज व 4000 बच्चों ने ली नशामुक्ति की शपथ

चूरू। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी के आगमन पर 25 फरवरी अणुव्रत समिति की ओर से स्कूलों, न्यायालय, हॉस्पिटल, पुलिस चौकी तथा अन्य संस्थाओं में जाकर अणुव्रत के बारे में बताया गया। अध्यक्ष रचना कोठारी ने बताया कि इस दौरान करीब 4000 बच्चों को नशामुक्ति तथा आत्महत्या, भ्रूण हत्या न करने और सांप्रदायिक दंगों में भाग न लेने की शपथ दिलायी गयी। चूरू के समस्त डॉक्टरों व मेडिकल स्टूडेंट्स ने नशामुक्त जीवन जीने की शपथ ली तथा औरों को भी इसके लिए प्रेरित किया। महिला यातायात पुलिस और चूरू के सभी वकीलों ने अपनी दिनचर्या में अणुव्रत के छोटे-छोटे नियमों को अपनाने का संकल्प लिया। ऋषि कुल आश्रम के बच्चों ने ब्रह्मचर्य व्रत के पालन तथा नशामुक्त जीवन जीने का संकल्प लिया। जिस दिन आचार्य श्री का चूरू में आगमन था, उस दिन सभी बूचड़खाने वालों ने बूचड़खाने बंद करके इस अहिंसा यात्रा में सहभागिता निभायी।

स्कूली बच्चों को साइकिलें भेंट

मुंबई । अणुव्रत समिति मुंबई की ओर से 13 फरवरी को रायगढ़ क्षेत्र में पनवेल से 35 किलोमीटर दूर आदिवासी बहुल गाँव उसर के 25 स्कूली बच्चों को साइकिलें भेंट की गयीं। इस दौरान रोजाना 4-5 किलोमीटर पैदल चलकर स्कूल जाने वाले इन जरूरतमंद बच्चों की खुशियां देखते ही बनती थीं। इन बच्चों को स्कूल बैग, कलरिंग बुक्स तथा स्लीपर भी वितरित की गयी। क्षेत्रीय संयोजक राजेश मेहता ने विद्यार्थी दिपेश दिनेश जोरकर की पढ़ाई का खर्च वहन करने की जिम्मेदारी ली। कार्यक्रम में मुंबई महिला मंडल मंत्री अल्का मेहता, रितेश मुनोत, नीरज कोठारी, दर्पण जैन समेत अनेक कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

बच्चों को 60 फीसदी डिस्काउंट पर नोटबुक वितरित

बारडोली। मौजूदा परिस्थिति में बड़ी संख्या में ऐसे लोग हैं, जो आर्थिक परेशानियों के चलते अपने बच्चों को पढ़ाने में समर्थ नहीं हैं। इसे देखते हुए अणुव्रत समिति बारडोली ने 60 प्रतिशत डिस्काउंट पर जरूरतमंद बच्चों को लगभग 5000 नोटबुक का वितरण किया है। समिति की अध्यक्ष पायल चोरड़िया, उपाध्यक्ष अंकुर मेहता, मंत्री केतन मेड़तवाल, सहमंत्री सुशील सरणोत, प्रचार मंत्री, संजू बेन मेहता, उपासिका आशा चौरड़िया, सदस्य राजेश चौरड़िया, संजय बड़ोला, प्रतीक बड़ोला, धैर्य चोरड़िया, रौनक मेहता आदि के प्रयास से यह कार्य सफल हुआ।

बाढ़ पीड़ितों को राहत सामग्री वितरित

नगाँव। बाढ़ की विभीषिका झेल रहे नगाँव के ग्राम्य अंचल के 250 परिवारों के बीच अणुव्रत समिति द्वारा राहत सामग्री का

वितरण किया गया। इस अवसर पर समिति अध्यक्ष छत्तरसिंह जैन, मंत्री संजय बोथरा, मोहन लाल नाहटा, सरदार देवेंद्र सिंह सहमी, लक्ष्मीपत चोरड़िया, इंदर बोथरा, नोरतन बोकड़िया, सूर्या शर्मा, महेंद्र अग्रवाल, बजरंग जाट, प्रसन्न नाहटा, मंजू गुजरानी, संगीता दस्सानी, नइसिता गुजरानी आदि उपस्थित थे। नगाँव के विधायक रूपक शर्मा ने अणुव्रत समिति के इस कार्य की सरहाना की। अणुव्रत समिति के सदस्यों ने इस कार्य के लिए आर्थिक सहयोग प्रदान किया।

जीवन विज्ञान प्रशिक्षण शिविर का आयोजन

भिलाई। अणुव्रत समिति की ओर से 11 जून को जीवन विज्ञान विद्यार्थी शिक्षक प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ पोरवाल प्रेक्षा भवन में हुआ। दस दिवसीय प्रशिक्षण शिविर में विभिन्न विद्यालयों से शिक्षकगण एवं विद्यार्थीगण शामिल हुए।

शिविर के उद्घाटन के अवसर पर आयोजक दानमल पोरवाल, मुख्य अतिथि डीईओ अभय जायसवाल, अणुव्रत समिति के उपाध्यक्ष सुरेश बरड़िया, संरक्षक शोभा पोरवाल, मंत्री राम साहू, स्थानीय समिति के व्यवस्थापक सुरेन्द्र सिंह कैम्बो, सहसचिव शम्भूनाथ शाह तथा प्रशिक्षक हनुमान शर्मा एवं मुकेश, समाजसेवी विजय जैन और लीला बरड़िया ने वर्तमान जीवनशैली में जीवन विज्ञान के महत्व पर प्रकाश डाला और उसे अपने जीवन में शामिल करने के लिए प्रेरित किया। मंच संचालन पूनम तिवारी एवं आभार प्रदर्शन शैल तिवारी दीदी ने किया।

अणुव्रत जीवनशैली विशेषांक केन्द्रीय मंत्री को भेंट

नयी दिल्ली। अणुव्रत पत्रिका का जीवनशैली विशेषांक केन्द्रीय विज्ञान व प्रौद्योगिकी मन्त्री डॉ. जितेन्द्र सिंह को अणुविभा की संगठन मन्त्री डॉ. कुसुम लुनिया ने नयी दिल्ली के पृथ्वी भवन में भेंट किया।

डॉ. सिंह ने कहा कि यह विशेषांक अणुव्रत आन्दोलन के सिद्धान्तों को जन-जन तक पहुँचाने में उपयोगी होगा। इस मौके पर डॉ. एम रविचन्द्रन, सचिव पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, डॉ. मृत्युंजय

महापात्र, महानिदेशक, भारत मौसम विज्ञान विभाग, संयुक्त हिन्दी सलाहकार समिति के सदस्य गजेन्द्र सोलंकी, शास्त्री विपिन खजुरिया, सरोज शर्मा, टी.जी. कलावती एवं एड. प्रवीर कुमार गुहराय भी उपस्थित रहे।

जस्टिस शुभा मेहता बनीं राजस्थान उच्च न्यायालय की न्यायाधिपति

'प्रामाणिक प्रवर' श्री सुन्दर लाल मेहता की पुत्री जस्टिस शुभा मेहता ने 6 जून को राजस्थान उच्च न्यायालय में न्यायाधिपति पद की शपथ ली। उन्हें न्यायिक कोटे (जिला न्यायाधीश) से न्यायाधिपति बनाया गया है।

एलएलबी में गोल्ड मेडलिस्ट रह चुकीं शुभा मेहता उदयपुर जिले के मावली की मूल निवासी हैं। इनके पिता श्री सुन्दर लाल मेहता भी जिला एवं सत्र न्यायाधीश रहे हैं। गणाधिपति तुलसी ने श्री मेहता को 'प्रामाणिक प्रवर' की उपाधि से अलंकृत किया था। श्री मेहता का अणुव्रत आंदोलन के प्रति सदैव प्रशंसनीय भाव रहा है। दोनों पिता-पुत्री ने अपने जीवन को अणुव्रत जीवनशैली में ढाला हुआ है।

जस्टिस शुभा मेहता के पति जस्टिस महेन्द्र गोयल पहले से ही राजस्थान उच्च न्यायालय में न्यायाधिपति हैं। राजस्थान हाईकोर्ट के 72 साल के इतिहास में यह पहले दंपती होंगे जो एक साथ सेवाएं देंगे। राजगढ़ (चूरू जिला) निवासी जस्टिस महेन्द्र गोयल के पिता श्री अनूप चंद गोयल भी राजस्थान हाईकोर्ट में न्यायाधिपति रह चुके हैं।

पाठकों के लिए विशेष प्रतियोगिता

अणुव्रत Q10

आपको करना है बस इतना →

❖ 'अणुव्रत पत्रिका' के मार्च 2022 अंक को ध्यानपूर्वक आद्योपांत पढ़ना
❖ मार्च 2022 अंक पर आधारित 10 सरल प्रश्नों के उत्तर प्रेषित करना

उत्तर इस पते पर भेजें
अणुव्रत विश्व भारती
अणुव्रत भवन,
210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली–110002
मो : 91166 34512
anuvrat.patrika@anuvibha.org

मार्च 2022 अंक पर आधारित प्रश्न

1. धर्म और शांति का मूल क्या है ?
2. 'मैं साक्षी हूँ उस युग का' पुस्तक के लेखक कौन हैं ?
3. भारतीय संस्कृति का सबसे बड़ा आदर्श क्या है?
4. गीता के 'स्थितप्रज्ञ' को वेद में क्या कहा गया है?
5. राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की आत्मकथा का क्या नाम है ?
6. 'लौट आयीं खुशियां' की रजनी के पति का क्या नाम था ?
7. अणुविभा के 'स्कूल विद ए डिफरेंस' प्रकल्प के संयोजक कौन हैं ?
8. आचार्य तुलसी के अभिमत से शिक्षा का पहला उद्देश्य क्या होना चाहिए ?
9. 'इमोशनल इंटेलिजेन्स : व्हाई इट कैन मैटर मोर दैन आई क्यू' पुस्तक के लेखक कौन हैं?
10. "सबको अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहना चाहिए बल्कि सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।" – यह कथन किसका है ?

ज्ञातव्य बिंदु
- प्रतियोगिता के प्रश्न मार्च 2022 के अंक पर आधारित।
- परिवार के एक सदस्य की प्रविष्टि ही मान्य होगी।
- प्रतिभागी उत्तर के साथ पता और मोबाइल नं. अवश्य उल्लेख करें।
- उत्तर संक्षेप में दें। पत्रिका में उल्लेखित शब्द ही मान्य होंगे।
- काट-छांट व शब्दों में त्रुटि होने पर अंक काट लिये जायेंगे।
- सर्वाधिक सही उत्तर लिखकर भेजने वाला पाठक विजेता होगा।
- एकाधिक विजेता होने की स्थिति में लॉटरी द्वारा निर्धारण होगा।
- विजेता का नाम मय फोटो पत्रिका में प्रकाशित किया जायेगा।
- सही उत्तरदाताओं के नाम का पत्रिका में उल्लेख होगा।

विजेता — अणुव्रत पत्रिका त्रैवार्षिक सदस्यता
प्रोत्साहन - दो — अणुव्रत पत्रिका एक वर्षीय सदस्यता
उत्तर प्राप्ति की अंतिम तिथि
15 जुलाई, 2022

फरवरी 2022 अंक में प्रकाशित प्रतियोगिता के परिणाम

(जनवरी 2022 अंक पर आधारित)

एकाधिक विजेता होने के कारण निर्णय लॉटरी द्वारा किया गया, जो इस प्रकार है -

विजेता

विमल सामसुखा
बेंगलुरू

-:: प्रोत्साहन पुरस्कार ::-

मानकचंद बैद
सिरसा

सोहनराज छाजेड़
पचपदरा

अन्य सही उत्तरदाताओं के नाम :-

देवेंद्र कुमार जैन, सिद्धि जैन, जिनेश चोपड़ा, ममता जैन, निलेश संकलेचा, लता गुप्ता, सुशीला गोलछा, सरला कोठारी, पिंकी गोलछा, मनाली भंसाली, भगवानदास, पूजा शाह, चंपालाल जैन, संगीता चोपड़ा, चारुल चोपड़ा, सरस्वती जैन, हेमलता, भगत मल जैन, सरोज चौराडिया, शोभा देवी भंसाली, कल्याणमल विजयवर्गीय, मंजू जोहरी, रेखा जारोली

अणुव्रत Q10 प्रतियोगिता

प्रश्नों के सही उत्तर

उत्तर 01	राजसमंद	पृ. 59
उत्तर 02	डॉ. शंकरदयाल शर्मा	पृ. 33
उत्तर 03	समवृत्ति प्राणायाम	पृ. 07
उत्तर 04	अरस्तू ने	पृ. 22
उत्तर 05	सरदार कुशला भील	पृ. 26
उत्तर 06	पांच	पृ. 12
उत्तर 07	श्रीमद्भगवद्गीता	पृ. 18
उत्तर 08	मौन को	पृ. 14
उत्तर 09	मानिका शॉ	पृ. 37
उत्तर 10	राष्ट्रपति महात्मा गांधी	पृ. 46

मार्च 2022 अंक में प्रकाशित प्रतियोगिता के परिणाम

(फरवरी 2022 अंक पर आधारित)

एकाधिक विजेता होने के कारण निर्णय लॉटरी द्वारा किया गया, जो इस प्रकार है -

विजेता

युग संकलेचा
पचपदरा

-:: प्रोत्साहन पुरस्कार ::-

कुंदनलाल गोयल
हिसार

खुशबू जैन
रोहतक

अन्य सही उत्तरदाताओं के नाम :-

प्रवाणलता जैन, कमला बैद, छगनलाल सेठिया, रश्मि चौरड़िया, चम्पालाल जैन, सिद्धि जैन, ए.पी. माथुर, सोनम लूंकड़, निलेश मेहता, राजेन्द्र जैन, ममता जैन, सरस्वती देवी, शशि चौपड़ा, विजयराज दक, रेखा जारोली, मनाली भंसाली, सरोज चौरड़िया, धनपतसिंह गुजरानी, कमलसिंह बुच्वा, विमल सामसुखा, जिनेश चौपड़ा, संगीता चौपड़ा, विकास लूंकड़, शशि लूंकड़, लता गुप्ता, कीर्ति जैन, रिषभ जैन, तरूण चौपड़ा, सरला कोठारी, शोभादेवी भंसाली, मानकचंद बैद, विजय कुमार जैन

अणुव्रत Q10 प्रतियोगिता

प्रश्नों के सही उत्तर

उत्तर 01	मैथिलीशरण गुप्त की	पृ. 16
उत्तर 02	भगवन ऋषभ के	पृ. 09
उत्तर 03	राजस्थान में	पृ. 23
उत्तर 04	वर्ष 1995 में	पृ. 35
उत्तर 05	किसी को भी नहीं	पृ. 27
उत्तर 06	श्री जी.एल.नाहर को	पृ. 39
उत्तर 07	भगवान महावीर	पृ. 07
उत्तर 08	40वां	पृ. 54
उत्तर 09	पहला नियम	पृ. 13
उत्तर 10	पंडित सोहनलाल द्विवेदी	पृ. 17

अणुव्रत संरक्षक

अणुविभा के अर्थ संबल अभियान में आपने ₹1 लाख अनुदान की सहभागिता कर अणुव्रत आंदोलन को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। अणुविभा परिवार आपका हृदय से आभारी है।

श्री चंद्र प्रकाश नौलखा
सुपुत्र श्री मूलचंद नौलखा
बीकानेर । दियातरा

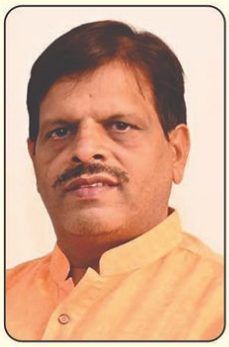

श्री देवीलाल जैन
सुपुत्र श्री भैरूलाल जैन
ठाणे । नरदासजी का गुड़ा

श्री जुगराज बोहरा
सुपुत्र श्री सोहनलाल बोहरा
मुम्बई । केलवा

श्री जय कोठारी
सुपुत्र श्री मनोहरलाल कोठारी
मुम्बई । गजपुर

डॉ. कमल सेठिया
सुपुत्र डॉ. मूलचंद सेठिया
जयपुर । सरदाराशहर

श्री ललित कुमार बाबेल
सुपुत्र श्री अर्जुनलाल बाबेल
बेंगलुरू । ठीकरवास कला

श्री माणक धींग
सुपुत्र श्री मगनलाल धींग
मुम्बई । रिछेड़

श्री मेघराज धाकड़
सुपुत्र श्री सोहनलाल धाकड़
मुम्बई । शिशोदा

श्री राजकुमार चपलोत
सुपुत्र श्री शांतिलाल चपलोत
मुम्बई । आकोला

अणुव्रत संदेश स्थल

सूरत

- **अणुव्रत द्वार, सिटीलाइट मेन रोड, सूरत**
- आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का प्रथम चातुर्मास वर्ष 2003 में हुआ। तब इस द्वार का लोकार्पण किया गया।
- लोकार्पण की तिथि – 23, **अक्टूबर**, 2003
- यह द्वार सिटीलाइट, वेसु, न्यू सिटीलाइट के लिए लैंड मार्क बन गया है। इस द्वार से हजारों व्यक्ति रोज गुजरते हैं।
- वर्तमान में सार–संभाल करने वाली संस्था

  श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, सूरत

आप भी अपने क्षेत्र में स्थित ऐसे स्थलों की सूचना
अणुविभा दिल्ली कार्यालय
मोबाइल 9116634512
ईमेल anuvrat.patrika@anuvibha.org
को यथाशीघ्र प्रेषित करें।

अणुव्रत संपोषक

श्री सुरेश चन्द्र गोयल

बचपन व पारिवारिक जीवन : 'समाज भूषण' शासन सेवी स्व. श्री विष्णु दयाल गोयल एवं 'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' स्व. तिलका सुंदरी गोयल के सुपुत्र श्री सुरेश चंद्र गोयल मूलतः हांसी (हरियाणा) के निवासी हैं। अणुव्रत बाल परिषद् व अणुव्रत छात्र परिषद् के अध्यक्ष रहकर आपने बचपन में ही सद्संस्कारी जीवन की ओर कदम बढ़ा दिये थे। बीकॉम ऑनर्स की शिक्षा पूर्ण कर आपने गृहस्थ जीवन में प्रवेश किया। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती लता गोयल एक कुशल गृहिणी एवं धार्मिक महिला हैं। आपकी चार पुत्रियां हैं।

व्यावसायिक जीवन : कोलकाता में प्रवासित 66 वर्षीय श्री गोयल एक सफल व्यवसायी व उद्योगपति के रूप में जाने जाते हैं। पश्चिम बंगाल के दुर्गापुर में स्थित रेल इंजन में लगने वाले पार्ट्स का भारत का सबसे बड़ा व आधुनिक प्लांट आपकी व्यावसायिक सफलता को दर्शाता है।

सार्वजनिक सेवा कार्य : श्री सुरेश चंद्र गोयल का जीवन सेवा भावना से ओतप्रोत रहा है। सभा, संस्थाओं को तन, मन और धन से सेवा समर्पित कर आप सुकून का अनुभव करते हैं। कुछ प्रमुख संस्थाएं हैं– ऑल इंडिया रोलिंग मिल्स एसोसिएशन, हरियाणा चैरिटेबल सोसायटी, संगीत कला मंदिर, मारवाड़ी रिलीफ सोसायटी, अग्रसेन सेवा समिति, हिंदुस्तान क्लब।

धार्मिक जीवन : श्री गोयल का व्यक्तित्व धार्मिकता से परिपूर्ण है। गुरुदृष्टि की अनुपालना को आप अपना अहोभाग्य मानते हैं। वर्ष में 300 सामायिक और 12 व्रतों का हरसंभव पालन आपकी संकल्पबद्धता को दर्शाता है। तेरापंथ धर्मसंघ की सर्वोच्च संस्था श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा के शीर्ष पदों – मुख्य न्यासी, अध्यक्ष आर्बिट्रेटर को आपने सुशोभित किया है।

अणुव्रत संपोषक के रूप में ₹5 लाख का अनुदान प्रदान कर आपने अणुव्रत आंदोलन को मजबूती प्रदान की है। अणुविभा परिवार आपके यशस्वी, सुदीर्घ एवं स्वस्थ जीवन की मंगल कामना करता है।

अणुव्रत की बात

मनोज त्रिवेदी

नई पीढ़ी में रचनात्मकता और सकारात्मकता को प्रोत्साहित करने का राष्ट्रव्यापी अभियान

ANUVRAT CREATIVITY CONTEST

प्रतियोगिताएं

लेखन | चित्रकला | गायन | भाषण

विषय: पर्यावरण का संरक्षण दायित्व हमारा हर क्षण

स्कूल स्तर पर प्रतियोगिता के प्रथम चरण की अंतिम तारीख

31 जुलाई, 2022

राष्ट्रीय स्तर पर आकर्षक पुरस्कार

ग्रुप-1: कक्षा 3-5	ग्रुप -2: कक्षा 6-8	ग्रुप-3: कक्षा 9-12
प्रथम : कीबोर्ड पियानो	प्रथम : टैबलेट	प्रथम : टैबलेट
द्वितीय : बच्चों का सारेगामा कारवां	द्वितीय : किंडल रीडर	द्वितीय : किंडल रीडर
तृतीय : साइंस किट	तृतीय : ब्लूटूथ ईयर फोन	तृतीय : ब्लूटूथ ईयर फोन

अधिक जानकारी के लिए

https://anuvibha.org/acc
acc@anuvibha.org
+91-91166-34514
+91-91166-34517

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

अणुविभा

सहयोगी प्रकल्प: जीवन विज्ञान | बच्चों का देश राष्ट्रीय बाल मासिक

मुख्य सौजन्यकर्ता: LODHA IMPEX JAIPUR-MUMBAI

ANUVRAT

RNI No. 7013/57
July, 2022

Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1261/2021-23
Licence No. U(C)-215/2021-23
Licenced to post without pre-payment
Date of Publication 25/06/2022
Posted at Delhi PSO Delhi-6 on 28-29 of the Previous Month

अणुव्रत संकल्प शृंखला

मैं विश्व का एक जवाबदेह नागरिक हूं।

मैं दृढ़ संकल्पशक्ति के साथ निम्नांकित अणुव्रत स्वीकार करता हूं।

अणुव्रत आचार संहिता

मैं किसी भी निरपराध प्राणी का संकल्पपूर्वक वध नहीं करूंगा।

- मैं आत्म-हत्या नहीं करूंगा।
- मैं भ्रूण-हत्या नहीं करूंगा।

मैं आक्रमण नहीं करूंगा।

- आक्रामक नीति का समर्थन नहीं करूंगा।
- विश्व-शान्ति तथा निःशस्त्रीकरण के लिए प्रयास करूंगा।

मैं हिंसात्मक एवं तोड़-फोड़ मूलक प्रवृत्तियों में भाग नहीं लूंगा।

मैं मानवीय एकता में विश्वास करूंगा।

- जाति, रंग आदि के आधार पर किसी को ऊंच-नीच नहीं मानूंगा।
- अस्पृश्य नहीं मानूंगा।

मैं धार्मिक सहिष्णुता रखूंगा।

- साम्प्रदायिक उत्तेजना नहीं फैलाऊंगा।

मैं व्यवसाय और व्यवहार में प्रामाणिक रहूंगा।

- अपने लाभ के लिए दूसरों को हानि नहीं पहुंचाऊंगा।
- छलनापूर्ण व्यवहार नहीं करूंगा।

मैं ब्रह्मचर्य की साधना और संग्रह की सीमा का निर्धारण करूंगा।

मैं चुनाव के संदर्भ में अनैतिक आचरण नहीं करूंगा।

मैं सामाजिक रूढ़ियों को प्रश्रय नहीं दूंगा।

मैं व्यसन-मुक्त जीवन जीऊंगा।

- मादक तथा नशीले पदार्थों - शराब, गांजा, चरस, हेरोइन, भांग, तम्बाकू आदि का सेवन नहीं करूंगा।

मैं पर्यावरण की समस्या के प्रति जागरूक रहूंगा।

- हरे-भरे वृक्ष नहीं काटूंगा।
- पानी, बिजली आदि का अपव्यय नहीं करूंगाा।

अणुविभा

अणुव्रत विश्व भारती

www.anuvibha.org/pledge

प्रकाशक एवं मुद्रक **संचय जैन** द्वारा स्वत्वाधिकारी **अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी** की ओर से श्री साई शिवानी प्रिंटर्स, बी-198, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-1, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित। संपादक - **संचय जैन**